ओँ नमश्शिवाय

ओँ नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः

श्री गुरुभ्यो नमः

हरिः ओँ

शिव स्तुति

(With Poorvanga Puja, Mahanyasam, Rudra TriSati, EkadaSa Rudra Japam, Rudra & Chamaka Kramam, Rudra Homam & uttaranga Puja)

Version 3.1 **October 31, 2018**

Table of Contents

1. Introduction 12
1.1 Purpose 12
1.2 Language and Versions 12
1.3 Method of compilation 12
1.4 Acknowledgement 12
1.5 Important Notes 13
1.6 Rudraikaadasini Kumbha Sthapanam 14
2. Pooja Preparations 15
2.1 Some Basics 15
2.2 Forms of Rudra Japam 15
2.3 Sadyo Jaatham 16
2.4 Star (Nakshatra) and Rasi Table: 17
2.4.1 Days of the Week: 19
2.4.2 Masam, Ruthu, Ayanam 19
3. पूर्वांग पूजा 21
3.1 पूजा प्रारंभः 21
3.1.1 भाग्य सूक्तं 21
3.1.2 आचम्य ,पवित्रं स्वीकृत्य 22
3.1.3 अनुज्ञा 23
3.1.4 अनुज्ञा (प्रदक्षिण मन्त्राः सहित) 23
3.1.5 अनुज्ञा (रुद्र एकदशिनि) 25
3.2 विघ्नेश्वरपूजा 29
3.2.1 घण्ठ पूजा 29
3.2.2 आचमनं सङ्कल्पं 29
3.2.3 आवाहनं उपचारं 31

3.2.4 नैवेद्यं, प्रार्थना 32
3.3 प्रार्थना पूजा प्रारंभः 34
3.3.1 प्रार्थना 34
3.3.2 आसन पूजा 35
3.4 सङ्कल्पं 36
3.4.1 सङ्कल्पं (1) 36
3.4.2 सङ्कल्पं (2) 37
3.4.3 सङ्कल्पं (3) 40
3.4.4 सङ्कल्पं (4) 43
3.4.5 विघ्नेश्वर उद्वापनं 48
3.5 पुण्याहवाचनं 49
3.5.1 सङ्कल्पं 49
3.5.2 कुंभ प्रतिष्ठा मन्त्राः 50
3.5.3 वेदारंभे जप्याः मन्त्राः 54
3.6 पवमान सूक्तं 55
3.6.1 वास्तु मन्त्रः 58
3.6.2 वरुण उद्वापनं 58
3.6.3 प्रोक्षण मन्त्राः 59
3.6.4 ग्रह प्रीति 61
3.6.5 पूर्वांग नान्दी श्राद्धं 62
3.6.6 वैष्णव श्राद्धं 62
3.6.7 गोदानं 63
3.6.8 दश दानं 63
3.6.9 कृच्छ्राचरणं 64
3.6.10 ऋत्विक् वरणं 64

3.6.11 आचार्य वरणं 64
3.6.12 ऋत्विक् वरणं (Rutvik performing Abishekam)..........64
3.6.13 आचार्यस्य ऋत्विजां च संकल्पः 65
3.6.14 कलशादिपूजा 66
3.6.15 शंखपूजा..67
3.6.16 आत्मपूजा..68
3.6.17 पीठपूजा..69
3.6.18 नन्दिकेश्वर अनुज्ञा..69
3.7 पञ्चकलश स्थापनं..70
3.7.1 पश्चिमं..70
3.7.2 उत्तरं..70
3.7.3 दक्षिणं 70
3.7.4 पूर्वं 71
3.7.5 मध्यमं..71
3.7.6 उपचारपूजा..71
4. महान्यासः..74
4.1 कलश प्रतिष्ठापन मन्त्राः..74
4.2 महान्यास मन्त्रपाठ प्रारंभः..78
5. प्रथमः न्यासः..79
6. द्वितीय न्यासः 85
7. तृतीयन्यासः..86
7.1 हंस गायत्री..87
7.2 दिक् संपुटन्यासः 88
7.3 षोडशांग रौद्रीकरणं..93

8. चतुर्थः न्यासः 96

8.1 मनो ज्योतिः 96
8.2 आत्मरक्षा 97

9. पञ्चमः न्यासः 99

9.1 शिव संकल्पः 99
9.2 पुरुष सूक्तं 105
9.3 उत्तर नारायणं 107
9.4 अप्रतिरथं 108
9.5 प्रति पूरुषद्वयं 110
9.6 शत रुद्रीयं 113
9.7 पञ्चांग जपः 115
9.8 अष्टाङ्ग प्रणामः 115
9.9 ध्यानं 117

10. षष्ठः न्यासः (लघु न्यासः) 119

11. रुद्र जपं **(Methods)** 122

11.1 **First Method** 122
11.2 **Second Method** 123
11.3 कुंभ एक कलश (प्रधान कलश) स्थापनं 124
11.4 एकादश कलश स्थापनं 124
11.5 **Sthana Peeta** 125
11.6 श्री शक्ति पञ्चाक्षरी महामन्त्रः 125

12. रुद्र विदानं 128

12.1 कलशेषु ध्यानं 128
12.2 आवाहन मन्त्राः 130

12.2.1 **For Eka kalasam / Ekadasa kalasam** 130
12.2.2 महागणपति आवाहनं 131
12.2.3 सुब्रह्मण्य आवाहनं 131
12.2.4 दुर्गा देवी आवाहनं 132
12.2.5 महाविष्णु आवाहनं 132
12.2.6 महालक्ष्मी आवाहनं 132
12.2.7 महासरस्वती आवाहनं 133
12.2.8 सद्गुरु आवाहनं 133
12.2.9 अन्नपूर्णि आवाहनं 134
12.2.10 शास्ता आवाहनं 134
12.2.11 अनन्त (सर्प्प राजा) आवाहनं 135
12.2.12 सूर्यनारायण आवाहनं 135
12.2.13 नक्षत्र देवता आवाहनं 136
12.2.14 नन्दिकेश्वर आवाहनं 136
12.2.15 आयुर्देवता आवाहनं 137
12.2.16 श्री राम आवाहनं 137
12.2.17 श्रीकृष्ण आवाहनं 137
12.2.18 आञ्चनेय आवाहनं 138
12.3 प्राण प्रतिष्ठा 138
12.4 उपचारं 141
12.5 त्रिशति 146
12.6 प्रदक्षिणं 164
12.7 नमस्कारः 166
12.8 चमक प्रार्त्थना 169
12.9 अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो 181

12.10 श्री रुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं..............................182
12.11गणानां त्वा..............................184
12.12 शं च मे..............................184
12.13 श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः..............................186
12.14 श्री रुद्रं..............................187
13. **Details of "Dravya sampradaayam" in Rudraikaadasini**200
14. एकादश जपं..............................202
14.1 प्रथम वार – अभिषेकं गन्धतैलं..............................202
14.1.1 चमक अनुवाकः..............................202
14.1.2 उपचार मन्त्राः..............................203
14.1.3 आशीर्वादं..............................205
14.2 द्वितीयवार अभिषेकं – पञ्चगव्यं..............................206
14.2.1 द्वितीयः अनुवाकः..............................206
14.2.2 उपचार मन्त्राः..............................207
14.2.3 आशीर्वादं..............................208
14.3 तृतीयवार अभिषेकं – पञ्चामृतं..............................209
14.3.1 तृतीयः अनुवाकः..............................209
14.3.2 उपचार मन्त्राः..............................210
14.3.3 आशीर्वादं..............................211
14.4 तुरीय (चतुर्थ) वार अभिषेकं – घृतं..............................212
14.4.1 चतुर्थः अनुवाकः..............................212
14.4.2 उपचार मन्त्राः..............................213
14.4.3 आशीर्वादं..............................214
14.5 पञ्चमवार अभिषेकं – क्षीरं..............................215
14.5.1 पञ्चमः अनुवाकः..............................215

14.5.2 उपचार मन्त्राः 216
14.5.3 आशीर्वादं.. 217
14.6 षष्ठमवार अभिषेकं – दधि 218
14.6.1 षष्ठः अनुवाकः 218
14.6.2 उपचार मन्त्राः 219
14.6.3 आशीर्वादं.. 220
14.7 सप्तमवार अभिषेकं – मधु... 221
14.7.1 सप्तमः अनुवाकः... 221
14.7.2 उपचार मन्त्राः 222
14.7.3 आशीर्वादं.. 223
14.8 अष्टमवार अभिषेकं – इक्षुरसं 224
14.8.1 अष्टमः अनुवाकः... 224
14.8.2 उपचार मन्त्राः 225
14.8.3 आशीर्वादं.. 226
14.9 नवमवार अभिषेकं–निंबतोय रसं 227
14.9.1 नवमः अनुवाकः... 227
14.9.2 उपचार मन्त्राः 228
14.9.3 आशीर्वादं.. 229
14.10 दशमवार अभिषेकं – नाळिकेरजं.. 230
14.10.1 दशमः अनुवाकः... 230
14.10.2 उपचार मन्त्राः 231
14.10.3 आशीर्वादं.. 233
14.11 एकादशवार अभिषेकं – गन्धतोयं 233
14.11.1 एकादशः अनुवाकः.. 233
14.11.2 उपचार मन्त्राः 235

14.11.3 आशीर्वादं 236
15. गणपति ध्यानं 238
16. श्री रुद्र क्रमः 239
16.1 श्री रुद्रक्रमः प्रथमः अनुवाकः 239
16.2 श्री रुद्रक्रमः–द्वितीयः अनुवाकः 246
16.3 श्री रुद्रक्रमः–तृतीयः अनुवाकः 249
16.4 श्री रुद्रक्रमः – चतुर्थः अनुवाकः 253
16.5 श्री रुद्रक्रमः पञ्चमः अनुवाकः 256
16.6 श्री रुद्रक्रमः षष्ठः अनुवाकः 259
16.7 श्री रुद्रक्रमः – सप्तमः अनुवाकः 262
16.8 श्री रुद्रक्रमः – अष्टमः अनुवाकः 264
16.9 श्रीरुद्रक्रमः – नवमः अनुवाकः 267
16.10 श्रीरुद्रक्रमः– दशमः अनुवाकः 270
16.11श्री रुद्रक्रमः – एकादशः अनुवाकः 278
16.12 त्र्यंबकं ँयजामहे 281
17. श्री चमक क्रमः 283
17.1 श्री चमक क्रमः – प्रथमः अनुवाकः 283
17.2 श्री चमक क्रमः – द्वितीयः अनुवाकः 287
17.3 श्री चमक क्रम :– तृतीयः अनुवाकः 290
17.4 श्री चमक क्रमः– चतुर्थः अनुवाकः 294
17.5 श्री चमक क्रमः– पञ्चमः अनुवाकः 297
17.6 श्री चमकः क्रमः – षष्ठः अनुवाकः 300
17.7 श्री चमक क्रमः – सप्तमः अनुवाकः 304
17.8 श्री चमक क्रमः – अष्टमः अनुवाकः 307
17.9 श्री चमक क्रमः – नवमः अनुवाकः 309

17.10 श्री चमक क्रमः – दशमः अनुवाकः............................ 311
17.11श्री चमक क्रमः – एकादशः अनुवाकः..............................314
17.12 इडा देवहूः...319
18. एकोनसप्तत्यधिक शतसंख्याक होमं..320
18.1 चमक होमः 335
19. उत्तराङ्ग पूजा 336
19.1 कलश उद्वापनं 336
19.1.1 रुद्र एकदाशिनि / महा रुद्रं 338
19.1.2 धूपं 339
19.1.3 दीपं...339
19.1.4 नैवेद्यं..339
19.1.5 तांबूलं..340
19.1.6 पञ्चमुख दीपं..341
19.1.7 कर्पूरनीराजनं..341
19.1.8 मन्त्र पुष्पं 342
19.1.9 चतुर्वेद पारायणं...343
19.1.10 आपस्तंब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः................................ 344
19.2 कुंभ /कलश उद्वापनं... 344
19.2.1 कलश उद्वापन मन्त्राः 344
19.3 अभिषेकं...347
19.4 अलङ्कारं, अर्चना, पूजा..348
19.4.1 बिल्वाष्टकं...348
19.4.2 धूपं 349
19.4.3 दीपं..350

19.4.4 नैवेद्यं 350
19.4.5 तांबूलं 351
19.4.6 पञ्चमुख दीपं.. 351
19.4.7 कर्पूरनीराजनं...352
19.4.8 मन्त्र पुष्पं 353
19.4.9 प्रदक्षिण नमस्कार : 356
19.4.10 उपचारं...358
19.4.11 चतुर्वेद पारायणं..359
19.4.12 आपस्तंब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः...............................359
19.5 नन्दिकेश्वर पूजा 360
19.6 क्षमा प्रार्थना 361
20. स्वस्ति वचनं...363
20.1 प्राशनं प्रसाद विनियोगं , दक्षिण स्वीकरणं 365
20.1.1 शंखतीर्थ प्रोक्षणं 365
20.1.2 अभिषेक- तीर्थप्राशनं..365
20.1.3 पञ्चगव्य प्राशनं...366
20.1.4 प्रसाद विनियोगं **(to yajamaanan)**..........................366
20.1.5 दक्षिण स्वीकरणं...367
21. **Appendix** 368
21.1 शिवाष्टोत्तर-शत-नामावळिः..368

----

1. Introduction

1.1 Purpose

This book has been compiled, as our sincere and modest effort, to help Veda students and learners to conduct Pradosha Pooja, Rudraa-abhishekam Rudra Ekadasini and Maharudram. This book has been compiled based on the actual experience and practices in poojas/functions. Our heartfelt and sincere thanks to various people, who have contributed to the compilation of this book.

The main purpose of this book is to act as a reference guide and we have tried to provide the subjects in the order in which functions are generally performed. In spite of the same, differences in the order of chanting or additional chanting are followed. Please note that this book is **not Exhaustive**.

1.2 Language and Versions

This book has been prepared in Tamil, Malayalam and Sanskrit versions, with all comments and Notes in English.

1.3 Method of compilation

The main source of various Sukthams and Mahanyaasam has been from the books published in Taittiriya Sakhaa compiled and commented by Shri. Sayanacharya of 13th Century and Shri Bhatta Bhaskaracharya (period unknown). Their manuscript compilations were later converted into books by great Scholars. One of such sets of "Taittiriya" was printed and published during earlier 1900 A.D. at Govt. Branch Press, Mysore and another set later published under "Anandaashram Series". These Books were referred to by us as our primary source material for this Book.

In addition, we have also referred to standard and reputed publications and internet sites. **(Please seek the guidance of your Guru)**

1.4 Acknowledgement

Our sincere thanks to all well-wishers for proof-reading, typing and guiding in completion of all the three Versions of this book. In spite of rigorous/careful proof-reading, some mistakes might have crept in. We sincerely request the users of the books to send their feedback on corrections to **vedavms@gmail.com.** It is our endeavour to make this book error-free / accurate.

1.5 Important Notes

1. This book is **not meant for any Self Learning** exercise. Veda Mantras and related rituals are to be learnt from respective Gurus to gain experience on the subject over a period of time through practice and observations.

2. This book is meant **only for "Private Circulation".**

3. It is more appropriate to chant Mantras that sing praise of Lord Parameshwara (or other Deities/Devataas that are worshipped) during the Upachara Puja (Deeparaadhanai) as a part of Ekadasa Japam. Over a period of time, many Vedic Pandits/Scholars have added mantras that seek Abhishtas (wishes) from Deities/Devataas and many of them are in vogue today. We have included 10 sets of upachara mantras in that section which are normally chanted as a practice. Experienced Acharayas may chant different set of Mantras which are not given here.

4. Krama Paatam (Sections 15,16 and 17) has been given in a two-column table for convenience of the reader, representing two teams which render Kramam. One team starts rendering their Paatam after the other team just completes their Paatam.
   Please note that when a padam is split, there is separator that is given as **'-'.** As per convention please give a pause, when a separator is there.
   The rendering needs to be extended/elongated for the **last part of the word/padam,** when it is a Dheerga Swaritam or Anudatta Swaram **and** the letter is a Dheerga letter (e.g. aa, ee, O,) **or** a Anuswaram (letters ending as tam, sam, sham etc. with a dot in Sanskrit). This is indicated through a **">"** (arrow pointing to the right). Kindly note there are slight differences in the Font size/format of Sanskrit, Malayalam and Tamil texts. The Method of elongation varies between few schools in actual practice. Please refer to your Guru for further clarifications on rendering. This book follows the convention of Sayanacharya's Krama Paatam.

Version Note: Version 3.1 dated 31st October 2018 has incorporated corrections found and reported till 31st October 2018. Source Mantra reference has been added wherever required.

1.6 Rudraikaadasini Kumbha Sthapanam

East

10 BHAVOTBHAVAM	1 MAHADEVAM	2 SHIVAM
9 DEVADEVAM	11 ADYITYATMAKA RUDRAM	3 RUDRAM
8 BHIMAM		4 SHANKARAM
7 VIJAYAM	6 EESHAANAM	5 NEELA LOHITAM

West

2. Pooja Preparations

2.1 Some Basics

The Word “Rudra” means" the one who drives away all sins which are the root cause of sorrow/sufferings.

The form of Lord Shiva is worshipped in Eleven Rudra forms (Ganams);

They are :-

1. Mahadevam 2. Shivam 3.Rudram 4. Shankaram,

5. Neelalohitam 6. Eeshaanam 7. Vijayam 8. Bheemam,

9. Devadevam 10. Bhavotbhavam and 11. Adityaathmaka Rudram.

In Poojas, each Ganam is represented through a Kumbha/Kalasham. Please see the picture in the preceding page for the position of the Kumbha/Kalashams for Rudra Ekadasani.

In Maharudram and Athirudram, 11 such Ganams are formed, each with the repective name of the rudra shown above in 1 to 11 numbers.

The forms of Rudra worship include Japa, Homa, Arachana, Abhishekam with Prathakshinam /Namaskaaram.

Normally, the homam is performed on the strength/count of total rudrams, and normally the homa count is of 10 percent of the Japam.

2.2 Forms of Rudra Japam

There are **five forms (sampradaaya)** to chant Shree Rudra japa.

The 1st form- We recite the full Shree Rudram (all 11 anuvaakams) and then full Chamakam (all 11 anuvaakams) once. This is called “NAMAKAM”. This is for nithya paaraayanam.

2nd Form

Shree Rudram chanted fully Once (all 11 anuvaakams) + 1st Anuvaakam of Chamakam only, and Shree Rudram full for 2nd round + 2nd Anuvaakam of Chamakam only, Shree Rudram full for 3rd round + 3rd Anuvaakam of Chamakam and so on.

If one person chants in this order full Shree Rudram 11 times and each corresponding Chamaka anuvaakam then this is called “Rudram”.
(Total count is 1 person x 11 Rudrams + 1 full Chamakam = 11 Shree Rudrams + 1 Chamakam

3rd Form Rudra Ekadasani - 11 times of chants as per Form number 2 is Rudraikaadasini . 11 Ritviks required.

Total count = 11 persons x 11 shree Rudrams =121 Rudrams

11 persons x 1 Chamakam = 11 Chamakam

4th Form Maharudram-This is equivalent to 11 “Rudraikaadasini”. 121 persons required

Total count = 121 persons x 11 Shree Rudrams =1331 Rudrams

121 persons x 1 Chamakam= 121 Chamakam

Eleven Ganams are arranged/formed with 11 Kalashams each representing the 11 individual Ganas. In each of the Ganas, 11 Rutviks recite 11 Rudram and One Chamakam. The Number of Rutviks is 121. Homam shall be performed by 12 additional Rutvik by repeating Rudra Homam 11 times and Chamaka Homam once, taking the count of Homam to 132 Rudrams and 12 Chamakams. This is normally performed in a single day over a time span of 7/8 hours.

5th Form Athirudram: This is equivalent to 11 Maharudrams.
121 Rutviks chant 121 times Shree Rudram and 11 times Chamakam over 11 days or 5/6 days (as per the event planned).
Total count = 121 persons x 121 Shree Rudrams =14641 Shree Rudrams.
121 persons x 11 Chamakam=1331 Chamakams.
The Homam shall be performed by 12 Rutviks

2.3 Sadyo Jaatham

There are two practices, either to install additional Pancha Kalashams(5) or a single(Eka) Sadyo Jaatha Kalasham.

In case of (Eka) Sadhyo Jaatha Kalasham, it is normally kept near the Abhisheka-Sthanam. The aavaahanam is done separately for this Kalasham during Kumbha/Kalasha aavaahanam. Abhishekam to the deity shall be performed first with this Kalasha jalam after

Ekadasa japam/all dravya abhishekam. Therefore, the udvaapanam shall be performed separately to this Kalasham after Ekadasa Japam. “Namo Brahmane….” shall be chanted three times during the Udvaapanam.

When Pancha Kalashams (Paschimam-Sadyo Jaatham, Uttharam, Dakshinam, Poorvam and Madhyamam) are installed, then Sadyo Jaatham will be Paschima Kalasham. The first abhisekham shall be performed from these Pancha Kalashams after Ekadasa japam/all dravya abhishekam.

In case of Rudra Ekadasani, the main Kumbham/Kalasha Jala Abhishekam to the Deities is performed after the Rudra Kramaarchana, Homa and the final udvaapanam of the Kalashams. In case of Rudraekadasani, conducted as a part of Shastyapthapoorthi or Sadaabhisekham, main Kumbha/Kalasha jala abhishekam is perfomed to the Yajamaana Dampathi.

2.4 Star (Nakshatra) and Rasi Table:

Serial No	Star Name in Tamil / Malayalam	Star Padam	Star Name in Sanskrit	Rasi
1	Ashvathi	1,2,3,4	Ashwini	Mesha
2	Bharani	1,2,3,4	Apa-Bharani	Mesha
3	Karthikai/Karthika	1	Krittikaa	Mesha
4	Karthikai/Karthika	2,3,4	Krittikaa	Vrushabha
5	Rohini	1,2,3,4	Rohini	Vrushabha
6	Mrugasheersham/Makeeryam	1,2	Mrugashirsha	Vrushabha
7	Mrugasheersham/Makeeryam	3,4	Mrugashirsha	Mithuna
8	Thiruvathirai/Thiruvathira	1,2,3,4	Aardraa	Mithuna
9	Punarpoosam	1,2,3	Punarvasu	Mithuna
10	Punarpoosam	4	Punarvasu	Kataka
11	Poosam	1,2,3,4	Pushya	Kataka
12	Aailyam	1,2,3,4	Aashleshaa	Kataka
13	Magham	1,2,3,4	Magha	Simha

14	Pooram	1,2,3,4	Poorva Phalgunee	Simha
15	Utthiram	1	Utthara Phalgunee	Simha
16	Utthiram	2,3,4	Utthara Phalgunee	Kanya
17	Hastham	1,2,3,4	Hastha	Kanya
18	Chitthirai/Chitra	1,2	Chitra	Kanya
19	Chitthirai/Chitra	3,4	Chitra	Thula
20	Swathi	1,2,3,4	Swathi	Thula
21	Vishakam/Vishaka	1,2,3	Vishaka	Thula
22	Vishakam/Vishaka	4	Vishaka	Vrishchika
23	Anusham	1,2,3,4	Anuradha	Vrishchika
24	Kettai/Trikketta	1,2,3,4	Jyeshta	Vrishchika
25	Moolam	1,2,3,4	Moola	Dhanur
26	Pooradam	1,2,3,4	Poorvashada	Dhanur
27	Utharadam/Uthiradam	1	Uthirashada	Dhanur
28	Utharadam/Uthiradam	2,3,4	Uthirashada	Makara
29	Thiruvonam	1,2,3,4	Sravana	Makara
30	Avittam	1,2	Shravishta	Makara
31`	Avittam	3,4	Shravishta	Kumbha
32	Chathayam	1,2,3,4	Shatabhishak	Kumbha
33	Poorattathi	1,2,3	Poorva Proshtapada	Kumbha
34	Poorattathi	4	Poorva Proshtapada	Meena
35	Uthirattathi	1,2,3,4	Uthira Proshtapada	Meena
36	Revathi	1,2,3,4	Revathee	Meena

2.4.1 Days of the Week:

Sunday - Bhanu Vasaram

Monday - Indu or Soma Vasaram

Tuesday - Bowma Vasaram

Wednesday - Sowmya Vasaram

Thursday - Guru Vasaram

Friday - Brigu (Shukra) Vasaram

Saturday - Sthira (Mandha) Vasaram

2.4.2 Masam, Ruthu, Ayanam

The start of the Hindu month may vary from 13/14th day of the English Calendar Month to the 18th day of the Calendar month. So kindly refer to the Calendar published in Tamil or Malayalam for the current month.

Middle of the English Month	Masam name in Tamil / Malayalam	Masam	Ruthu	Ayanam
Apr - May	Chithirai/ Medam	Mesha	Vasanta	Uttarayana
May – June	Vaikasi/ Edavam	Vrushabha	Vasanta	Uttarayana
June – July	Aani/Mithunam	Mithuna	Greeshma	Uttarayana
July – August	Adi / Karkatakam	Kataka	Greeshma	Dakshinayana
August – Sept.	Aavani/ Chingam	Simha	Varsha	Dakshinayana
Sept. – October	Purattaasi/ Kanni	Kanya	Varsha	Dakshinayana
Oct. - November	Aippasi/ Thulam	Tula	Sarath	Dakshinayana
Nov - December	Karthikai/ Vruschikam	Vrischika	Sarath	Dakshinayana
Dec. – Januaray	Margazhi/	Dhanur	Hemanta	Dakshinayana

	Dhanu			
Jan. - February	Thai/Makara	Makara	Hemanta	Uttarayana
Feb - March	Maasi/Kumbha	Kumbha	Shishira	Uttarayana
March - April	Panguni/ Meenam	Meena	Shishira	Uttarayana

3. पूर्वांग पूजा

3.1 पूजा प्रारंभः

3.1.1 भाग्य सूक्तं

(TB 2.9.8.7)

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्र७ँ हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्र७ँ हुवेम ॥ 1

प्रातर्जितं भगमुग्र७ँ हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आद्ध्रश्चिद्यं मन्यमान–स्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥ 2

भगप्रणेतर्भग–सत्यराधो भगेमां धियमुद–वददन्नः ।
भगप्रणो जनय गोभि–रश्वैर् भगप्रनृभिर् नृवन्त–स्स्याम ॥ 3

उतेदानीं भगवन्त–स्स्यामोत प्रपित्व उत मद्ध्ये अह्नां ।
उतोदिता मघवन्थ्–सूर्यस्य वयं देवाना७ँ सुमतौ स्याम ॥ 4

भग एव भगवा७ँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्त–स्स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीमि सनो भग पुर एता भवेह ॥ 5

समध्वरा–योषसो ऽनमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय ।
अर्वाचीनं वसुविदं भगन्नो रथमिवाश्वा वाजिन आवहन्तु ॥ 6

अश्वावतीर् गोमतीर्न उषासो वीरवती–स्सदमुच्छन्तु भद्राः ।

घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीना यूयं पात स्वस्ति–भिस्सदानः ॥ **7**

यो मा॒ऽग्ने भागिनꣳ सन्तमथा भागं चिकीर्.षति ।

अभाग–मग्ने तं कुरु मामग्ने भागिनं कुरु ॥ **8**

भाग्य देवतायै नमः ॥

3.1.2 आचम्य ,पवित्रं स्वीकृत्य

आगमनार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसां ।

देवता पूजात्र्थाय घण्ठनादं करोम्यहं ॥ (इति घण्ठनादं कृत्वा)

ऋद्ध्यास्म हव्यै र्नमसोप–सद्य । मित्रं देवं मित्रधेयन्नो अस्तु ।

अनूराधान्. हविषा वर्धयन्तः । शतं जीवेम शरदस्सवीराः ॥

(पवित्रं धृत्वा)

नमस्सदसे नमस्सदसस्पतये नमः सखीनां पुरोगाणां चक्षुषे नमो

दिवे नमः पृथिव्यै ॥ **(TS 3.2.4.4)**

हरिः ओं । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।

(अक्षतान् विकीर्य)

3.1.3 अनुज्ञा

अशेषे हे परिषत् भवत् पादमूले मया समर्पितां इमां सौवर्णीं
यत्किञ्चत् दक्षिणां यथोक्त दक्षिणामिव स्वीकृत्य ।
इदं सांबपरमेश्वर पूजा कर्मकर्तुं योग्यता सिद्धिं अनुग्रहाण ।
(ब्राह्मण प्रति वचनं –"योग्यता सिद्धिरस्तु")

3.1.4 अनुज्ञा (प्रदक्षिण मन्त्राः सहित)

ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः ।
ध्रुवं त इन्द्र–श्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवं ॥ **1 (RV.10.173.5)**

पर्वत इवा विशाचलिः । इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठ । इह राष्ट्र मुधारय ।
अभितिष्ट पृतन्यतः । अधरे सन्तु शत्रवः । इन्द्र इव वृत्रहा तिष्ठ । **2 (TB 2.4.2.9)**

देवीं वाँच–मजनयन्त देवाः । तां विँश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सानो मन्द्रेष मूर्जं दुहाना । धेनुर्वागस्मा–नुपसुष्टतैतु ॥ **3 (TB 2.4.6.10)**

आरंभ काल मुहूर्त्तः सुमुहूर्त्तोस्त्विवति भवन्तोनुह्णन्तू ।
(प्रतिवचनं – "सुमुहूर्तोस्तु, सुप्रतिष्ठितमस्तु ")

ये अर्वाङुतवा पुराणे वेदं विद्वा७ं समभितो वदन्त्यादित्य मेवते परिवदन्ति सर्वे अग्निं द्वितीयं तृतीयं च ह७ंसमिति यावतीर्वै देवतास्ता स्सर्वा वेद विदि ब्राह्मणे वसन्ति तस्मात् ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भयो दिवे दिवे नमस्कुर्यान्ना श्लीलङ्कीर्तये देता एव देवताः प्रीणाति ॥ **4 (TA 2.15.1)**

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवद्भ्यो नम आशिनेभ्यः ।
यजाम देवान् यदीशक्नवा ममा ज्यायसः शं समावृक्षि देवाः ॥ **5 RV 1.27.13**

सदसस्पति मद्भुतं प्रिय-मिन्द्रस्य काम्यं । सनिं मेधामयासिषं ॥ **6 TA.6.1.4**

सप्रथ सभां मे गोपाय । ये च सभ्या स्सभासदः ।
तानिन्द्रियावतः कुरु । सर्वमायु-रुपासतां ।
अहे बुध्निय मन्त्रं मे गोपाय । यमृषयस्त्रै-विदा विदुः ।
ऋच स्सामानि यजू७ंषि । सा हि श्रीरमृता सतां । **7 (TB 1.2.1.26)**

अग्निस्तु विश्रवस्तमं तुवि ब्रह्माणमुत्तमं ।
अतूर्त्तं श्रावयत् पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे । **8 (RV.5.25.5)**

नमः सभाभ्य सभापतिभ्यश्च वो नमः ॥ 9

अशेषे हे परिषत् भवत् पादमूले मया समर्पितां इमां सौवर्णीं यत्किञ्चत् दक्षिणां यथोक्त दक्षिणामिव स्वीकृत्य । इदं सांबपरमेश्वर पूजा कर्मकर्त्तुं योग्यता सिद्धिं अनुग्रहाण ।

(ब्राह्मण प्रति वचनं –"योग्यता सिद्धिरस्तु")

3.1.5 अनुज्ञा (रुद्र एकदशिनि)

(This Anujgya is ideally used for Rudra Ekadasini. However, appropriate changes can be made in the Sankhya (counts) for Japam/Homam in case of Maharudram)

आचम्य । शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये । ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्त्ते, आद्य ब्रह्मणः, द्वितीय परार्द्धे, श्वेतवराह कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, अष्टाविंशति तमे कलियुगे, प्रथमे पादे, जंबूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, मेरोः दक्षिणे पार्श्वे, शकाब्दे, अस्मिन् वर्त्तमाने, व्यवहारिके प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवथ्सराणां मद्ध्ये .... नामसंवथ्सरे ....अयने .... ऋतौ .... मासे ....पक्षे ....(शुभतिथौ)................ वासरयुक्तायां .... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्ठायां अस्यां ....शुभतिथौ

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं अनादि अविद्यावासनया प्रवर्त्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु पशु पक्षी मृगादि योनिषु पुनः पुनः अनेकदा जनित्वा , केनापि पुण्यकर्म विशेषेण इदानीं तन मानुष्ये द्विजन्मविशेषं प्राप्तवतः ....नक्षत्रे .... राशौ जातस्य ....शर्मणः मम सकुटुंबस्य, जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत् क्षण पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे यौव्वने वार्धके च जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु , मनोवाक्काय कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय व्यापारैः, कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमाथ्सर्यैः, त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राण वाक्पाणि पादपायु उपस्थाख्यैः दशभिः इन्द्रियैः, मनोबुधि-चित्त-अहङ्काराख्यैः अन्तरिन्द्रियेश्च कृतानां, इहजन्मनि जन्म-जन्मान्तरेषु वा ज्ञानतः अज्ञानतो वा रहसि प्रकाशेषु वा संभावितानां पञ्च महापातकानां उपपातकानां, ज्ञानतः सकृत्कृतानां, अज्ञानतः असत्कृतानां, ज्ञानतः, अज्ञानतश्च अभ्यस्तानां, निरन्तर अभ्यस्तानां, चिरकाल अभ्यस्तानां, निरन्तर चिरकाल अभ्यस्तानां, एवं नवानां नवविधानां , बहूनां बहुविधानां, सर्वेषां पापानां, मद्ध्ये संभावितानां सर्वेषां पापानां, सद्यः अपनोदनार्त्थं आदित्यात्मकरुद्र प्रसाद सिद्ध्यर्त्थं, महादेवादि एकादश अभिन्नरूप आदित्यात्मकरुद्र प्रसादेन,

अस्माकं सर्वेषां आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैवीक, नवनव जनित तापत्रय निवृत्त्यर्थं .... एभिः ब्राह्मणैस्सह, महार्ण्णवोक्त प्रकारेण, आचार्यमुखेन ऋत्विङ्मुखेन च , ऋग्यजु–स्सामाथ–र्वणाख्येषु चतुर्षु वेदेषु मद्ध्ये, एकाधिक शतसंख्याक यजुश्शाखासु, आदिभूत संहिताशाखा अन्तर्भूत अग्निकाण्ड अन्तर्गतानां , सर्वेषु वेदेषु, सर्वासु उपनिषद्सु, स्मृतीतिहास पुराणादिषु, सर्वपाप निवर्त्तकत्वेन, दिव्यज्ञान प्रदत्वेन, मोक्ष प्रदत्वेन च, तत्रतत्र उद्घुष्टानां "चरमेष्टकायां जुहोति" इति चरमेष्टक उपयुक्तानां,

"शतरुद्रान् जपेद्यस्तु द्यायमानो महेश्वरं" इति शैव पुराण वचनेन,

"यः शतरुद्रीयं अधीते , स अग्निपूतो इति कैवल्योपनिषद् वचनेन,

"अथ हैनं ब्रह्मचारिणः ऊचुः । किं जप्येन अमृतत्वं नो भवति ।

सहो वाच याज्ञवल्क्यः शतरुद्रियेणेति ।

एतानि ह वा अमृतस्य नामधेयानि । एतैर्हवा अमृतो भवति ।"

इति जाबालोपनिषत् वचनेन,

"रुद्राणां जपहोम अर्च्चना अभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः" इत्यादि श्रुतिस्मृति पुराणवचनैः पूजाजप होमादि कर्मसु उपयुक्तानां एकादश अनुवाक आत्मकानां तत्र "नमस्ते रुद्रमन्यवे इति" प्रथमानुवाके दुष्टसंहारार्थं सङ्क्रुद्ध रुद्रकोप आयुधादिभ्यः अभय प्रार्त्थना

प्रकाशकानां पञ्चदश-संख्याकानां षोडशोपचार उपयुक्तानां,
"नमो हिरण्यबाहवे इत्यादि" अष्ठानुवाकेषु वैश्वरूप्यध्यान एकतो-
नमस्कार उभयतो-नमस्कार रूपाणां एकोन्नत्रिंशत् उत्तरशत
संख्यकानां त्रिशत्यर्च्चना उपयुक्तानां,
"द्रापे अन्धसस्पते" इति दशमानुवाके जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति
अवस्तासु जलपात विषभूत शत्रुमृत्यु ज्वरादि स्फोटकादि नानारोगेभ्यः
नानादभिचारेभ्यः अभयप्रार्थना प्रकाशकानां द्वादश संख्याकानां,
प्रदक्षिण उपयुक्तानां "सहस्राणि सहस्रशः" इति एकदशानुवाके
सर्व्वव्यापक रुद्र विभूति प्रकाशकानां साऽनुषंगाणां त्रयोदश
संख्याकानां नमस्कार उपयुक्तानां, अभीप्सितार्त्थ याचानासूचक
चमकानुवाक संय्युक्तानां, मूर्त्यष्टक मूर्त्तपञ्चक मूर्त्तित्रय अधिष्ठान
पञ्चकृत्य विधान पठीयस्य, शिवया शूलिन्या अधोराख्याया तनुवा
सर्वो-पादानुतया सर्वात्मकतया सर्व्ववेद-बोधित सर्व्वात्मक शर्व्वरीश
शकलधर परमशिवाख्य सदाशिव-ब्रह्ममञ्च पर्यकायमाण
पञ्चाक्षराख्य महामन्त्ररत्न मुख्यकोशानां शतरुद्रीयाणां त्रेधाविभागद्वय
षोढा विभाग षोडशधा-विभाग अष्टा-चत्वारिंशधा विभाग
एकोनसप्तति अधिक शतधा विभागानां, षण्णां विभागानां मध्ये,
एकोन्न सप्तति अधिक शतधा विभागपक्षं आश्रित्य शतांश दशांश

संपूर्ण–होमानां मध्ये दशांश होमविधानेन द्वात्रि–शदुत्तरशत संख्याक नमक चमक जपात्मक तद् दशांश परिमित द्विचत्वारिंशत् उत्तर द्विसहस्र संख्याक नमक चमक आहुत्यात्मकं अन्ते वसोर्धारा सहितं प्राच्यांग उदीच्यांग गोदान नान्दीश्राध वैष्णवश्राध दशदान सहितं कर्मानुष्ठान योग्यता संपातक पूतत्व सिद्धिकर प्राजापत्य कृछ्र प्रत्याम्नाय भूत हिरण्यदान पूर्वकं सकल पापनिवर्त्तकं सर्वाभीष्ट प्रदायकं रुद्रैकादशिन्याख्य महाप्रायश्चित्त कर्मकर्त्तुं योग्यतासिधिः अस्त्विति अनुग्रहाणा ॥

(योग्यता सिद्धिरस्तु – इति ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.2 विघ्नेश्वरपूजा

3.2.1 घण्ठ पूजा

घण्ठदेवताभ्यो नमः । गन्धपुष्पं समर्पयामि ।

आगमनार्थं तु देवानां गमनार्त्थं तु रक्षसां ।

देवता पूजानार्त्थाय घण्ठनादं करोम्यहं ॥

(इति घण्ठनादं कृत्वा)

3.2.2 आचमनं सङ्कल्पं

आचमनं + शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं ।

प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोप शान्तये ।

ओं भूः, ओं भुवः, ओ७ं सुवः, ओं महः, ओं जनः, ओं तपः,

ओ७ं सत्यं । ओं तथ्सवितु र्वरेण्यं । भर्गोदेवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् । ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म

भूर्भुवस्सुवरों ।

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं, शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्त्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि–षष्ठ्याः –संवथ्सराणां मद्ध्ये...... नामसंवथ्सरे ....अयने .... ऋतौ .... मासे ....पक्षे .... शुभतिथौ ......वासरयुक्तायां .... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यां ....शुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं करिष्यमाण कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थं आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये । विघ्नेश्वर पूजां करिष्ये ।

(दर्भान् निरस्य । अप उपस्पृश्य ।

गन्ध–पुष्पान् गृहीत्वा विघ्नेश्वरं आवाहयेत् ।)

3.2.3 आवाहनं उपचारं

ओं गणानां त्वा गणपति९ँ हवामहे कविं कवीना–मुपमश्रवस्तमं ।
जेष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनं ।
ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् हरिद्राबिंबे सपरिवारं विघ्नेश्वरं
ध्यायामि , आवाहयामि । विघ्नेश्वरस्य इदमासनं । विघ्नेश्वराय नमः ।
पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।
मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि ।
स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । वस्त्रार्त्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।
उत्तरीयार्त्थं पुष्पाणि समर्पयामि । यज्ञोपवीतार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।
आभरणार्त्थे पुष्पाणि समर्पयामि । दिव्यगन्धान् धारयामि ।
हरिद्राकुंकुमं धारयामि । अलङ्करणार्त्थे अक्षतां समर्पयामि ।
पष्पैः पूजयामि ।

ओं सुमुखाय नमः । ओं एकदन्ताय नमः ।
ओं कपिलाय नमः । ओं गजकर्णकाय नमः ।
ओं लंबोधराय नमः । ओं विकटाय नमः ।
ओं विघ्नराजाय नमः । ओं विनायकाय नमः ।
ओं धूमकेतवे नमः । ओं गणाध्यक्षाय नमः ।
ओं फालचन्द्राय नमः । ओं गजाननाय नमः ।

ओं वक्रतुण्डाय नमः । ओं शूर्पकर्णाय नमः ।

ओं हेरंबाय नमः । ओं स्कन्दपूर्वजाय नमः ।

ओं विघ्नेश्वराय नमः । ओं श्री महागणपतये नमः ॥

ननाविध परिमळ पत्रपुष्पाणि समर्पयामि ।

धूपार्त्थं पुष्पाणि समर्पयामि । दीपार्त्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।

3.2.4 नैवेद्यं, प्रार्त्थना

ओं भूर्भुवस्सुवः । ओं तथ्सवितु वरेण्यं । भर्गोदेवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्त्तेन परिषिञ्चामि ।

ओं विघ्नेश्वराय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः ।

ओं व्यानाय स्वाहाः । ओं उदानाय स्वाहाः ।

ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

ओं विघ्नेश्वराय नमः । नाळिकेरखण्डद्वयं, कदळीफलं
महानैवेद्यं निवेदयामि । मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि ।
अमृतापिधानमसि । नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

तांबूलं

ओँ भूर्भुवस्सुवः । पूगीफल समायुक्तं नगवल्ली-दळैर्युतं ।

कर्पूर-चूर्ण संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यतां । ओँ विघ्नेश्वराय नमः ।

कर्पूर तांबूलं निवेदयामि । (समर्पयामि)

दीपाराधना

नमो व्रातपतये, नमो गणपतये, नमः प्रमथपतये, नमस्ते अस्तु

लंबोदरा-यैकदन्ताय विघ्न(वि)नाशिने, शिवसुताय,श्री वरदमूर्तये नमः ।

(अथवा)

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैँश्रवणाय कुर्महे ।

स मे कामान् कामकामाय मह्यं । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।

कुबेराय वैश्रवणाय । महाराजाय नमः ।

कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि । नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।

चन्द्रमा वा अपां पुष्पं । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।

श्री विघ्नेश्वराय नमः । वेदोक्त-मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ।

सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि । समस्तोपचरान् समर्पयामि ।

प्रार्थना

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटी समप्रभ ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ 1

नमो नमो गणेशाय नमस्ते शिवसूनवे ।

निर्विघ्नं कुरु मे देवेश नमामि त्वां गणाधिप । 2

विघ्नेश्वर महाभाग सर्व लोकनमस्कृत ।

मयाऽऽरब्धमिदं कर्म निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥ 3

3.3 प्रार्थना पूजा प्रारंभः

(रुद्र विधानेन महान्या–सपूर्वकं पञ्चायतन पूजा प्रारंभः)

3.3.1 प्रार्थना

नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च ।

जगद्धिताय कृष्णाय श्री गोविन्दाय नमो नमः ॥ 1

आब्रह्मलोका–दाशेषादा–लोकाल्लोक पर्वतात् ।

ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमो नमः ॥ 2

ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्या संप्रदाय–कर्तृभ्यो

वंशऋषिभ्यो गुरुभ्यो महद्भ्यः ॥ 3

3.3.2 आसन पूजा

अस्य श्री आसन महामन्त्रस्य, पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः ।

सुतलं छन्दः । कूर्मो देवता । आसने विनियोगः ।

पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु आसनं ॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाच सर्वतो दिशां ।

सर्वेषा–मविरोधेन पूजाकर्म समारंभे ॥

योगासनाय नमः । वीरासनाय नमः । शरासनाय नमः ।

अधारशक्ति कमलासनाय नमः । (इति भूमी पुष्पाञ्जलि विकिरेत्)

3.4 सङ्कल्पं

(The brief Sankalpam shall be used for Shiva Pooja at home, Rudraabhishekam and Pradosha Poojas)

3.4.1 सङ्कल्पं (1)

आचमनं , शुक्लांबरधरं , प्राणायामं ,

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,

शुभे शोभने मुहूर्त्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवराह कल्पे

वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे

भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्त्तमाने

व्यवहारिके प्रभवादि षष्ठ्याः संवथ्सराणां मध्ये .... नामसंवथ्सरे

.......अयने .... ऋतौ .... मासे ....पक्षे .... शुभतिथौ.

.... वासरयुक्तायां .... नक्षत्रयुक्तायां, शुभयोग शुभकरण

एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यां ....शुभतिथौ ममोपात्त

समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं .... नक्षत्रे ....राशौ

जातस्य ....शर्मणः मम .... नक्षत्रे ....राशौ

............जातयाः मम धर्मपत्न्याश्च आवयोः सकुढुंबायोः ....

सपुत्रकयोः सबन्धुवर्गयोः साश्रित-जनयोश्च क्षेम-स्थैर्य-वीर्य-

विजय, आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणां अभिवृद्ध्यर्थं, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-

चतुर्विध फलपुरुषार्थ सिद्ध्यर्त्थं, सर्वारिष्ट शान्त्यर्त्थं,

सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्त्थं, सपरिवार सोमास्कन्द परमेश्वर चरणारविन्दयोः

अचञ्चल-निष्कपट-भक्ति सिद्ध्यर्त्थं ,

यावच्छक्ति परिवार सहित रुद्रविधानेन ध्यान-आवाहनादि-

षोडशोपचार-पूजा पुरस्सरं महान्यासजप (लघुन्यासजप)

रुद्राभिषेक-अर्च्चनादि सहित सांबशिव पूजां करिष्ये ।

तदंगं कलश-शंख-आत्म-पीठ-पूजां च करिष्ये । (द्वि)

(इति सङ्कल्पं । अप उपस्पृश्य)

3.4.2 सङ्कल्पं (2)

(This Elaborate Sankalpam is ideally used for Rudraabhishekam in a Samajam, Mandal, Public function.)

आचमनं, शुक्लांबरधरं, प्राणायामं -

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,

एतत् मण्डली भक्तजनानां अखिल भारतीयानां, अखिल भूमण्डल

निवासानां, एतत् कर्म प्रवर्त्तकानां, प्रोथ्साहकानां, साहाय्यकारीणां,

नानाविध द्रव्य दातृकाणां, दर्शनार्त्थं आगतानां आगमिष्याणां

सकुटुंबानां साश्रित बन्धुमित्राणां, सर्वेषां महाजनानां, जन्माभ्यासात्

जन्मप्रभृति एतत्क्षण-पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे यौव्वने वार्द्धके च,

जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु, मनोवाक्काय कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय

व्यापारैः, कामक्रोध–लोभ–मोह–मदमात्सर्यैः, रहसि प्रकाशे च ज्ञाना–ज्ञानकृतानां महापातकानां, अतिपातकानां, उपपातकानां, सङ्करीकरणानां, मलिनीकरणानां, अपात्रीकरणानां जातिभ्रंश–करणानां प्रकीर्णकानां ज्ञानतः सकृत्–कृतानां, अज्ञानतः असत्–कृतानां, ज्ञानातोऽज्ञानाश्च अभ्यस्तानां, निरन्तरा–भ्यस्तानां चिरकाला–भ्यस्तानां, एवं नवानां नवविधानां बहूनां बहुविधानां पापानां, मद्ध्ये संभाविधानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्त्थं, महादेवादीनां रुद्राणां प्रसाद–सिद्ध्यर्त्थं, महादेवादीनां रुद्राणां प्रसादेन राज्य निर्वाहकानां मन्त्रिवर्याणां, अन्योन्य मथ्सरबुद्धि निरसनद्वारा सद्बुद्धि उदयसिद्ध्यर्त्थं, तद्वारा इदानीं अनुभूयमान नित्योपयोग साधन उत्पन्न अलभ्यता निवृत्तिद्वारा सुलभ्यता–सिद्ध्यर्त्थं, सर्वद्रव्य निर्माण–शालासु जनित जायमान अग्निबाधा प्रवृत्ति बन्धनादि निवृत्तिद्वारा उत्तरोत्तरं लाभाऽभिवृद्ध्यर्त्थं, आन्तरीक्षात् उत्भूत, उत्पात, उत्पस्यमान सकल कण्डक निवृत्यर्थं, तद्वारा इन्धन–जल–विद्युश्चक्ति क्षाम निवृत्यर्त्थं, अतिवृष्टि–वायुमर्दन–उग्रताप–समुद्र–क्लेशनादि निवृत्तिद्वारा सर्वविध प्रकृति अनुकूल–सिध्यर्त्थं, शरीरे बाध्यमान–बाधिष्यमाण चित्तभ्रम–शिरोरोग–चर्मरोग– मनोरोग–अक्षिरोग पतनाति जनित अस्थिच्छेदानादि सकलरोग निवृत्यर्त्थं, भूजलवायु सञ्चारकाल

जनित–जायमान सकलदुरित निवृत्यर्थं, आतुराणां रोगीणां वैद्यशालासु उत्तम भिषग्वर सेवना रोगमुक्त औषधादि सिद्धिद्वारा अरोग्य–दृढगात्रता सिद्ध्यर्त्थं, अपमृत्यु निवारणार्त्थं, क्षेम–स्थैर्य–वीर्य–विजय आयुरारोग्य–ऐश्वर्याणां अभिवृद्ध्यर्त्थं, धर्मार्त्थ–काम–मोक्ष–चतुर्विध फलपुरुषार्त्थ सिद्ध्यर्त्थं, सर्वारिष्ट शान्त्यर्त्थं, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्त्थं, सकल साम्राज्य अभिवृद्ध्यर्त्थं, ऐकमत्य सिद्ध्यर्त्थं, विद्यार्त्थीनां विद्यार्त्थिनीनां च बालपाठशालासु निष्प्रयासेन प्रवेश सिद्ध्यर्त्थं, तत्र प्रतिवर्ष परीक्षासु प्रथम गणनीय विजय प्राप्त्यर्त्थं, अभ्यस्त नानाबिरुध धारीणां अनुचित स्थिर उद्योग प्राप्त्यर्त्थं, अलाभौजनित क्लेश निवृत्तिद्वारा उन्नत उद्योग प्राप्त्यर्त्थं, चतुर्वर्णानां तत्तत् वर्णाश्रम कर्मासु पूर्ण उथ्सुहता सिद्ध्यर्त्थं, उत्तमवर्णेन नित्य नैमत्तिक काम्य श्रौत स्मार्त्त विहित कर्मानुष्ठाने सोथ्साहता सिद्ध्यर्त्थं, सुहासिनीनां दीर्घ–सौमंगल्य सिद्ध्यर्त्थं, कनक–वस्तु–वाहनादि पुत्र–पौत्र सहित सुखजीवित्व सिद्ध्यर्त्थं, वर–वधूनां च विवाह प्रतिबन्धकीभूत दुरित निवृत्तिद्वारा उचितकाले मनोऽभीष्ट विवाह प्राप्त्यर्त्थं, आस्तिकानां स्वधर्माभिरुचि सिद्ध्यर्त्थं, सद्यः सुवृष्ट्या वापी कूप तटाकानां समृद्ध्यर्त्थं, सर्व सस्याभिवृद्ध्यर्त्थं, अन्न समृद्ध्यर्त्थं, क्षाम–क्षोभ निवृत्त्यर्त्थं, सकलश्रेयः प्राप्ति हेतुभूत सांबपरमेश्वर परिपूर्ण अनुग्रह

सिद्ध्यर्त्थं, कुटुंबक्षेमा–भिवृद्ध्यर्त्थं, ऐहिक आमुष्मिक सकल–श्रेयाभिवृद्ध्यर्त्थं, यावच्छक्ति परिवार सहित रुद्रविधानेन ध्यान–आवाहनादि–षोडशोपचारपूजा पुरस्सरं महान्यासजप (लघुन्यासजप) रुद्रजप–सहित एकदशवार रुद्राभिषेक–सहित–यथाशक्ति त्रिशति अर्चना क्रमार्चना अन्य अर्चनादि सहित सांबशिव पूजां करिष्ये । तदंगं कलश–शंख–आत्म–पीठ–पूजां च करिष्ये । (द्वि)

(अप उपस्पृश्य)

3.4.3 सङ्कल्पं (3)

(This Elaborate Sankalpam may be used for Rudra Ekadasini generally)

आचमनं शुक्लांबरधरं प्राणायामं –ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं, शुभे शोभने मुहूर्ते आध्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरत खण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि– षष्ठ्याः –संवथ्सराणां मध्ये .... नामसंवथ्सरे ....अयने .... ऋतौ .... मासे ....पक्षे .... शुभतिथौ .... वासरयुक्तायां .... नक्षत्रयुक्तायां

शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्याम्
.................शुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर
प्रीत्यर्थं,

अनादि अविद्यावासनया प्रवर्त्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे
विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु अनेकासु पशु–पक्षी मृगादि
योनिषु पुनः पुनः अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्म विशेषेण
इदानीन्तन मानुष्ये द्विजन्म विशेषं प्राप्तवतः ....नक्षत्रे
.... राशौ जातस्य ....शर्मणः .... नक्षत्रे
..............राशौ ....जातयाः मम धर्मपत्न्याश्च आवयोः
सकुटुंबयोः .... सपुत्रकयोः सबन्धुवर्गयोः साश्रित–जनयोश्च
जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षण पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे
यौव्वने वार्धके च जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु मनोवाक्काय
कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय व्यापारैः कामक्रोध–लोभ–मोह–मदमात्सर्यैः
रहसि प्रकाशे च ज्ञाना–ऽज्ञानकृतानां महापातकानां अतिपातकानां
उपपातकानां सङ्करीकरणानां मलिनीकरणानां अपात्रीकरणानां
जातिभ्रंश–करणानां प्रकीर्णकानां ज्ञानतः सकृत्–कृतानां अज्ञानतः
असत्–कृतानां ज्ञानतोऽज्ञानतश्च अभ्यस्तानां चिरकाला–भ्यस्तानां
निरन्तर चिरकाला–भ्यस्तानां एवं नवानां नवविधानां बहूनां बहुविधानां

पापानां मध्ये संभाविधानां सर्वेषां पापानां सध्यः अपनोदनार्त्थं,
महादेवादीनां रुद्राणां आदित्यात्मकरुद्रस्य च प्रसाद सिद्ध्यर्त्थं,
आयुरा–रोग्य–पुत्र–पौत्र–धन–धान्य तेजो–लक्ष्म्यादि सकल–
साम्राज्या–भिवृद्ध्यर्त्थं, शरीरे वर्तमान–वर्तिष्यमान समस्त–रोगपीडा
परिहारद्वारे क्षिप्रारोग्य सिद्ध्यर्त्थं, सर्वे ग्रहानुकूल्य सिद्ध्यर्त्थं,
आरोग्य–दृढगात्रता सिद्ध्यर्त्थं, अपमृत्यु दोष परिहारार्त्थं, वार्षिक
जन्मनक्षत्रे तिथिवार नक्षत्रे लग्न–योगकरण–ग्रहास्थित्याभिः संबन्धेन
संसुचित सर्वदोष शान्त्यर्त्थं, सर्वारिष्ट– शान्त्यर्त्थं, चित्तशुद्ध्यर्त्थं,
सर्वाभीष्ट–सिद्ध्यर्त्थं, महार्णव–वायुपुराण–उक्तप्रकारेण आचार्यमुखेन
चमकमन्त्र संयुक्तस्य शतरुद्रियस्य एकोन–सप्तत्यधिक–शतधा
विभाग पञ्चाश्रयेण दशांशहोम विधान पक्षाश्रयणे च संभावित
द्वात्रिंशत् उत्तर शत संख्याक नमक–चमक जप तन्मन्त्र जप दशांश
परिमित द्विचत्वारिंशत् उत्तर–द्विसहस्र संख्याक नमकमन्त्र
चमकमन्त्रा–हुत्यात्मकं अन्ते वसोर्धारया सहितं कर्मानुष्टान योग्यता
संपादक पूतत्वा सिध्दिकर प्राजापत्य कृच्छ्र प्रत्याम्नाय भूत हिरण्यदान
पूर्वकं प्राच्यांग नान्दीश्राद्ध–गोदान–उदिच्च्यांग वैष्णवश्राद्ध कर्म–
साद्गुण्य प्रद दशदान फलतांबूल सहितं रुद्रैकादशिनि कर्मकर्तुं
योग्यता–सिद्धिरस्तु इति अनुग्रहाणा ।

(योग्यता सिद्धिरस्तु – इति परिषत् ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.4.4 सङ्कल्पं (4)

This very Elaborate and detailed Sankalpam can be used for Rudra Ekadasani and also for Maharudram, where appropriate changes need to be made for various Sankhya(counts) of Japam/Homam.)

आचमनं , शुक्लांबरधरं, प्राणायामं –ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं , शुभे शोभने मुहूर्त्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्त्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि– षष्ठ्याः –संवथ्सराणां मध्ये .... नामसंवथ्सरे ....अयने ....ऋतौ .... मासे ....पक्षे .... शुभतिथौ .... वासरयुक्तायां .... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यां ....शुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं ।

अनादि अविद्यावासनया प्रवर्त्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु अनेकासु पशुपक्षी मृगादि योनिषु पुनः पुनः अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्म विशेषेण

इदानींतन मानुष्ये द्विजन्म विशेषं प्राप्तवतः ....नक्षत्रे
.... राशौ जातस्य ....शर्मणः मम .... नक्षत्रे
...............राशौ ....जातयाः ....मम धर्मपत्न्याश्च
आवयोः सकुटुंबयोः, सपुत्रकयोः सबन्धुवर्गयोः साश्रित-जनयोश्च,
जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षण पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे
यौव्वने वार्धके च, जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु मनोवाक्काय
कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय व्यापारैः, कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमाथ्सर्यैः,
त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा-घ्राणा वाक्पाणि पादपायु उपस्थाख्यैः दशभिः
इन्द्रियैः, मनोबुधि-चित्त-अहङ्काराख्यैः अन्तरिन्द्रियैश्च कृतानां,
इहजन्मनि जन्म-जन्मान्तरेषु वा ज्ञानतः अज्ञानतो वा, रहसि प्रकाशेषु
वा संभावितानां, ब्रह्महनन सुरापान स्वर्णस्तेय गुरुतल्पगमन
तथ्संखयोगाख्य पञ्चमहापातकानां, महापातक संबन्धित्व ज्ञापयितृत्व
प्रयोजकत्व निमित्तत्व उपदेष्ट्रत्व प्रोथ्साकत्व अनुमन्त्रत्वादीनां
महापातक व्रतातिदेशिक रूपाणां, अविज्ञात गर्भहनन कूट साक्षिपाद
निन्दित-कर्माभ्यास दैवब्राह्मण धन अपहरणादीनां अतिपातकानां,
सोम-यागस्थ क्षत्रिय वैश्य वध सभामद्ध्यगत ब्राह्मण अपमानन,
सदापै शून्यभाषण आदीनां ब्रह्महत्या समानानां वेदविस्मृति वेदनिन्द
समुत्कर्षार्त्थं अनृतवचन कळंजभक्षण अभक्ष्य-भक्षणादीनां सुरापान

समानानां, निक्षेपहरण गोभूमिहरण, सुहृधन–हरणादीनां स्वर्णस्तेय समानानां, सती सखिपत्नी ज्येष्ठपत्नी गुरुपत्नी मातुलानी अन्त्यजा गमनादीनां गुरुतल्पग समानानां पतित, सहवास सहभोजन अन्त्यजा वाटिका निषेपण आदीनां, तथ्संयोगाख्य समानानां, गोवध आत्मार्त्थ क्रियारंभ मातृपितृ गुरुत्याग, परदार अभिमर्शन, भैषज्यकरण, अपण्यविक्रय, ऋण अनपाकरण, नित्यकर्मलोप, दुर्द्दान प्रतिग्रह आदीनां उपपातकानं, अजावि गजोष्ट्र मृगेभ मीनाहि महिषीवध साळग्राम शिवलिंग विक्रय दूर्द्देशगमन क्रीटान्नभोजन आदीनां, संकरीकरणानां फलकुसुमस्तेय मखानुगत–भोजन, धान्यहरण, वस्त्रा–पहरणादीनां, मलिनीकरणानां, कुसीद जीवन, वाणीज्य करण, असत्य भाषण, अस्नान–भोजन आदीनां, अपात्रीकरणानां, शूद्रान्न–भोजन, मध्याघ्राण पतित सहवास आदीनां, जातिभ्रंश–करणानां सीमाऽतिक्रम, शपथोल्लंगन, उच्छिष्ट–भक्षण, अविहितकर्म आचरण विहितकर्म–त्यागादीनां प्रकीर्णकानां, ज्ञानतः सकृत्कृतानां अज्ञानतः असत्कृतानां ज्ञानतः अज्ञानतश्च अभ्यस्तानां निरन्तर अभ्यस्तानां चिरकाल अभ्यस्तानां निरन्तर चिरकाल–अभ्यस्तानां एवं नवानां नवविधानां बहूनां बहुविधानां सर्वेषु पापानां मद्ध्ये संभावितानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्त्थं, आदित्यात्मकरुद्र प्रसाद सिद्ध्यर्त्थं, महादेवादि

एकादश अभिन्नरूप आदित्यात्मकरुद्र प्रसादेन अस्माकं सर्वेषां आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैवीक नवनवजनित तापत्रय निवृत्त्यर्थं, ...(यथोचितं सङ्कल्पं) एभिः ब्राह्मणैस्सह महार्णवोक्त प्रकारेण आचार्य मुखेन ऋत्विङ्मुखेन च ऋग्यजु–स्साम–अथर्वणाख्येषु चतुर्षु वेदेषु मद्ध्ये एकाधिक शतसंख्याक यजुश्शाखासु आदिभूत संहिताशाखा अन्तर्भूत अग्निकाण्ड अन्तः पातिनां सर्वेषु वेदेषु सर्वासु उपनिषथ्सु स्मृतीतिहास–पुराणादिषु सर्वपाप निवर्त्तकत्वेन, दिव्यज्ञान प्रदत्वेन, मोक्ष प्रदत्वेन, च तत्रतत्र उद्घुष्टानां चरमायां इष्टकायां जुहोति इति चरमेष्टका उपयुक्तानां, "शतरुद्रान् जपेद्यस्तु द्यायमानो महेश्वरं" इति शैव पुराण वचनेन, "यः शतरुद्रीयं अधीते , स अग्निपूतो " इति कैवल्योपनिषद् वचनेन, "अथ हैनं ब्रह्मचारिणः ऊचुः । किं जप्येन अमृतत्वं नो भवति ।
सहो वाच याज्ञवल्क्यः शतरुद्रियेणेति ।
एतानि ह वा अमृतस्य नामधेयानि । एतैर्ह वा अमृतो भवति" ।
इति जाबालोपनिषत् वचनेन,
"रुद्राणां जपहोम अर्च्चना अभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः" इत्यादि श्रुतिस्मृति पुराणवचनैः पूजाजप होमादि कर्मसु उपयुक्तानां एकादश अनुवाक आत्मकानां तत्र "नमस्ते रुद्रमन्यवे इति" प्रथमानुवाके

दुष्टसंहारार्त्थं सङ्क्रुद्ध रुद्रकोप आयुधादिभ्यः अभयप्रार्त्थना
प्रकाशकानां पञ्चदश–संख्याकानां षोडशोपचार उपयुक्तानां,
"नमो हिरण्यबाहवे इत्यादि" अष्टानुवाकेषु वैश्वरूप्यध्यान एकतो–
नमस्कार उभयतो–नमस्कार रूपाणां एकोन्नत्रिंशत् उत्तरशत
संख्यकानां त्रिशत्यर्च्चना उपयुक्तानां,
"द्रापे अन्धसस्पते" इति दशमानुवाके जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति
अवस्तासु जलवात विषभूत शत्रुमृत्यु ज्वरादि स्फोटकादि नानारोगेभ्यः
नानाऽभिचारेभ्यः अभयप्रार्त्थना प्रकाशकानां द्वादश संख्याकानां,
प्रदक्षिण उपयुक्तानां "सहस्राणि सहस्रशः" इति एकदशानुवाके
सर्व्वव्यापक रुद्र विभूति प्रकाशकानां साऽनुषंगाणां त्रयोदश
संख्याकानां नमस्कार उपयुक्तानां, अभीप्सितार्त्थं याचानासूचक
चमकानुवाक संय्युक्तानां, मूर्त्यष्टक मूर्त्तपञ्चक मूर्त्तित्रय अधिष्ठान
पञ्चकृत्य विधान पठीयस्य, शिवया शूलिन्या अधोराख्याया तनुवा
सर्वो–पादानतया सर्वात्मकतया सर्व्ववेद–बोधित सर्व्वात्मक शर्व्वरीश
शकलधर परमशिवाख्य सदाशिव–ब्रह्ममञ्च पर्यं कायमाण
पञ्चाक्षराख्य महामन्त्ररत्न मुख्यकोशानां शतरुद्रीयाणां त्रेधाविभागद्वय
षोढा विभाग षोडशधाविभाग अष्टाचत्वारिंशधा विभाग एकोनसप्तति
अधिक शतधा विभागानां, षण्णां विभागानां मध्ये, एकोन्न सप्तति

अधिक शतधा विभागपक्षं आश्रित्य शतांश दशांश संपूर्ण्ण–होमानां मध्ये दशांश होमविधानेन द्वात्रिंशदुत्तरशत संख्याक नमक चमक जपात्मक तद् दशांश परिमित द्विचत्वारिंशत् उत्तर द्विसहस्र संख्याक नमक चमक आहुत्यात्मकं अन्ते वसोर्धारा सहितं प्राच्यांग उदीच्यांग गोदान नान्दीश्राद्ध वैष्णवश्राद्ध दशदान सहितं कर्मानुष्ठान योग्यता संपातक पूतत्व सिद्धिकर प्राजापत्य कृछ्र प्रत्याम्नाय भूत हिरण्यदान पूर्वकं सकल पापनिवर्त्तकं सर्वाभीष्ट प्रदायकं रुद्रैकादशिन्याख्य(महारुद्र*) महाप्रायश्चित्त कर्मकर्त्तु योग्यतासिद्धिः अस्त्विति अनुग्रहाणा ॥

(योग्यता सिद्धिरस्तु – इति परिषत् ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.4.5 विघ्नेश्वर उद्वापनं

ओं गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे कवीं कवीना–मुपमश्रवस्तमं ।

जेष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनं ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मात् हरिद्रबिंबात् विघ्नेश्वरं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि । (शोभनार्त्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च) ।

3.5 पुण्याहवाचनं

3.5.1 सङ्कल्पं

आचमनं–पवित्रं–दर्भासनं–दर्भान् धारयामाणं – शुक्लांबरधरं – प्राणायामं । ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं, शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्त्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि– षष्ठ्याः –संवथ्सराणां मध्ये .... नामसंवथ्सरे ....अयने .... ऋतौ .... मासे ....पक्षे .... शुभतिथौ .... वासरयुक्तायां .... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यां ....शुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं (यजमानस्य) आत्मशुद्ध्यर्थं, शरीरशुद्ध्यर्थं, सर्वोपकरण शुद्ध्यर्थं, शुद्ध्यर्थ–शुद्धि पुण्याहवाचनं करिष्ये (द्विः)

(इति सङ्कल्प्य दर्भान् निरस्य, अप उपस्पृश्य)

3.5.2 कुंभ प्रतिष्ठा मन्त्राः

उदुत्तमं वरुण पाश मस्मदवाधमं विमध्यम श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥ 1

अस्तभ् नाद्ध्या मृषभो अन्तरिक्ष–मिमीत वरिमाणं पृथिव्या
आऽसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राड् विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि ॥ 2

यत्किञ्चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि ।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मा देनसो देव रीरिषः ॥ 3

कितवासो यद्रि रिपुर्न दीवि यद्वाघा सत्य–मुतयन्न विद्म ।
सर्वा ता विष्य शिथिरेव देवाथा ते स्याम वरुण प्रियासः ॥ 4

अव ते हेडो वरुण नमोभिरव यज्ञे–भिरीमहे हविर्भिः ।
क्षयन्नस्मभ्य मसुर–प्रचेतो राजन्नेनाꣳसि शिश्रथः कृतानि ॥ 5

तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान स्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳ स मा न आयुः प्रमोषीः ॥ 6

or

इमं मे वरुण श्रुधि हवमध्या च मृडय । त्वामवस्यु राचके ।

तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश॰ स मा न आयुः प्रमोषीः ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे वरुणं ध्यायामि ।

वरुणं आवाहयामि । वरुणाय नमः । रत्न सिंहासनं समर्पयामि ।

पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि । स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि । उपवीतं समर्पयामि ।

पुष्पाणि समर्पयामि । गन्धान् धारयामि । हरिद्रा–कुंकुमं समर्पयामि ।

अक्षतान् समर्पयामि । पुष्पैः पूजयामि ।

1. ओं वरुणाय नमः
2. ओं प्रचेतसे नमः
3. ओं सुरूपिणे नमः
4. ओं अपांपतये नमः
5. ओं मकरवाहनाय नमः
6. जलाधिपतये नमः
7. ओं पाशहस्ताय नमः
8. ओं तीर्थराजाय नमः ।

ओं वरुणाय नमः ।

नानाविध परिमळ पत्र पुष्पाणि समर्पयामि । धूपं आघ्रापयामि ।

दीपं दर्शयामि । धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो योन प्रचोदयात् । देव सवितः प्रसुवः ।

सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।

(रात्रौ – ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि) ।

ओं वरुणाय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहा । ओं अपानाय स्वाहा ।

ओं व्यानाय स्वाहा । ओं उदानाय स्वाहा ।

ओं समानाय स्वाहा । ओं ब्रह्मणे स्वाहा ।

कदळीफलं निवेदयामि ।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । तांबूलं समर्पयामि ।

कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि । नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मन्त्र पुष्पं समर्पयामि । सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि ।

समस्तोपचरान् समर्पयामि ॥

ब्राह्मण वचनं	ब्राह्मण प्रतिवचनं
भवद्भि अनुज्ञातः पुण्याहं वाचयिष्ये	वाच्यतां

कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु	पुण्याहं कर्मणोऽस्तु पुण्यं भवतु
कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु	स्वस्ति कर्मणोऽस्तु
सर्वोपकरण शुद्धिकर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु	सर्वोपकरण शुद्धिकर्मणे स्वस्ति
कर्मण ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु	कर्म ऋद्ध्यतां
ऋद्धि समृद्धिः	पुण्याह समृद्धिः
शिवं कर्म	अस्तु

शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु

तुष्टिरस्तु ऋद्धिरस्तु

अविघ्नं अस्तु आयुष्यं अस्तु

आरोग्यं अस्तु धनधान्य–समृद्धिरस्तु

गोब्राह्मणेभ्यः शुभं भवतु ।

(ऐशान्यां दिशि बहिर्देशे) अरिष्टनिरसनमस्तु ।

उत्तरे कर्मणि अविघ्नमस्तु ।

उत्तरोत्तराभिवृद्धिः अस्तु ।

सर्वेशोभनमस्तु सर्वाः संपदः सन्तु ।

3.5.3 वेदारंभे जप्याः मन्त्राः

हरिः ओं , श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं ।

ओं भूः । तथ्सवितुर्वरेण्यं । ओं भुवः । भर्गो देवस्य धीमहि ।

ओ७ं सुवः । धियो योनः प्रचोदयात् ।

ओं भूः । तथ्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

ओं भुवः । धियो योनः प्रचोदयात् ।

ओ७ं सुवः–तथ्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु७ंषि तारिषत् । आपोहिष्ठा मयोभुव–स्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे । यो व श्शिवतमो रस–स्तस्य भाजयते ह नः । उशतीरिव मातरः । तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ।

आपो वा इद७ं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव आपोऽन्नमापो–ऽमृतमाप–स्सम्राडापो विराडाप–स्स्वराडाप–श्छन्दा७स्यापो ज्योती७ष्यापो यजू७ष्याप–स्सत्यमाप–स्सर्वा देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं ।

3.6 पवमान सूक्तं

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः ।
अग्निं ँया गर्भं दधिरे विरूपास्तान आपश्शꣳ स्योना भवन्तु ॥

यासाꣳ राजा वरुणो याति मद्ध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानां ।
मधुश्चुत-श्शुचयो याः पावकास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु ॥

यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं ँया अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।
याः पृथिवीं पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु ॥

शिवेन मा चक्षुषा पश्यताप श्शिवया तनुवो-पस्पृशत त्वचं मे ।
सर्वाꣳ अग्नीꣳ रफ्सुषदो हुवे वो मयि वर्चो बलमोजो निधत्त ॥

पवमान-स्सुवर्जनः । पवित्रेण विचर्.षणिः ।
यः पोता स पुनातु मा । पुनन्तु मा देवजनाः ।
पुनन्तु मनवो धिया । पुनन्तु विश्व आयवः ।
जातवेदः पवित्रवत् । पवित्रेण पुनाहि मा ।
शुक्रेण देव दीद्यत् । अग्ने क्रत्वा-क्रतूꣳ रनु ॥ 1

यत्ते पवित्र–मर्चिषि । अग्ने वितत–मन्तरा ।
ब्रह्म तेन पुनीमहे । उभाभ्यां देव सवितः ।
पवित्रेण सवेन च । इदं ब्रह्म पुनीमहे ।
वैश्वदेवी पुनती देव्यागात् । यस्यै बह्वी–स्तनुवो वीतपृष्ठाः ।
तया मदन्त–स्सधमाद्येषु । वय७ स्याम पतयो रयीणां । 2

वैश्वानरो रश्मिभिर्मा पुनातु । वातः प्राणेनेषिरो मयो भूः ।
द्यावापृथिवी पयसा पयोभिः । ऋतावरी यज्ञिये मा पुनीतां ।
बृहद्भि–स्सवितस्तृभिः । वर्.षिष्ठै र्देवमन्मभिः ।
अग्ने दक्षैः पुनाहि मा । येन देवा अपुनत । येनापो दिव्यंकशः ।
तेन दिव्येन ब्रह्मणा । 3

इदं ब्रह्म पुनीमहे । यः पावमानी–रद्ध्येति ।
ऋषिभि–स्संभृत७ रसं । सर्व७ स पूतमश्नाति ।
स्वदितं मातरिश्वना । पावमानीर्यो अद्ध्येति ।
ऋषिभि–स्संभृत७ रसं । तस्मै सरस्वती दुहे ।
क्षीर७ सर्पि र्मधूदकं । पावमानी स्स्वस्त्ययनीः ॥ 4

सुदुघा हि पयस्वतीः । ऋषिभि-स्संभृतो रसः ।
ब्राह्मणेष्व-मृतꣳ हितं । पावमानी र्दिशन्तु नः ।
इमँ लोकमथो अमुं । कामान्थ् समर्द्धयन्तु नः ।
देवी र्देवैः समाभृताः । पावमानी-स्स्वस्त्ययनीः ।
सुदुघा हि घृतश्चुतः । ऋषिभि-स्संभृतो रसः ॥ 5

ब्राह्मणेष्व-मृतꣳ हितं । येन देवाः पवित्रेण ।
आत्मानं पुनते सदा । तेन सहस्र धारेण ।
पावमान्यः पुनन्तु मा । प्राजापत्यं पवित्रं ।
शतोद्यामꣳ हिरण्मयं । तेन ब्रह्म विदो वयं ।
पूतं ब्रह्म पुनीमहे । इन्द्र-स्सुनीती सहमा पुनातु । 6

सोम-स्स्वस्त्या वरुण-स्समीच्या । यमो राजा प्रमृणाभिः
पुनातु मा । जातवेदा मोर्जयन्त्या पुनातु । भूर्भुवस्सुवः ॥

तच्छँयोरा वृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये ।
दैवी स्वस्तिरस्तु नः । स्वस्ति र्मानुषेभ्यः ।
ऊर्द्ध्वं जिगातु भेषजं । शन्नो अस्तु द्विपदे । शं चतुष्पदे ॥

3.6.1 वास्तु मन्त्रः

वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्थ् स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।
यत्त्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्न एधि द्विपदे शं चतुष्पदे ।

वास्तोष्पते शग्मया सꣳ सदा ते सक्षीमहि रण्वया गातु मत्या ।
आ वः क्षेम उत योगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभि–स्सदानः ।

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गोभिरश्वे–भिरिन्दो ।
अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व ।

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्या विशन् ।
सखा सुशेव एधिनः । शिवꣳ शिवं ।
भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः ॥

3.6.2 वरुण उद्वापनं

ओं नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः ।
नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि । (त्रिवारं जपेत्)
वरुणाय नमः सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश॒ँ स मा न आयुः प्रमोषीः ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मात् कुंभात् आवाहितं सकल-तीर्थाधिपतिं वरुणं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि । शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च ।

3.6.3 प्रोक्षण मन्त्राः

देवस्यत्वा सवितुः प्रसवे । अश्विनो र्बाहुभ्यां । पूष्णो हस्ताभ्यां ।
अश्विनो र्भैषज्येन । तेजसेऽ ब्रह्मवर्चसाया भिषिञ्चामि ॥

देवस्यत्वा सवितुः प्रसवे । अश्विनो र्बाहुभ्यां ।
पूष्णो हस्ताभ्यां । सरस्वत्यै भैषज्येन ।
वीर्याया-न्नाद्याया भिषिञ्चामि ॥

देवस्यत्वा सवितुः प्रसवे । अश्विनो र्बाहुभ्यां । पूष्णो हस्ताभ्यां ।
इन्द्रस्ये-न्द्रियेण । श्रियै यशसे बलाया भिषिञ्चामि ।
सोम॒ँ राजानं वरुण-मग्नि मन्वारभामहे ।
आदित्यान् विष्णु॒ँ सूर्यं ब्रह्माणञ्च बृहस्पतिं ॥

देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो बाहुभ्यां पूष्णो

हस्ताभ्या॒ सरस्वत्यै वाचोयन्तु र्यन्त्रेणा-ग्नेस्त्वा

साम्राज्येना भिषिञ्चामीन्द्रस्यत्वा साम्राज्येना भिषिञ्चामि

बृहस्पतेस्त्वा साम्राज्येना भिषिञ्चामि ॥

आयुराशास्ते । सुप्रजास्त्वमा-शास्ते ।

सजातवनस्यामा-शास्ते । उत्तरान्देव-यज्यामा-शास्ते ।

भूयो हविष्करणमा-शास्ते । दिव्यन्धामा-शास्ते ।

विश्वं प्रियमा-शास्ते । यदनेन हविषा-शास्ते ॥

Optional

तदश्या-त्तद्दध्यात् । तदस्मै देवारासन्तां ।

तदग्नि र्देवो देवेभ्यो वनते । वयमग्ने र्मानुषाः ।

इष्टं च वीतं च । उभेचनो द्यावा पृथिवी अ॒ हसस्पातां ।

इह गति र्वामस्येदं च । नमो देवेभ्यः ॥

द्रुपदादिवेन् मुमुचानः । स्विन्नः-स्नात्वी मलादिव ।

पूतं पवित्रेणे वाज्यं । आपः शुन्धन्तु मैनसः ।

भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः ॥

<u>प्राशन मन्त्रः</u>

आप इद्वा उभेषजीः । आपो अमीव चातनीः ।

आपस्सर्वस्य भेषजी । तास्ते कृण्वन्तु भेषजं ॥

अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधि निवारणं ।

सर्व(समस्त) पापक्षयहरं (देवता नाम) वरुण पातोदकं शुभं ।

<u>स्त्रीणां प्राशने</u>

आमयावी चिन्वीत । आपो वै भेषजं ।

भेषजमेवास्मै करोति । सर्वमायुरेति ॥

3.6.4 ग्रह प्रीति

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं

ग्रहप्रीतिकर हिरण्यदानं करिष्ये ।

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।

अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।

मया सङ्कल्पित श्रीरुद्र एकादशिन्याख्य (महारुद्राख्य*) महाप्रायश्चित्त रूप शिवाराधन कर्म आरंभ मुहूर्त्त लग्नापेक्षया, आदित्यानां नवानां ग्रहाणां आनुकुल्य सिद्धत्र्थं, ये ये ग्रहाः शुभ स्थानेषु स्थिताः ये ये ग्रहाः शुभ इतर स्थानेषु स्थिताश्च, तेषां तेषां ग्रहाणां अत्यन्त

अतिशयित शुभफल–प्रसातृत्व सिद्ध्यर्थं आदित्यादि नवग्रह पसाद सिद्धर्थं, यत् किञ्चित् हिरण्यं ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.5 पूर्वांग नान्दी श्रार्द्धं

सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणः

पुर्वांगत्वेन विहित नान्दी श्राद्धे ये विहिताः तेषामिदमासनं ।

(इति सर्वेषां आसनाद्युपचारं कुर्यात्)

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः । अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे । सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणः पुर्वांगत्वेन विहित नान्दी श्राद्धे ये विहिताः

तेषां प्रीयर्थं इदं हिरण्यं ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥

ओं तत् सत् । नान्दीशोभन देवताः प्रीयन्तां ।

3.6.6 वैष्णव श्राद्धं

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः । अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे । सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणः पुर्वांगत्वेन विहित वैष्णव श्राद्धे महाविष्णु प्रीयर्थं इदं हिरण्यं ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.7 गोदानं

परमेश्वर स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनं । सकलाराधनैः स्वर्च्चितं ।
हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।
गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।
तस्मास्वस्याः प्रदानेन अतः शान्तिं प्रयश्च मे ॥
सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणः
पुर्वांगत्वेन विहित गोप्रतिनिधि हिरण्यं (गोमूल्यं) सदक्षिणाकं
तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ओं तत् सत् । परमेश्वर प्रीयतां ॥

3.6.8 दश दानं

परमेश्वर स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनं । सकलाराधनैः स्वर्च्चितं ।
हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।
गो, भू, तिल, हिरण्य, आज्य, वासः, धान्यः, गुळः, रौप्य लवणाख्य
दशद्रव्यानां प्रतिनिधि यत् किञ्चित इदं हिरण्यं सदक्षिणाकं
तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.9 कृच्छ्राचरणं

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।

श्री रुद्रैकादशिन्याख्य (महारुद्राख्य*) महाप्रायश्चित्त शिवाराधन योग्यता सिद्ध्यर्थं पूतत्व सिद्ध्यर्थं कृच्छ्राचरण प्रतिनिधि यत् किञ्चित इदं हिरण्यं सदक्षिणाकं ब्राह्मणेभ्यः तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.10 ऋत्विक् वरणं

अस्मिन् रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणि महादेव (कलश) पूजा रुद्र जप होमार्त्थं ऋत्विजं वृणे । (एवं भवोद्भव पर्यन्तं वृत्वा)

3.6.11 आचार्य वरणं

अस्मिन् रुद्रैकादशिनी(महारुद्र*) कर्मणि आदित्यामक रुद्र कलश पूजा रुद्र जप होमार्त्थं सकल कर्म कर्त्तुं आचार्यं त्वां वृणे ।

3.6.12 ऋत्विक् वरणं (Rutvik performing Abishekam)

अस्मिन् रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्मणि महान्यास पूर्व रुद्रजप एकादशवार रुद्रजप अभिषेकार्त्थं ऋत्विजं त्वां वृणे ।

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्म अन्योन्य सहायेन कुरुध्वं । (वयं कुर्मः –इति ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.6.13 आचार्यस्य ऋत्विजां च संकल्पः

आचमनं–पवित्रं–दर्भासनं दर्भान् धारयमाणं– शुक्लांबरधरं प्राणायामं ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं, शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्त्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि– षष्ठ्याः –संवथ्सराणां मध्ये .... नामसंवथ्सरे, ...अयने .... ऋतौ .... मासे ....पक्षे .... शुभतिथौ .... वासरयुक्तायां .... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यां ....शुभतिथौ .... नक्षत्रे................राशौ जातस्य ....शर्मणः अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य महादेवादीनां रुद्राणां प्रसादसिद्ध्यर्थं सर्वारिष्ट शान्त्यर्थं सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं यजमान संकल्पित रुद्रैकादशिनी (महारुद्र*) कर्म अन्योन्य सहायेन वयं करिष्यामः । "महादेव पूजां करिष्यामि, शिव रुद्र इत्यादि तत् तत् देवता पूजां करिष्यामि" ॥ (इति संकल्प्य कलशादि पूजां कुर्युः)

3.6.14 कलशादिपूजा

कलशाय नमः । दिव्यगन्धान् धारयामि ।

गंगायै नमः । यमुनायै नमः । गोदावर्यै नमः । सरस्वत्यै नमः ।

नर्मदायै नमः । सिन्धवे नमः । कावेर्यै नमः ।

सप्तकोटि महातीर्थान् आवाहयामि ।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव आपोऽन्नमापोऽमृतमाप-स्सम्राडापो विराडाप-स्स्वराडाप-श्छन्दाᳬस्यापो ज्योतीष्यापो यजूᳬष्याप-स्सत्यमाप-स्सर्वा देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं ।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मद्ध्ये मातृगणाः स्मृताः ।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोप्यऽथर्वणः ।

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशांबु समाश्रिताः ।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति

नर्मदा सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः ।

आयान्तु शिवपूजार्त्थं दुरितक्षय–कारकाः ।

ओं भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः ॥

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि, आत्मानं च प्रोक्ष्य ।)

3.6.15 शंखपूजा

(कलशजलेन शंखं प्रक्षाळ्य, पुनः कलशजलेन शंखं गायत्र्या प्रपूर्यः)

पाञ्चजन्याय नमः । दिव्यगन्धान् धारयामि ।

(शंखमूले) ब्रह्मणे नमः । (शंखमध्ये) जनार्द्दनाय नमः ।

(शंखाग्रे) चन्द्रशेखराय नमः ।

(इति अभ्यर्च्य । शंखं स्पृष्ट्वा जपेत् ।)

शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं मध्ये वरुणसंयुतं ।

पृष्ठे प्रजापतिश्चैव अग्रे गंगा सरस्वती ॥

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया

शंखे तिष्ठति विप्रेन्द्राः तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ।

त्वं पुरासागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे

पूजितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तुते ।

गर्भा देवारिनारीणां विशीर्यन्ते सहस्रधा

तव नादेन पाताळे पाञ्चजन्य नमोऽस्तुते ।

ओं पाञ्चजन्याय विद्महे पवमानाय धीमहि ।

तन्नः शंखः प्रचोदयात् ॥ (इति त्रिवारं जपित्वा)

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेत सोयं पाञ्चजन्यं बहव-स्समिन्धते ।

विश्वस्यां विशि प्रविविशिवाꣳ समीमहे स नो मुञ्चत्वꣳ हसः ।

(इति शंखजलं कलशजले किञ्चित् आसिच्य, शिष्टजलेन

ओं भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः इति सर्वोपकरणानि

प्रोक्ष्य, आत्मानं च प्रोक्ष्य, कलशोदकेन पुनश्च शंखं गायत्र्या

पूरयित्वा)

3.6.16 आत्मपूजा

आत्मने नमः । दिव्यगन्धान् धारयामि । आत्मने नमः ।

अन्तरात्मने नमः । योगात्मने नमः । जीवात्मने नमः ।

परमात्मने नमः । ज्ञानात्मने नमः । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

देहो जीवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः ।

त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ।

3.6.17 पीठपूजा

आधारशक्त्यै नमः मूलप्रकृत्यै नमः

आदिकूर्माय नमः आदिवराहाय नमः

अनन्ताय नमः पृथिव्यै नमः

रत्नमण्डपाय नमः रत्नवेदिकायै नमः

स्वर्णस्तंभायै नमः श्वेतछत्राय नमः .

कल्पकवृक्षाय नमः क्षीरसमुद्राय नमः

सितचामराभ्यां नमः योगपीठासनाय नमः

3.6.18 नन्दिकेश्वर अनुज्ञा

वेदान्त–वेद्याखिल विश्वमूर्ते विभो विरूपाक्ष विशेषशून्य ।

विश्वेश्वराशेष–गणेशवन्द्य कवाट–मुद्धाटय कालाकाल

नन्दिकेश्वराय नमः ।

नन्दिकेश्वर सर्वज्ञ शिवध्यान परायण

महेश्वरस्य पूजार्त्थं अनुज्ञां दातुमर्हसि ।

3.7 पञ्चकलश स्थापनं

3.7.1 पश्चिमं

सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः । भवे भवे नातिभवे भवस्व मां । भवोद्भवाय नमः ॥ ओं भूर्भुवस्सुवरों ।

अस्मिन् पश्चिमकलशे सद्योजातं ध्यायामि । आवाहयामि ।

3.7.2 उत्तरं

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः । ओं भूर्भुवस्सुवरों ।

अस्मिन् उत्तरकलशे वामदेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

3.7.3 दक्षिणं

अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ओं भूर्भुवस्सुवरों ।

अस्मिन् दक्षिणकलशे अघोरं ध्यायामि । आवाहयामि ।

3.7.4 पूर्वं

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् पूर्वकलशे तत्पुरुषं ध्यायामि ।

आवाहयामि ।

3.7.5 मध्यमं

ईशानः सर्वविद्याना–मीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोऽधिपति

ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥ ओं भूर्भुवस्सुवरों ।

अस्मिन् मध्यम कलशे ईशानं ध्यायामि । आवाहयामि ।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत् पूजावसानकं तावत् त्वं प्रीतिभावेन

कुंभेऽस्मिन् संन्निधिं कुरु ।

आवाहितो भव । स्थापितो भव । सन्निहितो भव । सन्निरुधो भव ।

अवकुण्ठितो भव । सुप्रीतो भव । सुप्रसन्नो भव । वरदो भव ।

स्वागतं अस्तु । प्रसीद प्रसीद ।

3.7.6 उपचारपूजा

सद्यो जाताय वै नमो नमः – रत्नसिंहासनं समर्पयामि ।

भवे भवे नातिभवे भवस्व मां – पाद्यं समर्पयामि ।

भवोद्भवाय नमः – अर्घ्यं समर्पयामि ।

वामदेवाय नमः – आचमनीयं समर्पयामि ।

ज्येष्ठाय नमः – मधुपर्कं समर्पयामि ।

श्रेष्ठाय नमः – स्नानं समर्पयामि ।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

रुद्राय नमः – वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि ।

कालाय नमः – यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि ।

कलविकरणाय नमः – गन्धाक्षतान् समर्पयामि ।

बलविकरणाय नमः – पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय नमः – धूपं आघ्रापयामि ।

बलप्रमथनाय नमः – दीपं दर्शयामि ।

सर्वभूतदमनाय नमः – नैवेद्यं निवेदयामि ।

मनोन्मनाय नमः – तांबूलं समर्पयामि ।

सपरिवार श्री सांबपरमेश्वराय नमः ।

सर्वोपचारार्त्थे कर्पूरनीराजनं प्रदर्शयामि ।

अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।

सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

ईशानः सर्वविद्याना–मीश्वरसर्व भूतानां ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणो ऽधिपति र्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥

(नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये ऽंबिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥)

==

4. महान्यासः

4.1 कलश प्रतिष्ठापन मन्त्राः

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमत-स्सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्निया उपमा अस्य विष्ठा-स्सतश्च योनि-मसतश्च विवः ।

नाके सुपर्ण मुपयत् पतन्तꣳ हृदा वेनन्तो अभ्यचक्ष-तत्वा ।
हिरण्यपक्षं ँवरुणस्य दूतं ँयमस्य योनौ शकुनं भुरण्युं ।

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णियं । भवा वाजस्य संगथे ।
यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा
भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु । 1 (अप उपस्पृश्य)

इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं । समूढमस्य पाꣳ सुरे ।

इन्द्रं ँविश्वा अवीवृधन्थ् समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमꣳ रथीनां वाजानाꣳ सत्पतिं पतिं ।

आपो वा इदं॑ सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमाप-स्सम्राडापो विराडाप-स्स्वराडाप-
श्छन्दा॑स्यापो ज्योती॑ष्यापो यजू॑ष्याप-स्सत्यमाप-स्सर्वा
देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं । 2

अपः प्रणयति । श्रद्धा वा आपः । श्रद्धामेवारभ्य प्रणीय प्रचरति ।
अपः प्रणयति ।
यज्ञो वा आपः । यज्ञमेवारभ्य प्रणीय प्रचरति । अपः प्रणयति ।
वज्रो वा आपः । वज्रमेव भ्रातृव्येभ्यः प्रहृत्य प्रणीय प्रचरति ।
अपः प्रणयति ।
आपो वै रक्षोघ्नीः । रक्षसामपहत्यै । अपः प्रणयति ।
आपो वै देवानां प्रियं धाम । देवानामेव प्रियं धाम प्रणीय प्रचरति ।
अपः प्रणयति ।
आपो वै सर्वा देवताः । देवता एवारभ्य प्रणीय प्रचरति ।
अपः प्रणयति ।
आपो वै शान्ताः । शान्ताभिरेवास्य शुच॑ं शमयति । देवो वः
सवितोत् पुनात्व-च्छिद्रेण पवित्रेण वसोस्सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ 3

कूर्चाग्रै र्रक्षसान् घोरान् छिन्धि कर्मविघातिनः ।

त्वामर्पयामि कुंभेऽस्मिन् साफल्यं कुरु कर्मणि ।

वृक्षराज समुद्भूताः शाखायाः पल्लवत्व चः ।

युष्मान् कुंभेष्वर्पयामि सर्वपापापनुत्तये ।

नाळिकेर-समुद्भूत त्रिनेत्र हर सम्मित ।

शिखया दुरितं सर्वं पापं पीडां च मे नुद ।

स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः ।

तं भागं चित्रमीमहे । (ऋग्वेद मन्त्रः)

तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमान-स्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश७्स मा न आयुः प्रमोषीः ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे वरुणमावाहयामि ।

वरुणस्य इदमासनं । वरुणाय नमः । सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

रत्नसिंहासनं समर्पयामि । पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि ।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि । उपवीतं समर्पयामि ।

गन्धान् धारयामि । अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि समर्पयामि ।

1. ओं वरुणाय नमः
2. ओं प्रचेतसे नमः
3. ओं सुरूपिणे नमः
4. ओं अपांपतये नमः
5. ओं मकरवाहनाय नमः
6. जलाधिपतये नमः
7. ओं पाशहस्ताय नमः
8. ओं तीर्थराजाय नमः

ओं वरुणाय नमः । नानाविध परिमळ पत्र पुष्पाणि समर्पयामि ।

धूपं आघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि ।

धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो योन प्रचोदयात् ।

देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।

(रात्रौ – ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि) ।

ओं वरुणाय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहा । ओं अपानाय स्वाहा । ओं व्यानाय स्वाहा ।

ओं उदानाय स्वाहा । ओं समानाय स्वाहा । ओं ब्रह्मणे स्वाहा ।

कदळीफलं निवेदयामि । मध्येमध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि ।

अमृतापिधानमसि । नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

तांबूलं समर्पयामि । कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि ।

नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । मन्त्र पुष्पं समर्पयामि ।

सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि । समस्तोपचरान् समर्पयामि ॥

4.2 महान्यास मन्त्रपाठ प्रारंभः

अथातः पञ्चांगरुद्राणां न्यासपूर्वकं जप-होमा-र्चना-भिषेक-

विधिं व्याख्यास्यामः

Note: The Mahanyasa Rishi here explains to his students the vidhi (method) and vyakyaanam (pooja) while teaching Mahanayasam and hence he uses the words

"विधिं व्याख्यास्यामः".

Here you, as the kartha, are not doing "vidhi" ("vidhi" meaning the trial method as how to conduct the pooja) or "pooja vyakyaanam" (pooja explanation) but actually doing the pooja itself. Hence it would be more appropriate to say

"अथातः पञ्चांगरुद्राणां न्यासपूर्वकं जप-होमा-र्चनाभिषेकं

करिष्यमाणः " ।

----

5. प्रथमः न्यासः

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा–ऽपापकाशिनी । तया न स्तनुवा
शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि । (शिखायै नमः) । 1

अस्मिन् महत्यर्णवे–ऽन्तरिक्षे भवा अधि ।
तेषाꣳ सहस्रयोजने–ऽवधन्वानि तन्मसि । (शिरसे नमः) । 2

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यां ।
तेषाꣳ सहस्र–योजने–ऽवधन्वानि तन्मसि । (ललाटाय नमः) । 3

हꣳस–श्शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर् दुरोणसत् ।
नृषद्वर–सदृत–सद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ।
(भ्रूवोर्मध्याय नमः) । 4

त्र्यंबकं यँजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं । उर्वारुकमिव बन्धनान्
मृत्योर् मुक्षीय माऽमृतात् । (नेत्राभ्यां नमः) । 5

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काव्याय च नीप्याय च ।
(कर्णाभ्यां नमः) । 6

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
वीरान्मानो रुद्र भामितो वधीर्. हविष्मन्तो नमसा विधेम ते ।
(नासिकाभ्यां नमः) । **7**

अवतत्य धनुस्त्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव । (मुखाय नमः) । **8**

नीलग्रीवा श्शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वानि तन्मसि । (कण्ठाय नमः) । **9A**

नीलग्रीवा-श्शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वानि तन्मसि । (उपकण्ठाय नमः) । **9B**

नमस्ते अस्त्वायुधाया-नातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने । (बाहुभ्यां नमः) । **10**

या ते हेतिर् मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयाऽस्मान् विश्वतस्त्व-मयक्ष्मया परिब्भुज । (उपबाहुभ्यां नमः) । **11**

परिणो रुद्रस्य हेतिर् वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्यः तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय ।
(मणिबन्धाभ्यां नमः) । **12**

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽ वधन्वानि तन्मसि । (हस्ताभ्यां नमः) । **13**

सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः । भवे भवे नाति भवे भवस्व मां । भवोद्–भवाय नमः ॥ (अंगुष्ठाभ्यां नमः) । **14A**

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः । (तर्जनीभ्यां नमः) **14B**

अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रूपेभ्यः ॥ (मध्यमाभ्यां नमः) । **14 C**

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ (अनामिकाभ्यां नमः) । **14D**

ईशानः सर्वविद्याना-मीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर् ब्रह्मणोऽ
धिपतिर् ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोंम् ॥ (कनिष्ठिकाभ्यां नमः) 14E

नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳪ हृदयेभ्यः । (हृदयाय नमः) । 15

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः । (पृष्ठाय नमः) । 16

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमः । (पार्श्वाभ्यां नमः) । 17

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाᳪ उत ।
अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निषङ्गथिः । (जठराय नमः) । 18

हिरण्यगर्भ स्समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । सदाधार
पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम । (नाभ्यै नमः) । 19

मीढुष्टम शिवतम शिवो नस्सुमना भव । परमे वृक्ष आयुधं निधाय
कृत्तिं ँवसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि । (कठ्यै नमः) । 20

ये भूताना-मधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः ।
तेषाᳪ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । (गुह्याय नमः) । 21

ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषा७ सहस्रयोजनेऽ वधन्वानि तन्मसि । (अण्डाभ्यां नमः) । 22

स शिरा जातवेदा अक्षरं परमं पदं । वेदाना७ शिरसि माता
आयुष्मन्तं करोतु मां । (अपानाय नमः) । 23

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितं ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः ।
(ऊरुभ्यां नमः) । 24

एष ते रुद्रभाग-स्तञ्जुषस्व तेनावसेन परो मूजवतो-ऽतीह्यवतत-
धन्वा पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः । (जानुभ्यां नमः) 25

स७ सृष्टजित्सोमपा बाहु-शर्ध्यूर्ध्व धन्वा प्रतिहिता-भिरस्ता ।
बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहा-ऽमित्रा७ अपबाधमानः ।
(जंघाभ्यां नमः) 26

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत् ।
सर्वो ह्येष रुद्र-स्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ॥ (गुल्फाभ्यां नमः) 27

ये प॒थां प॑थि॒रक्ष॑य ऐलबृ॒दा य॒व्युध॑ः ।
तेषा॑ँ स॒हस्रयोज॒ने ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । (पादाभ्यां नमः) । 28

अध्य॑वोच-दधिव॒क्ता प्र॑थ॒मो दैव्यो॑ भि॒षक् । अही॑ँश्च॒ सर्वा॑न्
ज॒ंभय॒न् थ्सर्वा॑श्च यातु धा॒न्य॑ः । (कवचाय हुं) । 29

नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च कव॒चिने॑ च॒ नमः श्रु॒ताय॑ च श्रुतसे॒नाय॑ च ।
(उपकवचाय हुं) 30

नमो॑ अस्तु॒ नील॑ग्रीवाय सहस्रा॒क्षाय॑ मी॒ढुषे॑ । अथो॒ ये अ॑स्य॒
सत्वा॑नो॒ऽहं तेभ्यो॑ऽकर॒न्नम॑ः । (नेत्रत्रयाय वौषट्) 31

प्रमु॑ञ्च॒ धन्व॑न॒स्त्व-मु॒भयो॒-रार्त्नि॑यो॒र्ज्याम् ।
याश्च॑ ते॒ हस्त॒ इष॑व॒ः परा॒ ता भग॑वो वप । (अस्त्राय फट्) 32

य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑ँसश्च॒ दिशो॑ रु॒द्रा वि॑तस्थि॒रे ।
तेषा॑ सहस्रयोज॒ने ऽव॒धन्वानि तन्मसि । (इति दिग्बन्धः) 33

------------इति प्रथम न्यासः-------------

(शिखादि अस्त्रपर्यन्तं एकत्रिंशदंगन्यासः दिग्बन्ध सहितः प्रथमः)

6. द्वितीय न्यासः

(ॐ नमो भगवते रुद्रायेति नमस्कारान् न्यसेत्)

ॐ नमः (मूर्ध्नि) । नं नमः (नासिकाग्रे) ।

मों नमः (ललाटाय) । भं नमः (मुखाय) ।

गं नमः (कण्ठाय) । वं नमः (हृदयाय) ।

तें नमः (दक्षिण हस्ताय) । रुं नमः (वाम हस्ताय) ।

द्रां नमः (नाभ्यै) । यं नमः (पादाभ्यां) ॥

-----------इति द्वितीय न्यासः-----------

मूर्धादि पादान्तं दशांग न्यासः द्वितीयः

7. तृतीयन्यासः

सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः । भवे भवे नातिभवे
भवस्व मां । भवोद् भवाय नमः ॥ (पादाभ्यां नमः) । 1

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः
कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय
नम स्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः । (ऊरुभ्यां नमः) । 2

अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते
अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ (हृदयाय नमः) । 3

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ (मुखाय नमः) । 4

ईशानः सर्वविद्याना–मीश्वरसर्व भूतानां ब्रह्माधिपतिर्
ब्रह्मणोऽधिपतिर् ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥
हंस हंस । (मूर्ध्ने नमः) । 5

7.1 हंस गायत्री

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य, अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः,

अनुष्टुप् छन्दः, परमहंसो देवता ।

हंसां बीजं, हंसीं शक्तिः । हंसूं कीलकं ।

परमहंस प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ 1

हंसां अंगुष्ठाभ्यां नमः । हंसीं तर्जनीभ्यां नमः ।

हंसूं – मध्यमाभ्यां नमः । हंसैं – अनामिकाभ्यां नमः ।

हंसौं – कनिष्ठिकाभ्यां नमः । हंसः–करतल करपृष्ठाभ्यां नमः । 2

हंसां – हृदयाय नमः । हंसीं – शिरसे स्वाहा ।

हंसूं – शिखायै वषट् । हंसैं – कवचाय हुं ।

हंसौं – नेत्रत्रयाय वौषट् । हंसः – अस्त्राय फट् ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः । 3

॥ ध्यानं ॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद् रूपदीपं तिमिरापहारं ।

पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपं ॥ 4

हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि । तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥ 5

(इति त्रिवारं जपित्वा)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद् हंसो (ब्रूयाद्धंसो) नाम सदाशिवः ।

एवं न्यास विधिं कृत्वा ततः संपुटमारभेत् ॥ 6

7.2 दिक् संपुटन्यासः

देवता – इन्द्रः   दिक् – पूर्वं

ओं भूर्भुवस्सुवरों । लं ।

त्रातारमिन्द्र–मवितार–मिन्द्र॒ꣳ हवे हवे सुहव॒ꣳ शूरमिन्द्रं ।

हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्र॒ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥

लं इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावत वाहनाय सांगाय सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । लं इन्द्राय नमः ।

पूर्व दिग्भागे (ललाटस्थाने) इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु । 1

देवता– अग्निः   दिक्– दक्षिणपूर्वं (आग्नेय दिक्)

ओं भूर्भुवस्सुवरों । रं ।

त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽव यासिसीष्ठाः ।

यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा॒ꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥

रं अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सांगाय सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । रं अग्नये नमः ।

आग्नेय दिग्भागे (नेत्रस्थाने) अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु । 2

<u>देवता– यमः</u> <u>दिक् – दक्षिणं</u>

ओं भूर्भुवस्सुवरों । हं ।

सुगन्नः पन्थामभयं कृणोतु । यस्मिन्नक्षत्रे यम एति राजा ।

यस्मिन्नेन–मभ्यषिञ्चन्त देवाः । तदस्य चित्रꣳ हविषा यजाम ।

अप पाप्मानं भरणी र्भरन्तु ।

हं यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय सांगाय सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । हं यमाय नमः ।

दक्षिणदिग्भागे (कर्णस्थाने) यमः सुप्रीतो वरदो भवतु । 3

<u>देवता– निर्.ऋति</u> <u>दिक् – दक्षिण पश्चिमं</u>

ओं भूर्भुवस्सुवरों । षं ।

असुन्वन्तम यजमान–मिच्छ स्तेन–स्येत्यान्त–स्करस्यान्वेषि ।

अन्य–मस्म–दिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्.ऋते तुभ्यमस्तु ॥

षं निर्.ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय सांगाय सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः ।

षं निर्.ऋतये नमः । नैर्.ऋत दिग्भागे (मुखस्थाने) निर्.ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु । 4

देवता– वरुणः दिक् – पश्चिमं

ओं भूर्भुवस्सुवरों । वं ।

तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुश॒ स मा न आयुः प्रमोषीः ॥

वं वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय सांगाय सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । वं वरुणाय नमः ।

पश्चिमदिग्भागे (बाहुस्थाने) वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु । 5

देवता – वायुः दिक्– उत्तर पश्चिमं

ओं भूर्भुवस्सुवरों । यं ।

आ नो नियुद्भि–श्शतिनी–भिरध्वरं । सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञं ।

वायो अस्मिन्. हविषि मादयस्व । यूयं पात स्वस्तिभिस्सदा नः ॥

यं वायवे सांकुशध्वज हस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय सांगाय सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः ।

यं वायवे नमः । वायव्य दिग्भागे (नासिकास्थाने) वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 6

देवता – सोमः　　　　　　　　　　　　　　　　　दिक् – उत्तरं

ओं भूर्भुवस्सुवरों । सं । वय९ं सोम व्रते तव ।

मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तो अशीमहि ॥

सं सोमाय अमृतकलश हस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय

सांगाय सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः ।

सं सोमाय नमः । उत्तर दिग्भागे (हृदयस्थाने) सोमः

सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 7

देवता– ईशानः　　　　　　　　　　　　　　　　　दिक् –उत्तर पूर्वं

ओं भूर्भुवस्सुवरों । शं ।

तमीशानं (तमीशानं) जगत–स्तस्थुषस्पतिं ।

धियं जिन्वमवसे हूमहे वयं । पूषा नो यथा वेद सामसद् वृधे

रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

शं ईशानाय शूलहस्ताय विद्याधिपतये वृषभवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः ।

शं ईशानाय नमः । ऐशान दिग्भागे (नाभिस्थाने) ईशानः सुप्रीतो

वरदो भवतु ॥ 8

देवता- ब्रह्म दिक् - ऊर्ध्वं

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अं ।

अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भर हूतौ सजोषाः ।

यश्शंसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्मा अवन्तु देवाः ॥

अं ब्रह्मणे पद्महस्ताय लोकाधिपतये हंसवाहनाय सांगाय सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । अं ब्रह्मणे नमः ।

ऊर्ध्वदिग्भागे (मूर्धस्थाने) ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 9

देवता-विष्णुः दिक् - अधो दिक्

ओं भूर्भुवस्सुवरों । ह्रीं ।

स्योना पृथिवि भवा ऽनृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

ह्रीं विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय सांगाय सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । ह्रीं विष्णवे नमः ।

अधो दिग्भागे (पादस्थाने) विष्णुस्सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 10

7.3 षोडशांग रौद्रीकरणं

(TS 1.3.3.1)

विभूरसि प्रवाहणो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने
पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 1

वह्निरसि हव्यवाहनो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने
पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 2

श्वात्रोसि प्रचेता रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने
पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 3

तुथोसि विश्ववेदा रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने
पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 4

उशिगसि कवी रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने
पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 5

अंघारिरसि बंभारी रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने
पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 6

अवस्युरसि दुवस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने

पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 7

शुन्ध्यूरसि मार्जालीयो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने

पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 8

सम्राडसि कृशानू रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने

पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 9

परिषद्योसि पवमानो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने

पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 10

प्रतक्वासि नभस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने

पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 11

असंमृष्टोसि हव्यसूदो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने

पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 12

ऋतधामासि सुवर्ज्योती रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने

पिपृहि मा मा मा हिꣳसीः । 13

ब्रह्मज्योतिरसि सुवर्द्धामा रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने
पिपृहि मा मा मा हि॑ꣳसीः । 14

अजोऽस्येकपाद् रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने
पिपृहि मा मा मा हि॑ꣳसीः । 15

अहिरसि बुध्नियो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने
पिपृहि मा मा मा हि॑ꣳसीः । 16

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते । सर्वभूतेष्वपराजितो भवति ।
तथो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-
डाकिनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद् उपद्रवाद् उपघाताः ।
सर्वे (ग्रहाः) ज्वलन्तं पश्यन्तु । मां रक्षन्तु ।
यजमानं सकुटुंबं रक्षन्तु । सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु ।

------------इति तृतीयः न्यासः-------------

पादाति मूर्धान्तं पञ्चांग न्यासः तृतीयः

8. चतुर्थः न्यासः

8.1 मनो ज्योतिः

मनो ज्योति र्जुषता-माज्यं ँविच्छिन्नं ँयज्ञ॒ँ समिमं दधातु ।
या इष्टा उषसो निम्रुचश्च तास्सन्दधामि हविषा घृतेन ।
(गुह्याय नमः) । **1 (TS 1.5.10.2)**

अबोद्ध्यग्निः समिधा जनानां प्रतिधेनु-मिवायती मुषासं ।
यह्वा इव प्रवया-मुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ ।
(नाभ्यै नमः) । **2 (TS 4.4.4.2)**

अग्नि मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयं ।
अपा॒ँ रेता॒ँसि जिन्वति । (हृदयाय नमः) । **3 (TS 1.5.5.1)**

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर-मृताय जातमग्निं ।
कवि॒ँ सम्राज-मतिथिं जनाना-मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ।
(कण्ठाय नमः) । **4 (TS 1.4.13.1)**

मर्माणि ते वर्मभिश्छा-दयामि सोमस्त्वा राजाऽमृते नाभिवस्तां ।
उरो र्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वा मनुमदन्तु देवाः ।
(मुखाय नमः) । **5 (TS 4.6.4.5)**

जातवेदा यदि वा पावकोऽसि । वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसि ।
शं प्रजाभ्यो यजमानाय लोकं । ऊर्जं पुष्टिं दद दभ्याव वृथ्स्व ॥
(शिरसे नमः) ॥ **6 (TB 3.10.5.1)**

8.2 आत्मरक्षा

(T.B.2.3.11.1 to T.B.2.3.11.4) for para for full "8.2")

ब्रह्मात्मन् वदसृजत । तदकामयत । समात्मना पद्येयेति ।
आत्मन्ना-त्मन्नित्या-मन्त्रयत । तस्मै दशम७ हूतः प्रत्यशृणोत् ।
स दशहूतोऽभवत् । दशहूतो हवै नामैषः । तं वा एतं दशहूत७ सन्तं ।
दशहोतेत्या चक्षते परोक्षेण । परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥ **1**

आत्मन्ना-त्मन्नित्या-मन्त्रयत । तस्मै सप्तम७ हूतः प्रत्यशृणोत् ।
स सप्तहूतोऽभवत् । सप्तहूतो हवै नामैषः । तं वा एत७ सप्तहूत७
सन्तं । सप्तहोतेत्या चक्षते परोक्षेण । परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥ **2**

आत्मन्ना-त्मन्नित्या-मन्त्रयत । तस्मै षष्ठ॑ हूतः प्रत्यशृणोत् ।
स षड्ढूतोऽभवत् । षड्ढूतो हवै नामैषः । तं वा एत॑ षड्ढूत॑ सन्तं ।
षड्ढोतेत्या चक्षते परोक्षेण । परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥ 3

आत्मन्ना-त्मन्नित्या-मन्त्रयत । तस्मै पञ्चम॑ हूतः प्रत्यशृणोत् ।
स पञ्चहूतोऽभवत् । पञ्चहूतो हवै नामैषः । तं वा एतं पञ्चहूत॑
सन्तं । पञ्चहोतेत्या चक्षते परोक्षेण । परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥ 4

आत्मन्ना-त्मन्नित्या-मन्त्रयत । तस्मै चतुर्थ॑ हूतः प्रत्यशृणोत् ।
स चतुर्हूतोऽभवत् । चतुर्हूतो हवै नामैषः । तं वा एतं चतुर्हूत॑
सन्तं । चतुर्होतेत्या चक्षते परोक्षेण । परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥ 5

तमब्रवीत् । त्वं वै मे नेदिष्ठ॑ हूतः प्रत्यश्रौषीः ।
त्वयै नानाख्यातार इति । तस्मान्नुहैना-श्चतु र्होतार इत्याचक्षते ।
तस्माच्छुश्रूषुः पुत्राणा॑ हृद्यतमः । नेदिष्ठो हृद्यतमः ।
नेदिष्ठो ब्रह्मणो भवति । य एवं वेद ॥ 6 (आत्मने नमः)

-------------इति चतुर्थ न्यासः-------------

गुह्यादि मस्तकान्त षडंगन्यासः चतुर्थः

9. पञ्चमः न्यासः

9.1 शिव संकल्पः

(Rig veda Khila Kaandam , 4th Capter , 11 Suktam – for full 9.1)

येनदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीत–ममृतेन सर्वं । येन यज्ञस्तायते
(यज्ञस्त्रायते) सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 1

येन कर्माणि प्रचरन्ति धीरा यतो वाचा मनसा चारुयन्ति ।
यथ् सम्मितमनु सँयन्ति प्राणिनस्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 2

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं ँयक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 3

यत्प्रज्ञान–मुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योति रन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 4

सुषारथि–रश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयते–ऽभीशुभि र्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं ँयदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 5

यस्मिन् ऋचस्साम–यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभा विवाराः ।
यस्मिँश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 6

यदत्र षष्ठं त्रिशतꣳ सुवीरं ँयज्ञस्य गुह्यं नव नावमाय्यं ।
दश पञ्च त्रिꣳशतं ँयत्परं च तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 7

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 8

येनेदं ँविश्वं जगतो बभूव ये देवापि महतो जातवेदाः ।
तदेवाग्नि–स्तमसो ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 9

येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशश्च ।
येनेदं जगद् व्याप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 10

ये मनो हृदयं ँये च देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरश्मिः ।
ते श्रोत्रे चक्षुषी सञ्चरन्तं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 11

अचिन्त्यं चा प्रमेयं च व्यक्ता–व्यक्त परं च यत् ।
सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 12

एका च दश शतं च सहस्रं चायुतं च नियुतं च प्रयुतं
चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्च तन्मे मनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥ 13

ये पञ्च पञ्च दश शतꣳ सहस्र-मयुत-न्न्यर्बुदं च ।
ते अग्नि-चित्येष्टकास्तꣳ शरीरं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 14

वेदाहमेतं पुरुषं महान्त-मादित्य-वर्णं तमसः परस्तात् ।
यस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 15

यस्येदं धीराः पुनन्ति कवयो ब्रह्माणमेतं त्वा वृणत इन्दुं ।
स्थावरं जंगमं-द्यौराकाशं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 16

परात् परतरं चैव यत् पराश्चैव यत्परं ।
यत्परात् परतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 17

परात् परतरो ब्रह्मा तत्परात् परतो हरिः ।
तत्परात् परतो ऽधीशस्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 18

या वेदादिषु गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरी ।
ऋग् यजु-स्सामा-थर्वैश्च तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 19

यो वै देवं महादेवं प्रणवं परमेश्वरं ।
यः सर्वे सर्व वेदैश्च तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 20

प्रयतः प्रणवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तमं ।
ओंकारं प्रणवात्मानं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 21

योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज ईश्वरः ।
अकायो निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 22

गोभि र्जुष्टं धनेन ह्यायुषा च बलेन च ।
प्रजया पशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 23

कैलास शिखरे रम्ये शंकरस्य शिवालये ।
देवतास्तत्र मोदन्ते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 24

त्र्यंबकं ँयजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं । उर्वारुकमिव बन्धनान्
मृत्यो-र्मुक्षीय माऽमृतात् तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 25

विश्वत-श्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त उत विश्वतस्पात् ।

संबाहुभ्यां–नमति संपतत्रै द्यावा पृथिवी जनयन् देव एकस्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 26

चतुरो वेदानधीयीत सर्व शास्त्रमयं विदुः ।
इतिहास पुराणानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 27

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितं ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषस्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 28

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
वीरान्मानो रुद्र भामितोवधी र्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 29

ऋतꣳ सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलं । ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं
विश्वरूपाय वै नमो नमस्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 30

कद् रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे । वोचेम शन्तमꣳ हृदे ।
सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 31

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमत–स्सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्निया उपमा अस्य विष्ठा–स्सतश्च योनि–मसतश्च विवस्तन्मे
मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 32

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपद–श्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम तन्मे मनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥ 33

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं ँयस्य देवाः ।
यस्य छायाऽमृतं ँयस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम तन्मे मनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥ 34

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 35

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं । ईश्वरीꣳ सर्व भूतानां तामि
होपह्वये श्रियं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 36

य इद७ँ शिवसंकल्प७ँ सदा ध्यायन्ति ब्राह्मणाः ।

ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 37

(हृदयाय नमः)

9.2 पुरुष सूक्तं

(T.A.3.12.1 to T.A.3.12.7)

सहस्रशीर्षा पुरुषः । सहस्राक्षः सहस्रपात् ।

स भूमिं ँविश्वतो वृत्वा । अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलं ।

पुरुष एवेद७ँ सर्वं । यद् भूतं यच्च भव्यं ।

उतामृतत्वस्येशानः । यदन्नेना-तिरोहति ।

एतावानस्य महिमा । अतो ज्याया७ँश्च पूरुषः ॥ 1

पादोऽस्य विश्वा भूतानि । त्रिपादस्या-मृतं दिवि ।

त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः । पादो ऽस्येहाऽऽभवात् पुनः ।

ततो विष्वङ् व्यक्रामत् । साशनानशने अभि ॥

तस्माद् विराडजायत । विराजो अधि पूरुषः ।

स जातो अत्यरिच्यत । पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥ 2

यत्पुरुषेण हविषा । देवा यज्ञमतन्वत ।

वसन्तो अस्यासीदाज्यं । ग्रीष्म इद्ध्म श्शरद्धविः ।

सप्तास्यासन् परिधयः । त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवायद् यज्ञं तन्वानाः । अबध्नन् पुरुषं पशुं ॥
तं ँयज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्न् । पुरुषं जातमग्रतः ॥ 3

तेन देवा अयजन्त । साद्ध्या ऋषयश्च ये ।
तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः । संभृतं पृषदाज्यं ।
पशूॅस्ताॅश्चक्रे वायव्यान् । आरण्यान् ग्राम्याश्च ये ।
तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः । ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाॅसि जज्ञिरे तस्मात् । यजुस्तस्मा-दजायत ॥ 4

तस्मादश्वा अजायन्त । ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् । तस्माज्जाता अजावयः ।
यत्पुरुषं व्यदधुः । कतिधा व्यकल्पयन्न् ।
मुखं किमस्य कौ बाहू । कावूरू पादावुच्येते ।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् । बाहू राजन्यः कृतः ॥ 5

ऊरू तदस्य यद् वैश्यः । पद्भ्याॅ शूद्रो अजायत ।
चन्द्रमा मनसो जातः । चक्षोः सूर्यो अजायत ।

मुखा-दिन्द्रश्चाग्निश्च । प्राणाद् वायुरजायत ।
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं । शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमि र्दिशः श्रोत्रात् । तथा लोकाꣳ अकल्पयन् ॥ 6

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं । आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे ।
सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः । नामानि कृत्वाभिवदन् यदास्ते ।
धाता पुरस्ता-द्यमुदाजहार । शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः ।
तमेवं ँविद्वानमृत इह भवति । नान्यः पन्था अयनाय विद्यते ।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः । तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमान-स्सचन्ते । यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥ 7

(शिरसे स्वाहा)

9.3 उत्तर नारायणं

(T.A.3.13.1 to T.A.3.13.2)

अद्भ्यः संभूतः पृथिव्यै रसाच्च । विश्वकर्मणः समवर्त्तताधि ।
तस्य त्वष्टा विदधद् रूपमेति । तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे ।
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं । आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेवं ँविद्वानमृत इह भवति । नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ।
प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः । अजायमानो बहुधा विजायते ।

तस्य धीराः परिजानन्ति योनिं । मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः ॥ 1

यो देवेभ्य आतपति । यो देवानां पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातः । नमो रुचाय ब्राह्मये ।
रुचं ब्राह्मं जनयन्तः । देवा अग्रे तदब्रुवन्न् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात् । तस्य देवा असन् वशे ।
ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ । अहोरात्रे पार्श्वे ।
नक्षत्राणि रूपं । अश्विनौ व्यात्तं । इष्टं मनिषाण ।
अमुं मनिषाण । सर्वं मनिषाण ॥ 2

(शिखायै वषट्)

9.4 अप्रतिरथं

(TS 4.6.4.1 to TS 4.6.4.5)

आशुः शिशानो वृषभो न युध्मो घनाघनः क्षोभण–श्चर्.षणीनां ।
संक्रन्दनो–ऽनिमिष एक वीरश्शत९ सेना अजयथ्सा–कमिन्द्रः ।
संक्रन्दनेना निमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
तदिन्द्रेण जयत तथ्सहध्वं युधो नर इषु हस्तेन वृष्णा ।
स इषुहस्तैः स निषंगिभि र्वशी स७स्रष्टा सयुध इन्द्रो गणेन ।

स॒ꣳसृ॒ष्ट॒-जि॒त्सो॒म॒पा बा॒हु॒ श॒र्ध्यू॒र्ध्व॒-ध॒न्वा॒ प्रति॑हि॒ता॒-भि॒रस्ता॑ ।
बृह॑स्पते॒ परि॑दीया॒ रथे॑न रक्षो॒हाऽमित्रा॑ꣳ अप॒ बाध॑मानः । 1

प्र॒भ॒ञ्जन् थ्सेनाः॑ प्रमृ॒णो यु॒धा जय॑न्न॒स्माक॑-मेद्ध्यवि॒ता रथा॑नां ।
गो॒त्र॒भिदं॑ गो॒विदं॒ वज्र॑बाहुं॒ जय॑न्त॒मज्म॑ प्रमृ॒णन्त॒-मोज॑सा ।
इ॒मꣳ स॑जाता॒ अनु॑वीर-यध्व॒मिन्द्र॑ꣳ सखा॒यो ऽनु॒ सꣳरभध्वं॑ ।
ब॒ल॒वि॒ज्ञा॒य-स्स्थवि॑रः॒ प्रवी॑र॒-स्सह॑स्वान् वा॒जी सह॑मान उ॒ग्रः ।
अ॒भिवी॑रो अ॒भिस॑त्वा सहो॒जा जैत्र॑मिन्द्र॒ रथ॒माति॑ष्ठ गो॒वित् । 2

अ॒भि गो॒त्राणि॒ सह॑सा॒ गाह॑मानो॒-ऽदा॒यो॒ वी॒र श्श॒त-म॑न्यु॒रिन्द्रः॑ ।
दु॒श्च्य॒व॒नः पृ॑तना॒षाड॑ यु॒ध्यो॑-ऽस्माक॒ꣳ सेना॑ अवतु॒ प्र यु॒त्सु ।
इन्द्र॑ आसां॒ नेता॒ बृह॒स्पति॒ र्दक्षि॑णा य॒ज्ञः पु॒र ए॑तु॒ सोमः॑ ।
दे॒व॒से॒नाना॑-मभिभं॒ जती॒नां जय॑न्तीनां म॒रुतो॑ य॒न्त्वग्रे॑ ।
इन्द्र॑स्य॒ वृष्णो॒ वरु॑णस्य॒ राज्ञ आ॑दि॒त्याना॑ म॒रुता॒ꣳ शर्द्ध॑ उ॒ग्रं ।

म॒हाम॑नसां भुवन॒च्य॒वानां॒ घोषो॑ दे॒वानां॒ जय॑ता॒ मुद॑स्थात् ।
अ॒स्माक॒-मिन्द्रः॒-सम॑तेषु॒-ध्वजे॒-ष्व॒स्माकं॒ याँ इष॑व॒स्ता जय॑न्तु । 3

अस्माकँ वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानु देवा अवता हवेषु ।
उद्धर्.षय मघवन्ना-युधा-न्युथ्सत्वनां मामकानां महा॑ँसि ।
उद्वृत्रहन् वाजिनां वाजिना-न्युद्रथानां जयतामेतु घोषः ।
उपप्रेत जयता नरः स्थिरा वः सन्तु बाहवः ।
इन्द्रो वः शर्म यच्छत्वना-धृष्या यथाऽसथ ।
अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्म स॑ँशिता ।
गच्छामित्रान् प्रविश मैषां कञ्चनोच्छिषः ।
मर्माणि ते वर्मभिश्छा-दयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेना-भिवस्तां ।
उरो र्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामनु मदन्तु देवाः ।
यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिखा इव ।
इन्द्रो नस्तत्र वृत्रहा विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥ 4 ॥ (कवचाय हुं)

9.5 प्रति पूरुषद्वयं

(TS 1.8.6.1 to TS 1.8.6.2 for para 1 to 2
(T.B.1.6.10.1 to T.B.1.6.10.5 for para 3 to 7)

प्रतिपूरुष मेककपालान् निर्वपत्ये-कमतिरिक्तं याँवन्तो गृह्याः
स्मस्तेभ्यः कमकरं पशूना॑ँ शर्मासि शर्म यजमानस्य शर्म मे
यच्छैक एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थ आखुस्ते रुद्र पशुस्तं जुषस्वैष
ते रुद्र भागः सह स्वस्राऽ-ऽबिकया तंजुषस्व भेषजं गवेऽश्वाय

पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषज७ सुभेषजं यथाऽसति । 1

सुगं मेषाय मेष्या अवांब रुद्रमदि–मह्यव देवं त्र्यंबकं ।
यथा नः श्रेयसः करद्यथा नो वस्य सः करद्यथा नः पशुमतः
करद्यथा नो व्यवसाययात् । त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्यो र्मुक्षीय माऽमृतात् ।
एषते रुद्र भाग स्तंजुषस्व तेनावसेन परो मूजवतो–ऽतीह्यवतत
धन्वा पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः ॥ 2

प्रतिपूरुष–मेककपालान् निर्वपति । जाता एव प्रजा रुद्रान्
निरवदयते । एकमतिरिक्तं । जनिष्यमाणा एव प्रजा रुद्रान् निरवदयते ।
एककपाला भवन्ति । एकधैव रुद्रं निरवदयते । नाभिघारयति ।
यदभिघारयेत् । अन्तरव–चारिण७ रुद्रं कुर्यात् ।
एकोल्मुकेन यन्ति । 3

तद्धि रुद्रस्य भागधेयं । इमां दिशं यन्ति । एषा वै रुद्रस्य दिक् ।
स्वाया मेव दिशि रुद्रं निरवदयते । रुद्रो वा अपशुकाया आहुत्यै
नातिष्ठत । असौ ते पशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात् । यमेव द्वेष्टि ।
तमस्मै पशुं निर्दिशति । यदि न द्विष्यात् ।

आखुस्ते पशुरिति ब्रूयात् । 4

न ग्राम्यान् पशून् हिनस्ति । नारण्यान् । चतुष्पथे जुहोति ।
एष वा अग्नीनां पड्बीशो नाम । अग्निवत्येव जुहोति ।
मध्यमेन पर्णेन जुहोति । स्रुग्घ्येषा । अथो खलु ।
अन्तमेनैव होतव्यं । अन्तत एव रुद्रं निरवदयते । 5

एष ते रुद्रभागः सहस्वस्रां-ऽबिकयेत्याह । शरद्वा अस्यांबिका स्वसा ।
तया वा एष हिनस्ति । यꣳ हिनस्ति । तयैवैनꣳ सह शमयति ।
भेषजंगव इत्याह । यावन्त एव ग्राम्याः पशवः । तेभ्यो भेषजं करोति ।
अवांब रुद्रमदि महीत्याह । आशिषमेवै-तामा शास्ते । 6

त्र्यंबकं ँयजामह इत्याह । मृत्यो र्मुक्षीय माऽमृता-दिति वा वै तदाह ।
उत्किरन्ति । भगस्य लीफ्सन्ते । मूते कृत्वा सजन्ति ।
यथा जनं ँयतेऽवसं करोति । तादृगेव तत् ।
एष ते रुद्रभाग इत्याह निरवत्यै । अप्रतीक्ष-मायन्ति ।
अपः परिषिञ्चति । रुद्रस्यान्त र्हित्यै ।
प्रवा एतेऽस्मा-ल्लोका-च्च्यवन्ते । ये त्र्यंबकै-श्चरन्ति ।
आदित्यं चरुं पुनरेत्य निर्वपति । इयं ँवा अदितिः ।

अस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति ॥ 7 (नेत्रत्रयाय वौषट्)

9.6 शत रुद्रीयं

T.B.3.11.2.1 to T.B.3.11.2.4 for full 9.6

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः । त्वꣳ शर्द्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे ।
त्वं ँवातैररुणै र्यासि शंगयः । त्वं पूषा विधतः पासि नुत्मनाः ।
देवा देवेषु श्रयद्ध्वं । प्रथमा द्वितीयेषु श्रयद्ध्वं ।
द्वितीया-स्तृतीयेषु श्रयद्ध्वं । तृतीया-श्चतुर्थेषु श्रयद्ध्वं ।
चतुर्थाः पञ्चमेषु श्रयद्ध्वं । पञ्चमाः षष्ठेषु श्रयद्ध्वं । 1

षष्ठाः सप्तमेषु श्रयद्ध्वं । सप्तमा अष्टमेषु श्रयद्ध्वं ।
अष्टमा नवमेषु श्रयद्ध्वं । नवमा दशमेषु श्रयद्ध्वं ।
दशमा एकादशेषु श्रयद्ध्वं । एकदशा द्वादशेषु श्रयद्ध्वं ।
द्वादशा-स्त्रयोदशेषु श्रयद्ध्वं । त्रयोदशा-श्चतु र्दशेषु श्रयद्ध्वं ।
चतुर्दशाः पञ्चदशेषु श्रयद्ध्वं । पञ्चदशाः षोडशेषु श्रयद्ध्वं । 2

षोडशाः सप्तदशेषु श्रयद्ध्वं । सप्तदशा अष्टादशेषु श्रयद्ध्वं ।
अष्टादशा एकान्नविꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
एकान्नविꣳशा विꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।

विꣳशा एकविꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
एकविꣳशा द्वाविꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
द्वाविꣳशा स्त्रयोविꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
त्रयोविꣳशा श्चतुर्विꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
चतुर्विꣳशाः पञ्चविꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
पञ्चविꣳशाः षड्विꣳशेषु श्रयद्ध्वं । 3

षड्विꣳशा स्सप्तविꣳशेषु श्रयद्ध्वं । सप्तविꣳशा अष्टाविꣳशेषु श्रयद्ध्वं । अष्टाविꣳशा एकान्नत्रिꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
एकान्नत्रिꣳशा स्त्रिꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
त्रिꣳशा एकत्रिꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
एकत्रिꣳशा द्वात्रिꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
द्वात्रिꣳशा स्त्रयस्त्रिꣳशेषु श्रयद्ध्वं ।
देवास्त्रिरेकादशा स्त्रिस्त्रयस्त्रिꣳशाः ।
उत्तरे भवत । उत्तर वर्त्तमान उत्तर सत्वानः । यत्काम इदं जुहोमि ।
तन्मे समृद्ध्यतां । वयꣳस्याम पतयो रयीणां । भूर्भुवस्वस्स्वाहा । 4
(अस्त्राय फट्)

9.7 पञ्चांग जपः

ह८्स–श्शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिष दतिथि–र्दुरोणसत् ।
नृषद्वर–सधृत–सद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा
अद्रिजा ऋतं बृहत् । **1 (TS 4.2.1.5)**

प्रतद्विष्णु–स्तवते वीर्याय । मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु
त्रिषु विक्रमणेषु । अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ **2 (T.B.2.4.3.4)**

त्र्यंबकं यँजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्यो मुक्षीय माऽमृतात् । **3**
तथ्सवितु र्वृणीमहे । वयं देवस्य भोजनं ।
श्रेष्ठ८् सर्व–धातमं । तुरं भगस्य धीमहि । **4 (TA 1.11.3)**

विष्णु र्योनिं कल्पयतु । त्वष्टा रूपाणि पि८्शतु ।
आसिंचतु प्रजापतिः । धाता गर्भं दधातु ते । **5 (EAK 1.13.1)**

9.8 अष्टाङ्ग प्रणामः

हिरण्यगर्भ–स्समवर्त–ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।
(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । **1 (TS 4.1.8.3)**

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपद-श्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । **2 (TS 4.1.8.4)**

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमत-स्सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्निया उपमा अस्य विष्ठा-स्सतश्च योनिम-सतश्च विवः ।
(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । **3 (TS 4.2.8.2.)**

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यँज्ञं मिमिक्षतां ।
पिपृतान्नो भरीमभिः । (उमामहेश्वराभ्यां नमः) । **4 (TS 3.3.10.2)**

उपश्वासय पृथिवी-मुत द्यां पुरुत्रा ते मनुतां विँष्ठितं जगत् ।
स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवै-र्दूराद्दवीयो अपसेध शत्रून् ।
(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । **5 (TS 4.6.6.6)**

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्म-ज्जुहुराण-मेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥
(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । **6 (TS 1.1.14.3)**

या ते अग्ने रुद्रिया तनूस्तया नः पाहि तस्यास्ते स्वाहा ।

(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । **7 (TS 1.2.11.2)**

इमं यँम प्रस्तरमाहि सीदांगिरोभिः पितृभि-स्संविदानः ।

आत्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व ॥

(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । **8 (TS 2.6.12.6)**

Note: The following is only a sloka which says as to what are the 8 angas with which one has to do Pranamam / Namaskaram. This is not a Mantra.

(उरसा, शिरसा, दृष्ट्या, मनसा, वचसा तथा ।

पद्भ्यां, कराभ्यां, कर्णाभ्यां, प्रणामोऽष्टांग उच्यते)

9.9 ध्यानं

अथात्मानं शिवात्मानं श्री रुद्ररूपं ध्यायेत् ॥

शुद्धस्फटिक सङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्च वक्त्रकं ।

गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरण भूषितं ॥ **1**

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नाग यज्ञोपवीतिनं ।

व्याघ्र चर्मोत्तरीयं च वरेण्य-मभय प्रदं ॥ **2**

कमण्डल्वक्ष सूत्रेच दधानं शूलपाणिनं । **or**

(**or** कमण्डल्वक्ष सूत्राणां धारिणं शूलपाणिनं)

ज्वलन्तं पिङ्गलजटं (**or** जटा) शिखा मध्योद–धारिणं ॥ **3**

वृषस्कन्ध समारूढं उमा देहार्द्ध धारिणं ।

अमृतेनाप्लुतं हृष्टं (शान्तं) दिव्यभोग समन्वितं ॥ **4**

दिग्देवता समायुक्तं सुरासुर नमस्कृतं ।

नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुव–मक्षर–मव्ययं ।

सर्व व्यापिन–मीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणं ॥ **5**

(उमामहेश्वराभ्यां नमः ।)

------इति पञ्चमः न्यासः------

हृदयादि अस्त्रान्तं षडंग न्यासः पञ्चमः

10.षष्ठः न्यासः (लघु न्यासः)

(This mantra seems to be broken into Ruks, from some source and the Swaram marking does not follow some basic conventions.e.g. swaritam at the beginning of a Ruk which are not definitely Nitya swara formation. Many Vedic Schools render the following nyasa without swaram as there is no authentic source with swaram for this mantra in classic Vedic text according to them.)

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु । पादयो र्विष्णुस्तिष्ठतु । हस्तयो र्हरस्तिष्ठतु ।

बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु । जठरेऽग्निस्तिष्ठतु । हृदये शिवस्तिष्ठतु ।

कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु । वक्त्रे सरस्वती तिष्ठतु ।

नासिकयो र्वायुस्तिष्ठतु । नयनयो-श्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेतां ।

कर्णयो-रश्विनौ तिष्ठेतां । ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु ।

मूर्ध्न्या-दित्यास्तिष्ठन्तु । शिरसि महादेवस्तिष्ठतु ।

शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु । पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु ।

पुरतः शूली तिष्ठतु । पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेतां ।

सर्वतो वायुस्तिष्ठतु । ततो बहिः सर्वऽतोग्नि ज्वालामालापरिवृतस्तिष्ठतु ।

सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवताः यथास्थानं तिष्ठन्तु । **1**

मां रक्षन्तु । यजमानं सकुटुंबं रक्षन्तु । सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु ।

अग्निर्मे वाचि श्रितः

(T.B.3.10.8.4 to T.B.3.10.8.10) for para 2

अग्निर्मे वाचि श्रितः । वाक् हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।

वायुर्मे प्राणे श्रितः । प्राणो हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।

सूर्यो मे चक्षुषि श्रितः । चक्षु र्हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।

चन्द्रमा मे मनसि श्रितः । मनो हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।

दिशो मे श्रोत्रे श्रिताः । श्रोत्र॒ँ हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।

आपो मे रेतसि श्रिताः । रेतो हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।

पृथिवी मे शरीरे श्रिता । शरीर॒ँ हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।

ओषधि–वनस्पतयो मे लोमसु श्रिताः । लोमानि हृदये ।
हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
इन्द्रो मे बले श्रितः । बल॑ हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
पर्जन्यो मे मूर्ध्नि श्रितः । मूर्धा हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
ईशानो मे मन्यौ श्रितः । मन्यु हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
आत्मा म आत्मनि श्रितः । आत्मा हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।
पुनर्म आत्मा पुनरायु–रागात् । पुनः प्राणः पुनराकूतमागात् ।
वैश्वानरो रश्मिभि र्वावृधानः । अन्तस्तिष्ठ–त्वमृतस्य गोपाः ॥ 2

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धै र्देवासुरादिभिः ।
आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण महेश्वर ॥ 3

(Note for point No.3)
Given as per existing convention in use, source not available in classic vedic texts.

11.रुद्र जपं (Methods)

There are generally 2 methods in practice before chanting 1st Avarti (round) Rudram Japam.

11.1 First Method

The order of first method is as follows:

1. कलश ध्यानं "ध्यायेन्निरामयं वस्तु " (item No.12.1)
2. आवाहनं (item No.12.2.1 to 12.2.18)
3. प्राण प्रतिष्ठा (item No.12.3)
4. उपचारं (item No.12.4)
5. त्रिशति (item No. 12.5)
6. प्रदक्षिणं (item No. 12.6)
7. नमस्कारः (item No. 12.7)
8. चमक प्रार्थना (item No. 12.8)
9. अघोरेभ्यो (item No. 12.9)
10. श्रीरुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं (item No. 12.10)
11. ओं गणानां त्वा (item No. 12.11)
12. शं च मे (item No.12.12)
13. श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः (item No.12.13)
14. रुद्रं (item No. 12.14)

11.2 Second Method

1. शक्ति पञ्चाक्षरी (item No. 11.6)
2. श्रीरुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं (item No.12.10)
3. कलश ध्यानं "ध्यायेन्निरामयं वस्तु " (item No.12.1)
4. आवाहनं (item No.12.2.1 to 12.2.18)
5. प्राण प्रतिष्ठा (item No.12.3)
6. उपचारं (item No.12.4)
7. त्रिशति (item No. 12.5)
8. प्रदक्षिणं (item No. 12.6)
9. नमस्कारः (item No. 12.7)
10. चमक प्रार्थना (item No. 12.8)
11. अघोरेभ्यो (item No. 12.9)
12. ओं गणानां त्वा (item No. 12.11)
13. शं च मे (item No.12.12)
14. श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः (item No.12.13)
15. रुद्रं (item No. 12.14)

11.3 कुंभ एक कलश (प्रधान कलश) स्थापनं

(धान्य–ताण्डुलोपरि आम्रपल्लव–नाळिकेर सहित आदित्यात्मकरुद्रं / वरुणं आवाहयेत्)

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कलशे आदित्यात्मकरुद्रं /
वरुणं ध्यायामि । आवाहयामि ।
ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतस्सुरुचो वेन आवः ।
सुवर्णपुष्पं समर्पयामि । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

11.4 एकादश कलश स्थापनं

प्राच्यां एक कलशः । आग्नेयीमारभ्य नैर्.ऋतिकलश पर्यन्तं चत्वारः कलशाः । प्रतीच्यां एकः । वायवीमारभ्य ऐशानी पर्यन्तं चत्वारकलशाः । मध्ये प्रधानकलशः ।
एवं एकादशकलशान् प्रतिष्ठाप्य पूजा कर्तव्या)
ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे महादेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।
(एवं क्रमेण शिवं, रुद्रं, शङ्करं, नीललोहितं, ईशानं, विजयं, भीमं, देवदेवं, भवोद्भवं मध्ये आदित्यात्मकरुद्रं)
(इति तत्तत् कलशेष तदनु प्राण प्रतिष्ठा च कुर्यु)

11.5 Sthana Peeta

इति घण्ठनादं कृत्वा, संप्रात्थ्र्य, निर्माल्यं उधृत्य , दॆवताः स्नानपीठॆ स्थापयॆत्, तद्यथा मध्यॆ शंभूः, आग्नॆयां सूर्यः, नैर्.ऋत्यां विघ्नॆश्वरः , वायव्यां अंबिका, ऐशान्यां हरिः इति क्रमॆण शिवलिंगादीनि तत्तत् स्थानॆषु स्थापयित्वा, पञ्चकलशांश्च (चतस्रषु दिक्षु, चतुरः, मध्यॆ, एकं च) स्थापयित्वा लघुन्यास पूर्वकं दॆवताः स्वदॆह तत्तदंगॆषु विन्यसॆत् ।

11.6 श्री शक्ति पञ्चाक्षरी महामन्त्रः

One should get proper “deeksha” from guru to recite this mahamantram as per tradition. This is only followed under Second Method. (see 11.2)

अस्य श्री शक्ति पञ्चाक्षरी महामन्त्रस्य,

वामदॆव ऋषिः, पंक्तिश्चन्दः, श्री सांबसदाशिवॊ दॆवता,

ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं कीलकं, श्री सांबसदाशिव प्रसाद सिद्ध्यत्र्थॆ जपॆ, पूजायां, हॊमॆ च विनियॊगः ।

करन्यासः

ऒं ह्रां सर्वज्ञशक्तिधाम्नॆ अंगुष्ठाभ्यां नमः

नं ह्रीं नित्यतृप्तिशक्तिधाम्नॆ तर्ज्जनीभ्यां नमः

मं ह्रूं अनादिबॊधशक्तिधाम्नॆ मद्ध्यमाभ्यां नमः

शिं ह्रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने अनामिकाभ्यां नमः
वां ह्रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने कनिष्ठिकाभ्यां नमः
यं हः अनन्त शक्तिधाम्ने करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः

अंगन्यासः

ओं ह्रां सर्वज्ञशक्तिधाम्ने हृदयाय नमः
नं ह्रीं नित्यतृप्तिशक्तिधाम्ने शिरसे स्वाहा
मं ह्रूं अनादिबोधशक्तिधाम्ने शिखायै वषट्
शिं ह्रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने कवचाय हुं
वां ह्रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने नेत्रत्रयाय वौषट्
यं हः अनन्त शक्तिधाम्ने अस्त्राय फट्
भूर्भुवस्सुवरों इति दिग्बन्धः

ध्यानं

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकन–कनिभं चारुपद्मा–सनस्थं
वामाङ्कारूढ गौरी निबिडकुचभरा भोग–गाढोपगूडं
नानालङ्कार–दीप्तं वरपरशु मृगाभीतिहस्तं त्रिनेत्रं
वन्दे बालेन्दुमौळिं गजवदन–गुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशं ॥

पञ्चोपचार पूजा

लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि । हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि ।

यं वाय्वात्मने धूपं आघ्रापयामि । रं वह्न्यात्मने दीपं दर्शयामि

वं अमृतात्मने अमृतं निवेदयामि ।

सं सर्वात्मने सर्वोपचारान् समर्पयामि

मूलमन्त्रः – " ओं ह्रीं नमश्शिवाय"

(अष्टोत्तरं वा, द्वात्रिंशतं वा, यथाशक्ति जपेत्)

12.रुद्र विदानं

12.1 कलशेषु ध्यानं

ध्यायेन्निरामयं वस्तु सर्गस्थिति लयादिकं ।

निर्गुणं निष्कळं नित्यं मनो वाचामगोचरं ॥ 1

गंगाधरं शशिधरं जटामकुट शोभितं ।

श्वेतभूति त्रिपुण्ड्रेण विराजित ललाटकं ॥ 2

लोचनत्रय संपन्नं स्वर्ण-कुण्डल शोभितं

स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोप-शोभितं ॥ 3

अक्षमालां सुधाकुंभं चिन्मयीं मुद्रिकामपि

पुस्तकं च भुजै र्दिव्यै र्दधानं पार्वतीपतिं ॥ 4

श्वेतांबरधरं श्वेतं रत्नसिंहा-सनस्थितं

सर्वाभीष्ट प्रदातारं वटमूल-निवासिनं ॥ 5

वामांगे संस्थितां गौरीं बालार्कायुत सन्निभां

जपाकुसुम-साहस्र समानश्रिय-मीश्वरीं ॥ 6

सुवर्ण-रत्नखचित मकुटेन विराजितां

ललाटपट्ट-संराजत् संलग्न-तिलकाञ्चितां ॥ 7

राजीवायत-नेत्रान्तां नीलोत्पल दळेक्षणां

संतप्त हेमरचित ताटङ्का-भरणान्वितां ॥ 8

तांबूल चर्वणरत रक्त जिह्वा विराजितां

पताका भरणोपेतां मुक्ता हारोप शोभितां ॥ 9

स्वर्ण कंकण संयुक्तै श्चतुर्भि र्बाहुभिर्युतां ।

सुवर्ण रत्नखचित काञ्चीदाम विराजितां ॥ 10

कदली-ललितस्तंभ संन्निभोरु-युगान्वितां

श्रिया विराजितपदां भक्तत्राण परायणां ॥ 11

अन्योन्या-श्लिष्टहृद् बाहु गौरीशङ्कर-संज्ञकं

सनातनं परंब्रह्म परमात्मान-मव्ययं ॥ 12

(मंगलाय तनं देवं युवान-मतिसुन्दरं । ध्यायेत् कलपतरोर्मूले

सुखासीनं सहोमया ॥ आवाहयामि जगता-मीश्वरं परमेश्वरं ।) 13

(आगच्छाऽऽगच्छ भगवन् देवेश परमेश्वर ।

सच्चिदानन्द भूतेश पार्वती च नमोऽस्तुते)

आत्वा वहन्तु हरयस्सचेतसः श्वेतैरश्वै स्सह केतुमद्भिः ।

वाताजितै र्बलवद्भि र्मनोजवै रायाहि शीघ्रं मम हव्याय शर्वों ।

12.2 आवाहन मन्त्राः

12.2.1 For Eka kalasam / Ekadasa kalasam

त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर् मुक्षीय माऽमृतात् ।
गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदि सा चतुष्पदी ।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ।

(for Eka Kalasam)

(ओं ह्रीं नमः शिवाय । सद्योजातं प्रपद्यामि । ओं भूर्भूवस्सुवरों ।
अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री सोमास्कन्द परमेश्वरं ध्यायामि ।
आवाहयामि ।)

(for Ekadasa Kalasam)

नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः ।
नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।
सद्योजातं प्रपद्यामि । ओं भूर्भुवस्सुवरों ।
अस्मिन् कुंभे/कलशे महादेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।
शिवं ध्यायामि । आवाहयामि । रुद्रं ध्यायामि । आवाहयामि ।
शङ्करं ध्यायामि । आवाहयामि । नीललोहितं ध्यायामि । आवाहयामि ।

ईशानं ध्यायामि । आवाहयामि । विजयं ध्यायामि । आवाहयामि ।

भीमं ध्यायामि । आवाहयामि । देवदेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

भवोद्भवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

आदित्यात्मकरुद्रं ध्यायामि । आवाहयामि ।

(Note: Some of the Aavahana mantras are from Slokas and not from Vedas.
Scholars from various schools use different swarams.
We have not provided the swarams consciously.)

12.2.2 महागणपति आवाहनं

ओं । गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे कविं कवीनामुप-मश्रवस्तमं ।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनश्शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनं ॥

तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।

तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् । ओं भूर्भुवस्सुवरों ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री महागणपतिं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.3 सुब्रह्मण्य आवाहनं

निघृष्वै रसमायुतैः । कालै र्हरित्वमापन्नैः । इन्द्रायाहि सहस्रयुक् ।

अग्नि र्विभ्राष्टि वसनः । वायु-श्श्वेत सिकद्रुकः ।

संवथ्सरो विषूवर्णैः । नित्यास्ते ऽनुचरास्तव ।

सुब्रह्मण्योꣳ सुब्रह्मण्योꣳ सुब्रह्मण्यों । तत्पुरुषाय विद्महे

महासेनाय धीमहि । तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे वळ्ळिदेवसेना समेत श्री सुब्रह्मण्यस्वामिनं ध्यायामि आवाहयामि ।

12.2.4 दुर्गा देवी आवाहनं

जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्.षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।
कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि । तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ।
ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री दुर्गादेवीं/अंबिकां ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.5 महाविष्णु आवाहनं

सहस्रशीर्षा पुरुषः । सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमिं विश्वतो वृत्वा ।
अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलं ।
नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् । ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री भूमि समेत
श्री महाविष्णुं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.6 महालक्ष्मी आवाहनं

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।

महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।

तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् । ओं भूर्भुवस्सुवरों ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे महालक्ष्मीं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.7 महासरस्वती आवाहनं

प्रणो देवी सरस्वती वाजेभि र्वाजिनीवति । धीनाम वित्र्यवतु ॥

वाग्देव्यै च विद्महे विरिञ्चि पत्न्यै च धीमहि । तन्नो वाणी प्रचोदयात् ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे महासरस्वतीं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.8 सद्गुरु आवाहनं

गुरवे सर्वलोकानां भिषजे भवरोगिणां । निधये सर्व विद्यानां ।

श्री दक्षिणा मूर्त्तये नमः ।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुसाक्षात् परं ब्रह्मा तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

ओं गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्मणे धीमहि । तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे सद्गुरुं ध्यायामि ।

आवाहयामि ।

12.2.9 अन्नपूर्णि आवाहनं

आवहन्ती वितन्वाना । कुर्वाणा चीर-मात्मनः । वासा॑ꣳसि मम गावश्च ।
अन्नपाने च सर्वदा । ततो मे श्रियमावह ।
लोमशां पशुभिस्सह स्वाहा ।

ओं भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि ।

तन्नो अन्नपूर्णी प्रचोदयात् ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे अन्नपूर्णीं ध्यायामि ।

आवाहयामि ।

12.2.10 शास्ता आवाहनं

धाता विधाता परमोत सन्दृक् प्रजापतिः परमेष्ठी विराजा ।
स्तोमाश्छन्दाꣳसि निविदोम आहुरेतस्मै राष्ट्र-मभिसन्नमाम ।
अभ्यावर्त्तध्व-मुपमेतसाकमयꣳ शास्ताऽधिपतिर्वो अस्तु ।
अस्य विज्ञान-मनुसꣳ रभध्वमिमं पश्चादनुजीवाथ सर्वे ।

ओं भूतनाथाय विद्महे भवपुत्राय धीमहि । तन्नः शास्ता प्रचोदयात् ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे पूर्णा-पुष्कलांबा समेत
श्री हरिहरपुत्र स्वामिनं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.11 अनन्त (सर्प्प राजा) आवाहनं

नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य स्सर्पेभ्यो नमः ।
ये दोऽरोचने दिवो येवा सूर्यस्य रश्मिषु । येषामफ्सु सदः कृतं तेभ्य स्सर्पेभ्यो नमः । या इषवो यातु धानानां येवा वनस्पती॒ रनु ।
येवाऽवटेषु शेरते तेभ्य स्सर्पेभ्यो नमः ।
सर्पराजाय विद्महे सहस्रफणाय धीमहि । तन्नो अनन्तः प्रचोदयात् ।
ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे सर्पराजं ध्यायामि आवाहयामि ।

12.2.12 सूर्यनारायण आवाहनं

ओं आसत्येन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना ऽदेवो याति भुवना विपश्यन्न् ।
भास्कराय विद्महे महद्युतिकराय धीमहि । तन्नो आदित्य प्रचोदयात् ।
ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे छाया–सुवर्च्छलांबा समेत श्री सूर्यनारायणं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.13 नक्षत्र देवता आवाहनं

अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः । नक्षत्रं देवमिन्द्रियं ।

इदमासां–विचक्षणं । हविरासं जुहोतन । यस्य भान्ति रश्मयो यस्य

केतवः । यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वा । स कृत्तिका–भिरभि–

सम्वसानः । अग्निर्नो देवस्सुविते दधातु ॥

(अपपाप्मानं भरणी भरन्तु) ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे नक्षत्रदेवतां ध्यायामि ।

आवाहयामि ।

12.2.14 नन्दिकेश्वर आवाहनं

शूलाङ्कुशधरं देवं महादेवस्य वल्लभं ।

शिवकार्य विधानञ्चं ध्यायेत् त्वां नन्दिकेश्वरं ।

तत् पुरुषाय विधमहे चक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे नन्दिकेश्वरं ध्यायामि ।

आवाहयामि ।

12.2.15 आयुर्देवता आवाहनं

आयुष्टे विश्वतो दध दय मग्नि वरेण्यः । पुनस्ते प्राण आयति (or आयाति) परायक्ष्मꣳ सुवामिते । आयुर्द्धा अग्ने हविषो जुषाणो घृतप्रतीको घृतयो निरेधि । घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रमभि–रक्षतादिमं ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । **अस्मिन् कुंभे/कलशे आयुर्देवतां ध्यायामि ।** आवाहयामि ।

12.2.16 श्री राम आवाहनं

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेदसे । रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।

दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि ।

तन्नो रामः प्रचोदयात् । ओं भूर्भुवस्सुवरों ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे सीता–लक्ष्मण–भरत–शत्रुघ्न–हनुमत् समेत श्री रामचन्द्रस्वामिनं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.17 श्रीकृष्ण आवाहनं

कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दनाय च । नन्दगोप कुमाराय श्री गोविन्दाय नमो नमः । देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।

तन्नो कृष्णः प्रचोदयात् । ओं भूर्भुवस्सुवरों ।
अस्मिन् कुंभे/कलशे रुक्मणी-सत्यभामा समेत श्री कृष्णस्वामिनं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.18 आञ्चनेय आवाहनं

बुद्धिर्बलं यशोधैर्यं निर्भयत्वं अरोगता ।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत् स्मरणात् भवेत् ।
श्री रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि । तन्नो हनुमन्तः प्रचोदयात् ।
ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे वेदशास्त्र पण्डित परम भागवतोत्तम श्री आञ्चनेयस्वामिनं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.3 प्राण प्रतिष्ठा

आदित्यात्मक-रुद्रस्य, आवाहितानां सर्वासां देवतानां प्राणप्रतिष्ठा-महामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि छन्दांसि । सकलजगत् सृष्टि-स्थिति-संहार कारिणी प्राणशक्तिः परादेवता ।
आं बीजं । ह्रीं शक्तिः । क्रों कीलकं ।
आदित्यात्मक-रुद्रस्य आवाहितानां सर्वासां देवतानां प्राणप्रतिष्ठार्थे जपे विनियोगः ॥

आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

क्रों मद्ध्यमाभ्यां नमः । आं अनामिकाभ्यां नमः ।

ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । क्रों करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

आं हृदयाय नमः । ह्रीं शिरसे स्वाहा ।

क्रों शिखायै वषट् । आं कवचाय हुं ।

ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । क्रों अस्त्राय फट् ॥

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानं

रक्तांभोधिस्थ–पोतोल्लसदरुण–सरोजा धिरूढा–कराब्जैः ।

पाशं कोदण्डमिक्षूद् भव मळिगुण–मप्यंकुशं पञ्चबाणान् ।

बिभ्राणा–सृक्कपालां त्रिनयन लसिता पीन–वक्षोरुहाढ्या ।

देवी बालार्क्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणाशक्तिः परा नः ॥

आं ह्रीं क्रों । क्रों ह्रीं आं । य र ल व श ष स हों ।

क्षं, हंसःसोहं, सोहं हंसः ।

आदित्यात्मक–रुद्रस्य, आवाहितानां सर्वासां देवतानां

प्राणा इह प्राणाः ।

आं ह्रीं क्रों । क्रों ह्रीं आं । य र ल व श ष स हों ।

क्षं , हंसः सोहं, सोहं हंसः ।

आदित्यात्मक-रुद्रस्य आवाहितानां सर्वासां देवतानां जीव इह स्थितः ।

आं ह्रीं क्रों । क्रों ह्रीं आं । य र ल व श ष स हों ।

क्षं, हंसः सोहं सोहं हंसः ।

आदित्यात्मक-रुद्रस्य, आवाहितानां सर्वासां देवतानां सर्वेन्द्रियाणि

वाङ्मनश्चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-प्राणापान-व्यानोदान-समाना

इहैवागत्य इहैवास्मिन् (एषु कुंभेषु/कलशेषु, अस्यां प्रतिमायां,

अस्मिन् लिङ्गे, अस्मिन् सालग्रामे, शिला चक्रे) सुखं चिरं तिष्ठन्तु

स्वाहा ॥

असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणामिह नो धेहि भोगं ।

ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्त-मनुमते मृडया नस्स्वस्ति ॥

आवाहितो भव । स्थापितो भव । सन्निहितो भव । सन्निरुद्धो भव ।

अवकुण्ठितो भव । सुप्रीतो भव । सुप्रसन्नो भव । वरदो भव ।

प्रसीद प्रसीद ॥

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकं तावत् त्वं प्रीतिभावेन

कुंभेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।

आदित्यात्मक-रुद्रस्य प्राणान् प्रतिष्ठापयामि ॥

(पञ्चोपचार पूजा, धूप, दीप, नैवेद्यं,तांबूलं, नीराजनं) ॥

यत्किंचिन्निवेदनं ॥)

12.4 उपचारं

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः । शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय । ओं ह्रीं नमः शिवाय । सद्यो जाताय वै नमो नमः ।

रत्नसिंहासनं समर्पयामि ॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी । तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ता-भिचाकशीहि ॥ ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

भवे भवे नातिभवे भवस्व मां । **पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥**

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिसीः पुरुषं जगत् । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

भवोद्भवाय नमः । **अर्घ्यं समर्पयामि ॥**

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि । यथा नस्सर्वमिज्जगद यक्ष्मꣳ सुमना असत् । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

वामदेवाय नमः । **आचमनीयं समर्पयामि ॥**

अध्यवोच-दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् । अहीऽश्च सर्वान्
जंभयन् थ्सर्वाश्च यातुधान्यः ॥ ओं ह्रीं नमः शिवाय ।
ज्येष्ठाय नमः । मधुपर्कं समर्पयामि ॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुस्सुमङ्गलः । ये चेमाऽ रुद्रा अभितो
दिक्षु श्रिताः सहस्रशो ऽवैषाऽ हेड ईमहे । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।
श्रेष्ठाय नमः । स्नानं समर्पयामि । स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः । उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्
उदहार्यः । उतैनं-ँविश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः ।
ओं ह्रीं नमः शिवाय । रुद्राय नमः । वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि ।

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो ये अस्य
सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नमः । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।
कालाय नमः । यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि ।

प्रमुंच धन्वनः त्वमुभयो-रार्त्नियो ज्याँ । याश्च ते हस्त इषवः परा ता
भगवो वप । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।
कलविकरणाय नमः । गन्धान् धारयामि । गन्धोपरि अक्षतान्

समर्पयामि ।

अवतत्य धनुस्त्व॑ सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

बलविकरणाय नमः । पुष्पाणि सर्प्पयामि ।

1.ओं भवाय देवाय नमः । ओं शर्वाय देवाय नमः ।

2.ओं ईशानाय देवाय नमः । ओं पशुपतये देवाय नमः ।

3.ओं रुद्राय देवाय नमः । ओं उग्राय देवाय नमः ।

4.ओं भीमाय देवाय नमः । ओं महते देवाय नमः ।

1.ओं भवस्य देवस्य पत्नै नमः । ओं शर्वस्य देवस्य पत्नै नमः ।

2.ओं ईशानस्य देवस्य पत्नै नमः । ओं पशुपतेर्देवस्य पत्नै नमः ।

3.ओं रुद्रस्य देवस्य पत्नै नमः । ओं उग्रस्य देवस्य पत्नै नमः ।

4.ओं भीमस्य देवस्य पत्नै नमः । ओं महतो देवस्य पत्नै नमः

नानाविद परिमळ पत्र–पुष्पाणि समर्पयामि ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवा॑ उत । अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निषङ्गथिः । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

बलाय नमः । धूपमाघ्रापयामि ।

या ते हेति मींढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयाऽस्मान् विश्वतः त्वमयक्ष्मया परिब्भुज । ओं ह्रीं नमः शिवाय । बलप्रमथनाय नमः । दीपं दर्शयामि । धूप–दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

नैवेद्यं

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्सवितुर्वरेणं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्त्तेन परिषिञ्जामि । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि । ओं प्राणाय स्वाहा । ओं अपानाय स्वाहा । ओं व्यानाय स्वाहा । ओं उदानाय स्वाहा । ओं समानाय स्वाहा । ओं ब्रह्मणे स्वाहा ।

नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने । ओं ह्रीं नमः शिवाय । सर्वभूतदमनाय नमः । ………………… महानैवेद्यं निवेदयामि । मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि । हस्तप्रक्षाळनं समर्पयामि । पादप्रक्षाळनं समर्पयामि । नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः । अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहितं ॥ ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूरतांबूलं निवेदयामि ।

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यंबकाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय शङ्कराय श्रीमन्महादेवाय नमः ॥

ओं महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

सर्वोपचारात्थे कर्पूरनीराजनदीपं प्रदर्शयामि ।

नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

बृहथ्साम क्षत्रभृद् वृद्धवृष्णियं त्रिष्टुभौजश्शुभित-मुग्रवीरं ।
इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मद्ध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष ।
रक्षां धारयामि । ओं हर, ओं हर, ओं हर ।
आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वोपचारान् समर्पयामि ।

12.5 त्रिशति

"प्रणवेन विहीनो यः मन्त्रः प्राणहीनकः
सर्व मन्त्रेषु मन्त्राणं प्राणः प्रणव उच्यते" ।
According to the above sloka "OM" has to be added before each naama archana.)

1.ओं नमो हिरण्यबाहवे नमः ।

2.ओं सेनान्ये नमः ।

3.ओं दिशां च पतये नमः ।

4.ओं नमो वृक्षेभ्यो नमः ।

5.ओं हरिकेशेभ्यो नमः ।

6.ओं पशूनां पतये नमः ।

7.ओं नमः सस्पिञ्जराय नमः ।

8.ओं त्विषीमते नमः ।

9.ओं पथीनां पतये नमः ।

10. ओं नमो बभ्लुशाय नमः ।

11. ओं विव्याधिने नमः ।

12. ओं अन्नानां पतये नमः ।

13. ओं नमो हरिकेशाय नमः ।

14. ओं उपवीतिने नमः ।

15. ओं पुष्टानां पतये नमः ।

16. ओं नमो भवस्य हेत्यै नमः ।

17. ओं जगतां पतये नमः ।

18. ओं नमो रुद्राय नमः ।

19. ओं आततािविने नमः ।

20. ओं क्षेत्राणां पतये नमः ।

21. ओं नमः सूताय नमः ।

22. ओं अहन्त्याय नमः ।

23. ओं वनानां पतये नमः ।

24. ओं नमो रोहिताय नमः ।

25. ओं स्थपतये नमः ।

26. ओं वृक्षाणां पतये नमः ।

27. ओं नमो मन्त्रिणे नमः ।

28. ओं वाणिजाय नमः ।

29. ओं कक्षाणां पतये नमः ।

30. ओं नमो भुवन्तये नमः ।

31. ओं वारिवस्कृताय नमः ।

32. ओं ओषधीनां पतये नमः ।

33. ओं नम उच्चैर्घोषाय नमः ।

34. ओं आक्रन्दयते नमः ।

35. ओं पत्तीनां पतये नमः ।

36. ओं नमः कृत्स्नवीताय नमः ।

37. ओं धावते नमः ।

38. ओं सत्वनां पतये नमः ।

39. ओं नमः सहमानाय नमः ।

40. ओं निव्याधिने नमः ।

41. ओं आव्याधिनीनां पतये नमः ।

42. ओं नमः ककुभाय नमः ।

43. ओं निषङ्गिणे नमः ।

44. ओं स्तेनानां पतये नमः ।

45. ओं नमो निषङ्गिणे नमः ।

46. ओं इषुधिमते नमः ।

47. ओं तस्कराणां पतये नमः ।

48. ओं नमो वञ्चते नमः ।

49. ओं परिवञ्चते नमः ।

50. ओं स्तायूनां पतये नमः ।

51. ओं नमो निचेरवे नमः ।

52. ओं परिचराय नमः ।

53. ओं अरण्यानां पतये नमः ।

54. ओं नमः सृकाविभ्यो नमः ।

55. ओं जिघांसद्भ्यो नमः ।

56. ओं मुष्णतां पतये नमः ।

57. ओं नमोऽसिमद्भ्यो नमः ।

58. ओं नक्तंचरद्भ्यो नमः ।

59. ओं प्रकृन्तानां पतये नमः ।

60. ओं नम उष्णीषिणे नमः ।

61. ओं गिरिचराय नमः ।

62. ओं कुलुञ्चानां पतये नमः ।

63. ओं नम इषुमद्भ्यो नमः ।

64. ओं धन्वाविभ्यश्च नमः ।

65. ओं वो नमः ।

66. ओं नम आतन्वानेभ्यो नमः ।

67. ओं प्रतिदधानेभ्यश्च नमः ।

68. ओं वो नमः ।

69. ओं नम आयच्छद्भ्यो नमः ।

70. ओं विसृजद्भ्यश्च नमः ।

71. ओं वो नमः ।

72. ओं नमोऽस्यद्भ्यो नमः ।

73. ओं विध्यद्भ्यश्च नमः ।

74. ओं वो नमः ।

75. ओं नम आसीनेभ्यो नमः ।

76. ओं शयानेभ्यश्च नमः ।

77. ओं वो नमः ।

78. ओं नमः स्वपद्भ्यो नमः ।

79. ओं जाग्रद्भ्यश्च नमः ।

80. ओँ वो नमः ।

81. ओँ नमस्तिष्ठद्भ्यो नमः ।

82. ओँ धावद्भ्यश्च नमः ।

83. ओँ वो नमः ।

84. ओँ नमस्सभाभ्यो नमः ।

85. ओँ सभापतिभ्यश्च नमः ।

86. ओँ वो नमः ।

87. ओँ नमो अश्वेभ्यो नमः ।

88. ओँ अश्वपतिभ्यश्च नमः ।

89. ओँ वो नमः ।

90. ओँ नम आव्याधिनीभ्यो नमः ।

91. ओँ विविध्यन्तीभ्यश्च नमः ।

92. ओँ वो नमः ।

93. ओँ नम उगणाभ्यो नमः ।

94. ओँ तृꣳहतीभ्यश्च नमः ।

95. ओँ वो नमः ।

96. ओँ नमो गृत्सेभ्यो नमः ।

97. ओं गृत्सपतिभ्यश्च नमः ।

98. ओं वो नमः ।

99. ओं नमो व्रातेभ्यो नमः ।

100. ओं व्रातपतिभ्यश्च नमः ।

101. ओं वो नमः ।

102. ओं नमो गणेभ्यो नमः ।

103. ओं गणपतिभ्यश्च नमः ।

104. ओं वो नमः ।

105. ओं नमो विरूपेभ्यो नमः ।

106. ओं विश्वरुपेभ्यश्च नमः ।

107. ओं वो नमः ।

108. ओं नमो महद्भ्यो नमः ।

109. ओं क्षुल्लकेभ्यश्च नमः ।

110. ओं वो नमः ।

111. ओं नमो रथिभ्यो नमः ।

112. ओं अरथेभ्यश्च नमः ।

113. ओं वो नमः ।

114. ओं नमो रथेभ्यो नमः ।

115. ओं रथपतिभ्यश्च नमः ।

116. ओं वो नमः ।

117. ओं नमस्सेनाभ्यो नमः ।

118. ओं सेनानिभ्यश्च नमः ।

119. ओं वो नमः ।

120. ओं नमः क्षत्तृभ्यो नमः ।

121. ओं संग्रहीतृभ्यश्च नमः ।

122. ओं वो नमः ।

123. ओं नमस्तक्षभ्यो नमः ।

124. ओं रथकारेभ्यश्च नमः ।

125. ओं वो नमः ।

126. ओं नमः कुलालेभ्यो नमः ।

127. ओं कर्मारेभ्यश्च नमः ।

128. ओं वो नमः ।

129. ओं नमः पुंजिष्टेभ्यो नमः ।

130. ओं निषादेभ्यश्च नमः ।

131. ओं वो नमः ।

132. ओं नम इषुकृद्भ्यो नमः ।

133. ओं धन्वकृद्भ्यश्च नमः ।

134. ओं वो नमः ।

135. ओं नमो मृगयुभ्यो नमः ।

136. ओं श्वनिभ्यश्च नमः ।

137. ओं वो नमः ।

138. ओं नमः श्वभ्यो नमः ।

139. ओं श्वपतिभ्यश्च नमः ।

140. ओं वो नमः ॥

141. ओं नमो भवाय च नमः ।

142. ओं रुद्राय च नमः ।

143. ओं नमश्शर्वाय च नमः ।

144. ओं पशुपतये च नमः ।

145. ओं नमो नीलग्रीवाय च नमः ।

146. ओं शितिकण्ठाय च नमः ।

147. ओं नमः कपर्दिने च नमः ।

148. ओं व्युप्तकेशाय च नमः ।

149. ओं नमस्सहस्राक्षाय च नमः ।

150. ओं शतधन्वने च नमः ।

151. ओं नमो गिरिशाय च नमः ।

152. ओं शिपिविष्टाय च नमः ।

153. ओं नमो मीढुष्टमाय च नमः ।

154. ओं इषुमते च नमः ।

155. ओं नमो ह्रस्वाय च नमः ।

156. ओं वामनाय च नमः ।

157. ओं नमो बृहते च नमः ।

158. ओं वर्षीयसे च नमः ।

159. ओं नमो वृद्धाय च नमः ।

160. ओं संवृध्वने च नमः ।

161. ओं नमो अग्रियाय च नमः ।

162. ओं प्रथमाय च नमः ।

163. ओं नम आशवे च नमः ।

164. ओं अजिराय च नमः ।

165. ओं नमः शीघ्रियाय च नमः ।

166. ओं शीभ्याय च नमः ।

167. ओं नम ऊर्म्याय च नमः ।

168. ओं अवस्वन्याय च नमः ।

169. ओं नमः स्त्रोतस्याय च नमः ।

170. ओं द्वीप्याय च नमः ।

171. ओं नमो ज्येष्ठाय च नमः ।

172. ओं कनिष्ठाय च नमः ।

173. ओं नमः पूर्वजाय च नमः ।

174. ओं अपरजाय च नमः ।

175. ओं नमो मध्यमाय च नमः ।

176. ओं अपगल्भाय च नमः ।

177. ओं नमो जघन्याय च नमः ।

178. ओं बुध्नियाय च नमः ।

179. ओं नमः सोभ्याय च नमः ।

180. ओं प्रतिसर्याय च नमः ।

181. ओं नमो याम्याय च नमः ।

182. ओं क्षेम्याय च नमः ।

183. ओं नम उर्वर्याय च नमः ।

184. ओं खल्याय च नमः ।

185. ओं नमः श्लोक्याय च नमः ।

186. ओं अवसान्याय च नमः ।

187. ओं नमो वन्याय च नमः ।

188. ओं कक्ष्याय च नमः ।

189. ओं नमः श्रवाय च नमः ।

190. ओं प्रतिश्रवाय च नमः ।

191. ओं नम आशुषेणाय च नमः ।

192. ओं आशुरथाय च नमः ।

193. ओं नमः शूराय च नमः ।

194. ओं अवभिन्दते च नमः ।

195. ओं नमो वर्मिणे च नमः ।

196. ओं वरूथिने च नमः ।

197. ओं नमो बिल्मिने च नमः ।

198. ओं कवचिने च नमः ।

199. ओं नमश्श्रुताय च नमः ।

200. ओं श्रुतसेनाय च नमः ।

201. ओं नमो दुन्दुभ्याय च नमः ।

202. ओं आहनन्याय च नमः ।

203. ओं नमो धृष्णवे च नमः ।

204. ओं प्रमृशाय च नमः ।

205. ओं नमो दूताय च नमः ।

206. ओं प्रहिताय च नमः ।

207. ओं नमो निषङ्गिणे च नमः ।

208. ओं इषुधिमते च नमः ।

209. ओं नमस्तीक्ष्णेषवे च नमः ।

210. ओं आयुधिने च नमः ।

211. ओं नमः स्वायुधाय च नमः ।

212. ओं सुधन्वने च नमः ।

213. ओं नमः स्रुत्याय च नमः ।

214. ओं पथ्याय च नमः ।

215. ओं नमः काट्याय च नमः ।

216. ओं नीप्याय च नमः ।

217. ओं नमः सूद्याय च नमः ।

218. ओं सरस्याय च नमः ।

219. ओं नमो नाद्याय च नमः ।

220. ओं वैशन्ताय च नमः ।

221. ओं नमः कूप्याय च नमः ।

222. ओं अवट्याय च नमः ।

223. ओं नमो वर्ष्याय च नमः ।

224. ओं अवर्ष्याय च नमः ।

225. ओं नमो मेघ्याय च नमः ।

226. ओं विद्युत्याय च नमः ।

227. ओं नम ईध्रियाय च नमः ।

228. ओं आतप्याय च नमः ।

229. ओं नमो वात्याय च नमः ।

230. ओं रेष्मियाय च नमः ।

231. ओं नमो वास्तव्याय च नमः ।

232. ओं वास्तुपाय च नमः ।

233. ओं नमः सोमाय च नमः ।

234. ओं रुद्राय च नमः ।

235. ओं नमस्ताम्राय च नमः ।

236. ओं अरुणाय च नमः ।

237. ओं नमः शङ्गाय च नमः ।

238. ओं पशुपतये च नमः ।

239. ओं नम उग्राय च नमः ।

240. ओं भीमाय च नमः ।

241. ओं नमो अग्रेवधाय च नमः ।

242. ओं दूरेवधाय च नमः ।

243. ओं नमो हन्त्रे च नमः ।

244. ओं हनीयसे च नमः ।

245. ओं नमो वृक्षेभ्यो नमः ।

246. ओं हरिकेशेभ्यो नमः ।

247. ओं नमस्ताराय नमः ।

248. ओं नमश्शंभवे च नमः ।

249. ओं मयोभवे च नमः ।

250. ओं नमश्शंकराय च नमः ।

251. ओं मयस्कराय च नमः ।

252. ओं नमः शिवाय च नमः ।

253. ओं शिवतराय च नमः ।

254. ओं नमस्तीर्थ्याय च नमः ।

255. ओं कूल्याय च नमः ।

256. ओं नमः पार्याय च नमः ।

257. ओं अवार्याय च नमः ।

258. ओं नमः प्रतरणाय च नमः ।

259. ओं उत्तरणाय च नमः ।

260. ओं नम आतार्याय च नमः ।

261. ओं आलाद्याय च नमः ।

262. ओं नमः शष्प्याय च नमः ।

263. ओं फेन्याय च नमः ।

264. ओं नमः सिकत्याय च नमः ।

265. ओं प्रवाह्याय च नमः ।

266. ओं नम इरिण्याय च नमः ।

267. ओं प्रपथ्याय च नमः ।

268. ओं नमः किꣳशिलाय च नमः ।

269. ओं क्षयणाय च नमः ।

270. ओं नमः कपर्दिने च नमः ।

271. ओं पुलस्तये च नमः ।

272. ओं नमो गोष्ठ्याय च नमः ।

273. ओं गृह्याय च नमः ।

274. ओं नमस्तल्प्याय च नमः ।

275. ओं गेह्याय च नमः ।

276. ओं नमः काट्याय च नमः ।

277. ओं गह्वरेष्ठाय च नमः ।

278. ओं नमो ह्रदय्याय च नमः ।

279. ओं निवेष्प्याय च नमः ।

280. ओं नमः पा॒ऽ्सव्याय च नमः ।

281. ओं रजस्याय च नमः ।

282. ओं नमः शुष्क्याय च नमः ।

283. ओं हरित्याय च नमः ।

284. ओं नमो लोप्याय च नमः ।

285. ओं उलप्याय च नमः ।

286. ओं नम ऊर्व्याय च नमः ।

287. ओं सूर्म्याय च नमः ।

288. ओं नमः पर्ण्याय च नमः ।

289. ओं पर्णशद्याय च नमः ।

290. ओं नमोऽपगुरमाणाय च नमः ।

291. ओं अभिघ्नते च नमः ।

292. ओं नम आक्खिदते च नमः ।

293. ओं प्रक्खिदते च नमः ।

294. ओं नमो वो नमः ।

295. ओं किरिकेभ्यो नमः ।

296. ओं देवानाꣳ हृदयेभ्यो नमः ।

297. ओं नमो विक्षीणकेभ्यो नमः ।

298. ओं नमो विचिन्वत्केभ्यो नमः ।

299. ओं नम आनिर्हतेभ्यो नमः ।

300. ओं नम आमीवत्केभ्यो नमः ।

12.6 प्रदक्षिणं

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रन्नी-ललोहित ।
एषां पुरुषाणामेषां पशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किञ्च नाममत् । 1

या ते रुद्र शिवा तनूश्शिवा विश्वाहभेषजी ।
शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे । 2

इमाꣳ रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतिं ।
यथा नः शमसद्-द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मि-न्ननातुरं । 3

मृडा नो रुद्रो तनो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।
यच्छञ्च योश्च मनुरायजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतौ । 4

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितं ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः । 5

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
वीरान्मानो रुद्र भामितो वधी र्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते । 6

आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्न-मस्मे ते अस्तु ।
रक्षा च नो अधि च देव ब्रूह्यधा च नः शर्म यच्छद्विबर्हाः । 7

स्तुहि श्रुतं गर्त्तसदं ँयुवानं मृगन्न भीम-मुपहत्नु-मुग्रं ।
मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवपन्तु सेनाः । 8

परिणो रुद्रस्य हेति र्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्य-स्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय । 9

मीढुष्टम शिवतम शिवो नस्सुमना भव । परमे वृक्ष आयुधन्निधाय
कृत्तिं ँवसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि । 10

विकिरिद विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्र॰ं हेतयोऽन्य-मस्मन्निवपन्तु ताः । 11

सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि । 12

12.7 नमस्कारः

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यां ।
तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 1
महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

अस्मिन्-महत्यर्णवे-ऽन्तरिक्षे भवा अधि ।
तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 2
महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 3
महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

नीलग्रीवा-श्शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 4
महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

ये वृक्षेषु सस्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः ।

तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 5

महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

ये भूताना–मधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः ।

तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 6

महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।

तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 7

महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा यव्युधः ।

तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 8

महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः ।

तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 9

महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।
तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 10
महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषव-स्तेभ्यो दश प्राची
र्दशदक्षिणा दशप्रतीची र्दशोदीची र्दशोर्ध्वा-स्तेभ्यो नमस्ते नो
मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि ॥ 11
महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

नमो रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषव-स्तेभ्यो दश प्राची
र्दशदक्षिणा दशप्रतीची र्दशोदीची र्दशोर्ध्वा-स्तेभ्यो नमस्ते नो
मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि ॥ 12
महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

नमो रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्.षमिषव-स्तेभ्यो दश
प्राची र्दशदक्षिणा दशप्रतीची र्दशोदीची र्दशोर्ध्वा-स्तेभ्यो नमस्ते
नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि ॥ 13
महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

12.8 चमक प्रार्त्थना

प्रथमः अनुवाकः

ओं अग्नाविष्णू सजोषसेमा वर्द्धन्तु वाङ्गिरः ।
द्युंनै र्वाजे-भिरागतं ॥

वाजश्च मे, प्रसवश्च मे,
प्रयतिश्च मे, प्रसितिश्च मे,
धीतिश्च मे, क्रतुश्च मे,
स्वरश्च मे, श्लोकश्च मे,

श्रावश्च मे, श्रुतिश्च मे,
ज्योतिश्च मे, सुवश्च मे,
प्राणश्च मे, ऽपानश्च मे,
व्यानश्च मे, ऽसुश्च मे,

चित्तं च म , आधीतं च मे,
वाक्च मे, मनश्च मे,
चक्षुश्च मे , श्रोत्रं च मे,
दक्षश्च मे, बलं च म,

ओजश्च मे, सहश्च म,
आयुश्च मे, जरा च म,
आत्मा च मे, तनूश्च मे,
शर्म च मे, वर्म च मे,

ऽङ्गानि च मे, ऽस्थानि च मे,
परूꣳषि च मे, शरीराणि च मे ॥ **1 (36)**

<u>द्वितीयः अनुवाकः</u>

ज्यैष्ठ्यं च म, आधिपत्यं च मे,
मन्युश्च मे, भामश्च मे,
ऽमश्च मे, ऽंभश्च मे,
जेमा च मे, महिमा च मे,

वरिमा च मे, प्रथिमा च मे,
वर्ष्मा च मे, द्राघुया च मे,
वृद्धं च मे, वृद्धिश्च मे,
सत्यं च मे, श्रद्धा च मे,

जगच्च मे, धनं च मे,

वशश्च मे, त्विषिश्च मे,

क्रीडा च मे, मोदश्च मे,

जातं च मे, जनिष्यमाणं च मे,

सूक्तं च मे, सुकृतं च मे,

वित्तं च मे, वेद्यं च मे,

भूतं च मे, भविष्यच्च मे,

सुगं च मे, सुपथं च म,

ऋद्धं च म, ऋद्धिश्च मे,

क्लृप्तं च मे, क्लृप्तिश्च मे,

मतिश्च मे, सुमतिश्च मे ॥ **2 (38)**

तृतीयः अनुवाकः

शं च मे, मयश्च मे,

प्रियं च मे, ऽनुकामश्च मे,

कामश्च मे, सौमनसश्च मे,

भद्रं च मे, श्रेयश्च मे,

वस्यश्च मे, यशश्च मे,
भगश्च मे, द्रविणं च मे,
यन्ता च मे, धर्ता च मे,
क्षेमश्च मे, धृतिश्च मे,

विश्वं च मे, महश्च मे,
सँविच्च मे, ज्ञात्रं च मे,
सूश्च मे, प्रसूश्च मे,
सीरं च मे, लयश्च म ,

ऋतं च मे, ऽमृतं च मे,
ऽयक्ष्मं च मे, ऽनामयच्च मे,
जीवातुश्च मे, दीर्घायुत्वं च मे,
ऽनमित्रं च मे, ऽभयं च मे,

सुगं च मे, शयनं च मे,
सूषा च मे, सुदिनं च मे ॥ **3 (36)**

चतुर्थः अनुवाकः

ऊर्क्च मे, सूनृता च मे,
पयश्च मे, रसश्च मे,
घृतं च मे, मधु च मे ,
सग्धिश्च मे, सपीतिश्च मे,

कृषिश्च मे, वृष्टिश्च मे,
जैत्रं च म, औद्भिद्यं च मे ,
रयिश्च मे, रायश्च मे ,
पुष्टं च मे, पुष्टिश्च मे,

विभु च मे, प्रभु च मे,
बहु च मे, भूयश्च मे,
पूर्णं च मे, पूर्णतरं च मे,
ऽक्षितिश्च मे, कूयवाश्च मे,

ऽन्नं च मे, ऽक्षुच्च मे,

व्रीहयश्च मे, यवाश्च मे,

माषाश्च मे, तिलाश्च मे,

मुद्गाश्च मे, खल्वाश्च मे,

गोधूमाश्च मे, मसुराश्च मे,

प्रियंगवश्च मे, ऽणवश्च मे,

श्यामाकस्श्च मे, नीवारस्श्च मे ॥ **4 (38)**

पञ्चमः अनुवाकः

अश्मा च मे, मृत्तिका च मे,

गिरयश्च मे, पर्वताश्च मे,

सिकताश्च मे, वनस्पतयश्च मे,

हिरण्यं च मे, ऽयश्च मे,

सीसं च मे, त्रपुश्च मे,

श्यामं च मे, लोहं च मे,

ऽग्निश्च म, आपश्च मे,

वीरुधश्च म, ओषधयश्च मे,

कृष्टपच्यं च मे, ऽकृष्टपच्यं च मे,
ग्राम्याश्च मे, पशव आरण्याश्च यज्ञेन कल्पन्तां ,

वित्तं च मे, वित्तिश्च मे,
भूतं च मे, भूतिश्च मे,
वसु च मे, वसतिश्च मे,
कर्म च मे, शक्तिश्च मे,

ऽर्थश्च म, एमश्च म,
इतिश्च मे, गतिश्च मे ॥ **5 (32)**

<u>षष्ठः अनुवाकः</u>

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे, सोमश्च म इन्द्रश्च मे,
सविता च म इन्द्रश्च मे, सरस्वती च म इन्द्रश्च मे,

पूषा च म इन्द्रश्च मे, बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे,
मित्रश्च म इन्द्रश्च मे, वरुणश्च म इन्द्रश्च मे,

त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे, धाता च म इन्द्रश्च मे,
विष्णुश्च म इन्द्रश्च मे , ऽश्विनौ च म इन्द्रश्च मे,

मरुतश्च म इन्द्रश्च मे, विश्वे च मे, देवा इन्द्रश्च मे,
पृथिवी च म इन्द्रश्च मे, ऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे,

द्यौश्च म इन्द्रश्च मे, दिशश्च म इन्द्रश्च मे,
मूर्धा च म इन्द्रश्च मे, प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे ॥ **6 (21)**

सप्तमः अनुवाकः

अꣳशुश्च मे, रश्मिश्चमे,
ऽदाभ्यश्च मे, ऽधिपतिश्च म,
उपाꣳशुश्च मे, ऽन्तर्यामश्च म,
ऐन्द्रवायवश्च मे, मैत्रावरुणश्च म,

आश्विनश्च मे, प्रतिप्रस्थानश्च मे,
शुक्रश्च मे, मन्थी च म,
आग्रयणश्च मे, वैश्वदेवश्च मे,
ध्रुवश्च मे, वैश्वानरश्च म,

ऋतुग्रहाश्च मे, ऽतिग्राह्याश्च म,
ऐन्द्राग्नश्च मे, वैश्वदेवश्च मे,

मरुत्वतीयाश्च मे, माहेन्द्रश्च म,
आदित्यश्च मे, सावित्रश्च मे,

सारस्वतश्च मे, पौष्णश्च मे,
पात्नीवतश्च मे, हारियोजनश्च मे ॥ **7 (28)**

अष्टमः अनुवाकः

इद्ध्मश्च मे, बर्हिश्च मे,
वेदिश्च मे, धिष्णियाश्च मे,
स्रुचश्च मे, चमसाश्च मे,
ग्रावाणश्च मे, स्वरवश्च म,

उपरवाश्च मे, ऽधिषवणे च मे,
द्रोणकलशश्च मे, वायव्यानि च मे,
पूतभृच्च म, आधवनीयश्च म,
आग्नीध्रं च मे, हविर्धानं च मे,

गृहाश्च मे, सदश्च मे,
पुरोडाशाश्च मे, पचताश्च मे,
ऽवभृथश्च मे, स्वगाकारश्च मे ॥ **8 (22)**

नवमः अनुवाकः

अग्निश्च मे, घर्मश्च मे
ऽर्कश्च मे, सूर्यश्च मे,
प्राणश्च मे, ऽश्वमेधश्च मे,
पृथिवी च मे, ऽदितिश्च मे,

दितिश्च मे, द्यौश्च मे,
शक्वरीरङ्गुलयो दिशश्च मे, यज्ञेन कल्पन्ता–मृक्च मे,
साम च मे, स्तोमश्च मे,

यजुश्च मे, दीक्षा च मे,
तपश्च म, ऋतुश्च मे ,
व्रतं च मे, ऽहोरात्रयो वृष्ट्या,
बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेतां ॥ **9 (21)**

दशमः अनुवाकः

गर्भाश्च मे, वत्साश्च मे,
त्र्विश्च मे, त्र्वीच मे ,

दित्यवाट् च मे, दित्यौही च मे,
पञ्चाविश्च मे, पञ्चावी च मे,

त्रिवथ्सश्च मे, त्रिवथ्सा च मे,
तुर्यवाट् च मे, तुर्यौही च मे,
पष्ठवाट् च मे, पष्ठौही च म,
उक्षा च मे, वशा च म,

ऋषभश्च मे, वेहच्च मे,
ऽनड्वान् च मे, धेनुश्च म,

आयुर्यज्ञेन कल्पतां, प्राणो यज्ञेन कल्पता-
मपानो यज्ञेन कल्पतां , ँव्यानो यज्ञेन कल्पतां
चक्षुर्यज्ञेन कल्पता७, श्रोत्रं ँयज्ञेन कल्पतां
मनो यज्ञेन कल्पतां , ँवाग्यज्ञेन कल्पता-
मात्मा यज्ञेन कल्पतां , ँयज्ञो यज्ञेन कल्पतां ॥ **10 (29)**

<u>एकादशः अनुवाकः</u>

एका च मे, तिस्रश्च मे,
पञ्च च मे, सप्त च मे,

नव च म, एकादश च मे,

त्रयोदश च मे, पञ्चदश च मे,

सप्तदश च मे, नवदश च म,

एकविंशतिश्च मे, त्रयोविंशतिश्च मे,

पञ्चविंशतिश्च मे, सप्तविंशतिश्च मे,

नवविंशतिश्च म, एकत्रिंशाच्च मे,

त्रयस्त्रिंशाच्च मे, चतस्रश्च मे,

ऽष्टौ च मे, द्वादश च मे,

षोडश च मे, विंशतिश्च मे,

चतुर्विंशतिश्च मे, ऽष्टाविंशतिश्च मे

द्वात्रिंशाच्च मे, षट्त्रिंशाच्च मे,

चत्वारिंशाच्च मे, चतुश्चत्वारिंशाच्च मे ,

ऽष्टाचत्वारिंशाच्च मे,

वाजश्च प्रसवश्चा-पिजश्च क्रतुश्च सुवश्च मूर्धा च व्यश्रिय-

श्चान्त्यायन-श्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चा-धिपतिश्च ॥ **11 (41)**

इडा देवहू र्मनु र्यज्ञनीर् बृहस्पति-रुक्थामदानि
श७सिषद्-विश्वे-देवाः सूक्तवाचः पृथिविमात र्मा मा हिसी
र्मधु मनिष्ये मधु जनिष्ये मधु वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि मधुमतीं
देवेभ्यो वाचमुद्यास७ शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा
अवन्तु शोभायै पितरो ऽनुमदन्तु ॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

==============

12.9अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो

अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्वेशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥
ईशानः सर्वविद्याना-मीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोऽधिपति
र्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥
((नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये ऽंबिकापतय
उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥))

12.10 श्री रुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं

अस्य श्री रुद्राद्ध्याय प्रश्न महामन्त्रस्य

अघोर ऋषिः, अनुष्टुप् चन्दः, संकर्.षणमूर्त्ति स्वरूपो योऽसावादित्य स एष मृत्युंजयरुद्रो देवता ।

नमः शिवायेति बीजं, शिवतरायेति शक्तिः,

नमः सोमायेति (महादेवायेति) कीलकं, (श्री साम्ब सदाशिव) सोमास्कन्द–परमेस्वर प्रसाद सिद्ध्यर्त्थे जपे विनियोगः ।

<u>करन्यासः</u>

अग्निहोत्रात्मने	अंगुष्ठाभ्यां नमः
दर्शपुर्णमासात्मने	तर्ज्जनीभ्यां नमः
चातुर्मास्यात्मने	मद्ध्यमाभ्यां नमः
निरूढपशुबन्धात्मने	अनामिकाभ्यां नमः
ज्योतिष्टोमात्मने	कनिष्ठिकाभ्यां नमः
सर्वक्रत्वात्मने	करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः

<u>अंगन्यासः</u>

अग्निहोत्रात्मने	हृदयाय नमः
दर्शपुर्णमासात्मने	शिरसे स्वाहा

चातुर्मास्यात्मने	शिखायै वषट्
निरूढपशुबन्धात्मने	कवचाय हुं
ज्योतिष्टोमात्मने	नेत्रत्रयाय वौषट्
सर्वक्रत्वात्मने	अस्त्राय फट्
भूर्भुवस्सुवरों	इति दिग्बन्धः

ध्यानं

आपाताळ–नभस्थलान्तभुवन ब्रह्माण्ड–माविस्फुरत्–
ज्योति–स्फाटिक–लिंगमौळि–विलसत्पूर्णेन्दुवान्तामृतैः ।
अस्तोकाप्लुतमेक–मीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन्–
ध्यायेत्–दीप्सितसिद्धये ऽद्रुवपदं विप्रो–ऽभिषिञ्चेच्छिवं ॥ 1

पीठं यस्य धरित्री जलधरकलशं लिंगमाकाश मूर्त्ति
नक्षत्रं पुष्पमाल्यं ग्रहकणकुसुमं चन्द्र–वह्न्यर्क–नेत्रं
कुक्षिः सप्तसमुद्रं भुजगिरि–शिखरं सप्त पाताळपादं
वेदं वक्त्रं षडंगं दशदिशि वसनं दिव्यलिंगं नमामि ॥ 2

ब्रह्माण्ड–व्याप्तदेहा भसितहिम रुचा भासमाना भुजंगैः
कण्ठे कालाः कपर्द्दा–कलित शशिकला श्चण्ड कोदण्डहस्ताः
त्र्यक्षा रुद्राक्षमाला प्रणत भयहराः (प्रकटितविभवाः) शांभवा मूर्त्तिभेदाः

रुद्राः श्रीरुद्र–सूक्त प्रकटितविभवाः नः प्रयच्छन्तु सौख्यं ॥ 3

12.11 गणानां त्वा

ओं गणानां त्वा गणपति८ हवामहे कविं कवीना–मुपमश्रवस्तमं ।
जेष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनं ।
श्री महा गणपतये नमः ।

12.12 शं च मे

शं च मे,
मयश्च मे,
प्रियं च मे,
ऽनुकामश्च मे,
कामश्च मे,
सौमनसश्च मे,
भद्रं च मे,
श्रेयश्च मे,
वस्यश्च मे,
यशश्च मे,
भगश्च मे,
द्रविणं च मे,
यन्ता च मे,
धर्ता च मे,
क्षेमश्च मे,
धृतिश्च मे,
विश्वं च मे,
महश्च मे,
सँविच्च मे,
ज्ञात्रं च मे,

सूश्च मे, प्रसूश्च मे,

सीरं च मे, लयश्च म ,

ऋतं च मे, ऽमृतं च मे,

ऽयक्ष्मं च मे, ऽनामयच्च मे,

जीवातुश्च मे, दीर्घायुत्वं च मे,

ऽनमित्रं च मे, ऽभयं च मे,

सुगं च मे, शयनं च मे,

सूषा च मे, सुदिनं च मे ॥ **3 (36)**

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

12.13 श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः

अस्य श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रस्य, बोधायन ऋषिः, पङ्क्तिः छन्दः, सदाशिव रुद्रो देवता ।

ध्यानं

कैलासाचल–सन्निभा त्रिनयनं पञ्चास्यमंबायुतं
नीलग्रीव–महीश–भूषणधरं व्याघत्वचा प्रावृतं
अक्षस्रग्वर–कुण्डिका–भयकरं चान्द्रीं कलां बिभ्रतं
गंगाभोविलसज्जटं दशभुजं वन्दे महेशं परं ॥

मूलमन्त्रः

"ओं नमो भगवते रुद्राय"

It is customary to chant "Shree Rudram" after this Dyanam and Moola Mantram.

12.14 श्री रुद्रं

प्रथमः अनुवाकः

ओं नमो भगवते रुद्राय ॥

ओं नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः ।
नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः । 1.1

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः ।
शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय । 1.2

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी ।
तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ता भिचाकशीहि । 1.3

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवाङ्-गिरित्र ताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत् । 1.4

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथा नस्सर्वमि-ज्जगद यक्ष्मꣳ सुमना असत् । 1.5

अद्ध्यवोच-दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहीꣳश्च सर्वान् जंभयन् थ्सर्वाश्च यातु धान्यः । 1.6

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुस्सुमङ्गलः । ये चेमाꣳ रुद्रा
अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो ऽवैषाꣳ हेड ईमहे । 1.7

असौ यो ऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपा अदृशन्-नदृशन्-नुदहार्यः ।
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः । 1.8

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्यो ऽकरन्नमः । 1.9

प्रमुञ्च धन्वन-स्त्वमुभयो-रार्त्नियोर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप । 1.10

अवतत्य धनुस्त्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव । 1.11

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत ।
अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निषङ्गथिः । 1.12

या ते हेति मींढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयाऽस्मान्. विश्वत स्त्वमयक्ष्मया परिब्भुज । 1.13

नमस्ते अस्त्वायुधाया-नातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने । 1.14

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः ।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तं ॥ 1.15

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यंबकाय
त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय
नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय
शङ्कराय श्रीमन्-महादेवाय नमः ॥

द्वितीयः अनुवाकः

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशांच पतये नमो 2.1
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो 2.2
नम स्सस्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो 2.3
नमो बभ्लुशाय विव्याधिने-ऽन्नानां पतये नमो 2.4
नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमो 2.5

नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो 2.6

नमो रुद्राया-तताविने क्षेत्राणां पतये नमो 2.7

नमः सूताया-हन्त्याय वनानां पतये नमो 2.8

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो 2.9

नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो 2.10

नमो भुवन्तये वारिवस्कृता-यौषधीनां पतये नमो 2.11

नम उच्चै र्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमो 2.12

नमः कृत्स्नवीताय धावते सत्त्वनां पतये नमः ॥ 2.13

तृतीयः अनुवाकः

नमस्सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमो 3.1

नमः ककुभाय निषङ्गिणे स्तेनानां पतये नमो 3.2

नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो 3.3

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो 3.4

नमो निचेरवे परिचराया-रण्यानां पतये नमो 3.5

नमः सृकाविभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो 3.6

नमोऽसिमद्भ्यो नक्तं चरद्भ्यः प्रकृन्तानां पतये नमो 3.7

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो 3.8

नम इषुमद्भ्यो धन्वाविभ्यश्च वो नमो 3.9

नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो 3.10

नम आयच्छद्भ्यो विसृजद्भ्यश्च वो नमो 3.11

नमोऽस्यद्भ्यो विध्यभ्यश्च वो नमो 3.12

नम आसीनेभ्यः शयानेभ्यश्च वो नमो 3.13

नमस्स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो 3.14

नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो 3.15

नमस्सभाभ्य–स्सभापतिभ्यश्च वो नमो 3.16

नमो अश्वेभ्यो ऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः ॥ 3.17

चतुर्थः अनुवाकः

नम आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमो 4.1

नम उगणाभ्य स्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमो 4.2

नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो 4.3

नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो 4.4

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो 4.5

नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो 4.6

नमो महद्भ्यः क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमो 4.7

नमो रथिभ्यो-ऽरथेभ्यश्च वो नमो 4.8

नमो रथेभ्यो रथपतिभ्यश्च वो नमो 4.9

नमः सेनाभ्य-स्सेनानिभ्यश्च वो नमो 4.10

नमः क्षत्तृभ्य-स्संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो 4.11

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो 4.12

नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो 4.13

नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो 4.14

नम इषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्यश्च वो नमो 4.15

नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो 4.16

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः ॥ 4.17

<u>पञ्चमः अनुवाकः</u>

नमो भवाय च रुद्राय च नमश्शर्वाय च पशुपतये च

नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च

नम-स्सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशाय च शिपिविष्टाय च

नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय च वामनाय च

नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सम्ँवृध्वने च

नमो अग्रियाय च प्रथमाय च नम आशवे चाजिराय च

नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च

नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च ॥ **5**

षष्ठः अनुवाकः

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च

नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्नियाय च

नमस्सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च

नम उर्वर्याय च खल्याय च नम श्लोक्याय चावसान्याय च

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमश्श्रवाय च प्रतिश्रवाय च

नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभिन्दते च

नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमो बिल्मिने च कवचिने च

नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च ॥ **6**

सप्तमः अनुवाकः

नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च

नमो दूताय च प्रहिताय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च

नम स्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च

नमस्स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च

नमः सूद्याय च सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशन्ताय च

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च
नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नम ईध्रियाय चातप्याय च
नमो वात्याय च रेष्मियाय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च ॥ 7

अष्टमः अनुवाकः

नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च
नमश्शङ्गाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च
नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो
नमस्ताराय
नमश्शंभवे च मयोभवे च नमश्शङ्कराय च मयस्कराय च
नमश्शिवाय च शिवतराय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च
नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च
नम आतार्याय चालाद्याय च नमश्शष्प्याय च फेन्याय च
नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च ॥ 8

नवमः अनुवाकः

नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च नमः कि॰शिलाय च क्षयणाय च
नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय च

नम-स्तल्प्याय च गेह्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च

नमो ह्रदय्याय च निवेष्प्याय च नमः पा७ंसव्याय च रजस्याय च

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च

नम ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पर्ण्याय च पर्णशद्याय च

नमोऽपगुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आक्खिदते च प्रक्खिदते च

नमो वः किरिकेभ्यो देवाना७ं ह्रदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो

नमो विचिन्वत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यो नम आमीवत्केभ्यः ॥ 9

<u>दशमः अनुवाकः</u>

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र-न्नीललोहित ।

एषां पुरुषाणामेषां पशूनां मा भे र्माऽरो मो एषां किञ्च नाममत् । 10.1

या ते रुद्र शिवा तनूश्शिवा विश्वाहभेषजी ।

शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे । 10.2

इमा७ं रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतिं ।

यथा नः शमसद्-द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मि-न्ननातुरं । 10.3

मृडा नो रुद्रो तनो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।

यच्छञ्च योश्च मनुरायजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतौ । 10.4

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितं ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः । **10.5**

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
वीरान्मानो रुद्र भामितो वधी र्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते । **10.6**

आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्न-मस्मे ते अस्तु ।
रक्षा च नो अधि च देव ब्रूह्यधा च नः शर्म यच्छद्विबर्हाः । **10.7**

स्तुहि श्रुतं गर्त्तसदं ँयुवानं मृगन्न भीम-मुपहत्नु-मुग्रं ।
मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवपन्तु सेनाः । **10.8**

परिणो रुद्रस्य हेति र्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्य-स्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय । **10.9**

मीढुष्टम शिवतम शिवो नस्सुमना भव ।
परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं ँवसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि । **10.10**

विकिरिद विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्य-मस्मन्निवपन्तु ताः । **10.11**

सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि । 10.12

<u>एकादशः अनुवाकः</u>

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यां ।
तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 11.1
अस्मिन्-महत्यर्णवे-ऽन्तरिक्षे भवा अधि । 11.2
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः । 11.3
नीलग्रीवा-श्शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः । 11.4
ये वृक्षेषु सस्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । 11.5
ये भूताना-मधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः । 11.6
ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् । 11.7
ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा यव्युधः । 11.8
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः । 11.9
य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।
तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । 11.10
नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां यें ऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातो
वर्.षमिषव-स्तेभ्यो दश प्राची र्दशदक्षिणा दशप्रतीची

र्दशोदीची र्दशोर्ध्वा-स्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो

यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि ॥ 11.11

<u>त्र्यंबकादि महामन्त्रः</u>

त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ।

उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्यो र्मुक्षीय माऽमृतात् । 1

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा

भुवना ऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु । 2

तमुष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य ।

यक्ष्वामहे सौमनसाय रुद्रं नमोभि र्देवमसुरं दुवस्य । 3

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः ।

अयं मे विश्व-भेषजोय शिवाभिमर्शनः । 4

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे ।

तान् यज्ञस्य मायया सर्वानव यजामहे । 5

मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा । 6

ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि ॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः । तेनान्नेनाप्यायस्व ॥ 7

नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि ॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

13. Details of “Dravya sampradaayam” in Rudraikaadasini

प्रथमं गन्धतैलं च	द्वितीयं पञ्चगव्यकं
पञ्चामृतं तृतीयं च	चतुर्थं घृतमेव च
पञ्चमं पयसा स्नानं	दध्ना स्नानं तु षष्ठकं
सप्तमं मधुना स्नानं	अष्टमं चेषुदण्डजं
नवमं निंबतोयं च	दशमं नाळिकेरजं
एकादशं गन्धतोयं च	अथ कुंभाभिषेचनं

द्रव्य संप्रदायं **(Purushasookta abhishekam)**

तोयं तु शान्तिदं प्रोक्तं	गन्धतैलं सुखप्रदं
पञ्चगव्यं पवित्रं च	जयं पञ्चामृतं तथा
घृतं मोक्षप्रदं विद्यात्	क्षीरमायुष्यवर्द्धनं
दधि संपत्प्रदं चैव	मधु माधवतोषदं
इक्षुसारं बलारोग्यं	लिकुचं ज्ञानवर्द्धनं
नाळिकेरोदकं चैव	सालोक्या-नन्ददायकं
रजनी राजवश्यं च	पिष्टं तु ऋणमोचनं
आमलकं पित्तशमनं	क्षौद्रं वित्त-विवर्द्धनं

द्राक्षारूक्षहरा नित्यं दाडिमी राज्यदायिका
गन्धोदकैश्च संस्नाप्य ज्ञानवान् भक्तिमान् भवेत्
इहलोके सुखंभुक्त्वा अन्ते वैकुण्ठमाप्नुयात्.

(रजनी = Sandal paste पिष्टं = rice flour
आमलकं =Gooseberry क्षौद्रं = Champaka flower juice
द्राक्ष रसं = Grape juice दाडिमी = pomegranate)

14.एकादश जपं

14.1 प्रथम वार – अभिषेकं गन्धतैलं

14.1.1 चमक अनुवाकः

ओं । अग्नाविष्णू सजोषसेमा वर्द्धन्तु वाङ्गिरः ।
द्युंनैर्–वाजे–भिरागतं ॥

वाजश्च मे, प्रसवश्च मे, प्रयतिश्च मे, प्रसितिश्च मे,
धीतिश्च मे, क्रतुश्च मे, स्वरश्च मे, श्लोकश्च मे,

श्रावश्च मे, श्रुतिश्च मे, ज्योतिश्च मे, सुवश्च मे,
प्राणश्च मे, ऽपानश्च मे, व्यानश्च मे, ऽसुश्च मे,

चित्तं च म , आधीतं च मे, वाक्च मे, मनश्च मे,
चक्षुश्च मे , श्रोत्रं च मे, दक्षश्च मे, बलं च म,

ओजश्च मे , सहश्च म, आयुश्च मे, जरा च म,
आत्मा च मे, तनूश्च मे, शर्म च मे, वर्म च मे,

ऽङ्गानि च मे, ऽस्थानि च मे, परूंषि च मे, शरीराणि च मे ।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः । दीपं दर्शयामि ।

धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । मनोन्मनाय नमः ।

कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.1.2 उपचार मन्त्राः

1. पुरुषस्य विद्म सहस्राक्षस्य महादेवस्य धीमहि ।
   तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । **1.1 (T.A.6.1.5)**
2. यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद् विश्वा धियो रुद्रो महर्षिः ।
   हिरण्यगर्भं पश्यत जायमान७ं सनो देवश्शुभया
   स्मृत्या-सँय्युनक्तु । **1.2 (T.A.6.12.3)**
3. ब्राह्मण एक होता । स यज्ञः । स मे ददातु प्रजां पशून्
   पुष्टिं यँशः । यज्ञश्च मे भूयात् । **1.3 (T.A.3.7.1)**

4. प्रभ्राजमानानाꣳ रुद्राणाꣳ स्थाने स्वतेजसा भानि ।

प्रभ्राजमानीनाꣳ रुद्राणीनाꣳ स्थाने स्वतेजसा भानि । **1.4 TA 1.14.4**

5. एष वै विभुर्नाम यज्ञः । सर्व हवै तत्र विभु भवति ।

येत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते । **1.5 (T.B.3.9.19.1)**

6. प्राणापान-व्यानोदान-समाना मे शुध्यन्तां ज्योति-रहं विरजा

विपाप्मा भूयासꣳ स्वाहा । **1.6 (T.A.6.65.1)**

7. अग्निर्मे वाचि श्रितः । वाग्घृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । **1.7 (T.B.3.10.8.4)**

8. विभूरसि प्रवाहणो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि

मा मा मा हिꣳसीः । **1.8 (T.S.1.3.3.1)**

9. सत्यं परं परꣳ सत्यꣳ सत्येन न सुवर्गाल्-लोकाच्च्यवन्ते

कदाचन सताꣳ हि सत्यं तस्माथ् सत्ये रमन्ते । **1.9 (T.A.6.78.1)**

10. आज्येन जुहोति । अग्नेर्वा एतद्रूपं । यदाज्यं । यदाज्येन जुहोति ।

अग्निमेव तत्प्रीणाति । **1.10 (T.B.3.8.14.2)**

सर्वोपचारार्थे कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि ।

रक्षां धारयामि । ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

(नमश्शंभवे च मयोभवे च नमश्शङ्कराय च मयस्कराय च नमश्शिवाय च शिवतराय च) । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

14.1.3 आशीर्वादं

अनेन प्रथमवार प्रयुक्त श्री रुद्र महामन्त्र जप सहित गन्धतैलाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्री महादेवः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा ,
अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य,
अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां समस्त दुरिदोपशमनद्वारा आयुरारोग्य पुत्र पौत्र धन ध्यान्य तेजो लक्ष्म्यादि सकल साम्राज्यसिद्धि प्रदः, शान्ति प्रदः ,
पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्धि प्रदः , समस्त कल्याण परन्परावाप्ति प्रदः,
लोक क्षेमादिवृद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥
(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.2 द्वितीयवार अभिषेकं – पञ्चगव्यं

14.2.1 द्वितीयः अनुवाकः

ज्यैष्ठ्यं च म, आधिपत्यं च मे, मन्युश्च मे, भामश्च मे,
ऽमश्च मे, ऽंभश्च मे, जेमा च मे, महिमा च मे,

वरिमा च मे, प्रथिमा च मे, वर्ष्मा च मे, द्राघुया च मे,
वृद्धं च मे, वृद्धिश्च मे, सत्यं च मे, श्रद्धा च मे,

जगच्च मे, धनं च मे, वशश्च मे, त्विषिश्च मे,
क्रीडा च मे, मोदश्च मे, जातं च मे, जनिष्यमाणं च मे,

सूक्तं च मे, सुकृतं च मे, वित्तं च मे, वेद्यं च मे,
भूतं च मे, भविष्यच्च मे, सुगं च मे, सुपथं च म,

ऋद्धं च म, ऋद्धिश्च मे, क्लृप्तं च मे, क्लृप्तिश्च मे,
मतिश्च मे, सुमतिश्च मे ॥ **2 (38)**

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.2.2 उपचार मन्त्राः

1. तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । **2.1**
2. यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चिद् यस्मा-न्नाणीयो न ज्यायोऽस्ति कश्चित् । वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठ-त्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वं । **2.2**
3. अग्निर्होता । स भर्ता । स मे ददातु प्रजां पशून् पुष्टिँ यशः । भर्ता च मे भूयात् । **2.3**
4. व्यवदातानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि । व्यवदातीनाँ रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि । **2.4**
5. एष वै प्रभुर्नाम यज्ञः । सर्व हवै तत्र प्रभु भवति । येत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते । **2.5**

6. वाङ्मन-श्चक्षुश्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-रेतो-बुद्ध्याकूतिः संकल्पा मे
शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयास॑ स्वाहा । **2.6**

7. वायुर्मे प्राणे श्रितः । प्राणो हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । **2.7**

8. वह्निरसि हव्यवाहनो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि
मा मा मा हि॑सीः । **2.8**

9. तप इति तपो नानशनात्परं यध्दि परं तप-स्तद्दुर्धर्.षं
तद्दुराधर्.षंतस्मा-त्तपसि रमन्ते । **2.9**

10. मधुना जुहोति । महत्यैवा एतद्देवतायै रूपं । यन्मधु ।
यन्मधुना जुहोति । महतीमेव तद्देवतां प्रीणाति । **2.10**

14.2.3 आशीर्वादं

अनेन द्वितीयवार प्रयुक्त श्री रुद्र महामन्त्र जप सहित पञ्चगव्य अभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्री शिवः,
सर्वान्तरयामि सकल कल्याण गुण गणैक निलयः, सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां, सर्वोपद्रव-सर्वरोग-

सर्वपीडा–सर्वबाधादि निवृत्तिप्रदः, मनः शान्त्यादिप्रदः,

नित्य मंगळावाप्ती प्रदश्च भूयासुरिति भवन्तो महान्तो–ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.3 तृतीयवार अभिषेकं – पञ्चामृतं

14.3.1 तृतीयः अनुवाकः

शं च मे, मयश्च मे, प्रियं च मे, ऽनुकामश्च मे,

कामश्च मे, सौमनसश्च मे, भद्रं च मे, श्रेयश्च मे,

वस्यश्च मे, यशश्च मे, भगश्च मे, द्रविणं च मे,

यन्ता च मे, धर्ता च मे, क्षेमश्च मे, धृतिश्च मे,

विश्वं च मे, महश्च मे, सँविच्च मे, ज्ञात्रं च मे,

सूश्च मे, प्रसूश्च मे, सीरं च मे, लयश्च म ,

ऋतं च मे, ऽमृतं च मे, ऽयक्ष्मं च मे, ऽनामयच्च मे,

जीवातुश्च मे, दीर्घायुत्वं च मे, ऽनमित्रं च मे, ऽभयं च मे,

सुगं च मे, शयनं च मे, सूषा च मे, सुदिनं च मे ॥ **3 (36)**

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि । बलाय नमः ।

धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.3.2 उपचार मन्त्राः

1.तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् । **3.1**

2.न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्व-मानशुः ।
परेण नाकं निहितं गुहायां ँविभ्राजदेत- द्यतयो विशन्ति । **3.2**

3.पृथिवी त्रि होता । स प्रतिष्ठा । स मे ददातु प्रजां पशून्
पुष्टिं ँयशः । प्रतिष्ठा च मे भूयात् । **3.3**

4.वासुकि-वैद्युताना७ँ रुद्राणा७ँ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
वासुकि-वैद्युतीना७ँ रुद्राणीना७ँ स्थाने स्वतेजसा भानि । **3.4**

5.एष वा ऊर्जस्वानाम यज्ञः । सर्वं हवै तन्नोर्जस्वद् भवति ।
येनैतेन यज्ञेन यजन्ते । **3.5**

6.त्वक् चर्म–मा९् स रुधिर–मेदो–मज्जा–स्नायवोऽस्थीनि
मे शुध्यन्तां ज्योति–रहं विरजा विपाप्मा भूयास९ स्वाहा । **3.6**

7.सूर्यो मे चक्षुषि श्रितः । चक्षुर्हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । **3.7**

8.श्वात्रोसि प्रचेता रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि
मा मा मा हि९्सीः । **3.8**

9.दम इति नियतं ब्रह्मचारिण–स्तस्मा–द्दमे रमन्ते । **3.9**

10. तण्डुलै र्जुहोति । वसूनां ँवा एतद् रूपं । यत्तण्डुलाः ।
यत्तण्डुलै र्जुहोति । वसूनेव तत्प्रीणाति । **3.10**

14.3.3 आशीर्वादं

अनेन तृतीयवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित पञ्चामृत अभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीरुद्रः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां सर्वानन्दसिद्धि प्रदः, सर्वाभीष्टसिद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो–ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.4 तुरीय (चतुर्थ) वार अभिषेकं – घृतं

14.4.1 चतुर्थः अनुवाकः

ऊर्क्चं मे, सूनृता च मे, पयश्च मे, रसश्च मे,
घृतं च मे, मधु च मे , सग्धिश्च मे, सपीतिश्च मे,

कृषिश्च मे, वृष्टिश्च मे, जैत्रं च म, औद्भिद्यं च मे,
रयिश्च मे, रायश्च मे , पुष्टं च मे, पुष्टिश्च मे,

विभु च मे, प्रभु च मे, बहु च मे, भूयश्च मे,
पूर्णं च मे, पूर्णतरं च मे, ऽक्षितिश्च मे, कूयवाश्च मे,

ऽन्नं च मे, ऽक्षुच्च मे, व्रीहयश्च मे, यवाश्च मे,
माषाश्च मे, तिलाश्च मे, मुद्गाश्च मे, खल्वाश्च मे,

गोधूमाश्च मे, मसुराश्च मे, प्रियंगवश्च मे, ऽणवश्च मे,
श्यामाकाश्च मे, नीवारास्श्च मे ॥ **4 (38)**

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.4.2 उपचार मन्त्राः

1. तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् । **4.1**

2. वेदान्त-विज्ञान सुनिश्चितार्था-स्सन्यास योगाद्यत-यश्शुद्ध सत्वाः ।
   ते ब्रह्मलोकेतु परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे । **4.2**

3. अन्तरिक्षं चतु होता । स विष्ठाः । स मे ददातु प्रजां पशून्
   पुष्टिं ँयशः । विष्ठाश्च मे भूयात् । **4.3**

4. रजताना॑ रुद्राणा॑ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
   रजताना॑ रुद्राणीना॑ स्थाने स्वतेजसा भानि । **4.4**

5. एष वै पयस्वान्नाम यज्ञः । सर्व॑ हवै तत्र पयस्वद्भवति ।
   येत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते । **4.5**

6. शिरः पाणि-पाद-पार्श्व-पृष्ठोरूदर-जङ्घ-शिश्नोपस्थ-पायवो मे
शुध्यन्तां ज्योति-रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा । **4.6**

7. चन्द्रमा मे मनसि श्रितः । मनो हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । **4.7**

8. तुथोसि विश्ववेदा रौद्रेणानीकेन पाहि माग्ने पिपृहि
मा मा मा हि७सीः । **4.8**

9. शम इत्यरण्ये मुनय-स्तस्माच्छमे रमन्ते । **4.9**

10. पृथुकै र्जुहोति । रुद्राणां ँवा एतद् रूपं । यत्पृथुकाः ।
यत्पृथुकै र्जुहोति । रुद्रानेव तत्प्रीणाति । **4.10**

14.4.3 आशीर्वादं

अनेन तुरीयवार (चतुर्थवार) प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित घृताभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीशङ्करः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां तापत्रय निवृतिद्वारा क्षेमाभिवृद्धिप्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रतिवचनं)

14.5 पञ्चमवार अभिषेकं – क्षीरं

14.5.1 पञ्चमः अनुवाकः

अश्मा च मे, मृत्तिका च मे, गिरयश्च मे, पर्वताश्च मे,
सिकताश्च मे, वनस्पतयश्च मे, हिरण्यं च मे, ऽयश्च मे ,

सीसं च मे, त्रपुश्च मे, श्यामं च मे, लोहं च मे,
ऽग्निश्च म, आपश्च मे, वीरुधश्च म, ओषधयश्च मे,

कृष्टपच्यं च मे, ऽकृष्टपच्यं च मे,
ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च यज्ञेन कल्पन्तां ,
ँवित्तं च मे, वित्तिश्च मे, भूतं च मे, भूतिश्च मे,

वसु च मे, वसतिश्च मे, कर्म च मे, शक्तिश्च मे,
ऽर्थश्च म, एमश्च म, इतिश्च मे, गतिश्च मे ॥ **5 (32)**

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप–दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.5.2 उपचार मन्त्राः

1. तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ।
   तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् । **5.1**
2. दह्रं विपापं परमेश्वभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमध्य स७स्थं ।
   तत्रापि दह्रं गगनं विशोक-स्तस्मिन् यदन्तस्त-दुपासितव्यं । **5.2**
3. वायुः पञ्च होता । स प्राणः । स मे ददातु प्रजां पशून्
   पुष्टिं यशः । प्राणश्च मे भूयात् । **5.3**
4. परुषाणा७ं रुद्राणा७ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
   परुषाणा७ं रुद्राणीना७ स्थाने स्वतेजसा भानि । **5.4**
5. एष वै विधृतो नाम यज्ञः । सर्व७ं हवै तत्र विधृतं भवति ।
   येत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते । **5.5**
6. उत्तिष्ठ पुरुष हरित-पिङ्गल लोहिताक्षि देहि देहि ददापयिता मे
   शुध्यन्तां ज्योति-रहं विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा । **5.6**

7. दिशो मे श्रोत्रे श्रिताः । श्रोत्र९ हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । **5.7**

8. उशिगसि कवी रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि

मा मा मा हि९सीः । **5.8**

9. दान–मिति सर्वाणि भूतानि प्रश९ सन्ति दाना–न्नाति दुश्चरं

तस्मा–द्दाने रमन्ते । **5.9**

10. लाजै र्जुहोति । आदित्यानां ँवा एतद्रूपं । यल्लाजाः ।

यल्लाजै र्जुहोति । आदित्यानेव तत्प्रीणाति । **5.10**

14.5.3 आशीर्वादं

अनेन पञ्चमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित पयसाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीनीललोहितः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां शरीरे वर्त्तमान वर्त्तिष्यमान समस्त रोग–पीडा परिहारद्वारा क्षिप्रारोग्य सिद्धि प्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तो–ऽनुगृह्णन्तु ॥ (तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.6 षष्ठमवार अभिषेकं – दधि

14.6.1 षष्ठः अनुवाकः

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे, सोमश्च म इन्द्रश्च मे,
सविता च म इन्द्रश्च मे, सरस्वती च म इन्द्रश्च मे,

पूषा च म इन्द्रश्च मे, बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे,
मित्रश्च म इन्द्रश्च मे, वरुणश्च म इन्द्रश्च मे,

त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे, धाता च म इन्द्रश्च मे,
विष्णुश्च म इन्द्रश्च मे , ऽश्विनौ च म इन्द्रश्च मे,

मरुतश्च म इन्द्रश्च मे, विश्वे च मे, देवा इन्द्रश्च मे,
पृथिवी च म इन्द्रश्च मे, ऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे,

द्यौश्च म इन्द्रश्च मे, दिशश्च म इन्द्रश्च मे,
मूर्धा च म इन्द्रश्च मे, प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे ॥ 6 (21)
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप–दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ----------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.6.2 उपचार मन्त्राः

1. तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि ।
   तन्नो गरुडः प्रचोदयात् । **6.1**
2. यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः ।
   तस्य प्रकृति–लीनस्य यः परस्स महेश्वरः । **6.2**
3. चन्द्रमा षड्ढोता । स ऋतून् कल्पयाति । स मे ददातु
   प्रजां पशून् पुष्टिं ँयशः । ऋतवश्च मे कल्पन्तां । **6.3**
4. श्यामाना॒ रुद्राणा॒ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
   श्यामाना॒ रुद्राणीना स्थाने॒ स्वतेजसा भानि । **6.4**
5. एष वै व्यावृत्तो नाम यज्ञः । सर्व॒ हवै
   तत्र व्यावृतं भवति । येनैतेन यज्ञेन यजन्ते । **6.5**

6. पृथिव्याप–स्तेजो–वायु–राकाशा मे शुध्यन्तां ज्योति–रहं
विरजा विपाप्मा भूयास७ स्वाहा । **6.6**

7. आपो मे रेतसि श्रिताः । रेतो हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । **6.7**

8. अंघारिरसि बंभारी रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि
मा मा मा हि७सीः । **6.8**

9. धर्म इति धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं धर्मान्नाति–दुष्करं
तस्मा–ध्दर्मे रमन्ते । **6.9**

10. करम्बै र्जुहोति । विश्वेषां ँवा एतद्देवताना७ रूपं । यत्करम्बाः ।
यत्करम्बै र्जुहोति । विश्वानेव तद्देवान्प्रीणाति । **6.10**

14.6.3 आशीर्वादं

अनेन षष्ठवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित दध्याभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीईशानः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां आयुर्बलं यशोवर्चः पशवस्थैर्यं सिद्धिर्लक्ष्मीः क्षमाकान्तिः सद्गुणानन्दो नित्योथ्सवो नित्यश्रीर् नित्यमंगळं इत्येषां सर्वदाभि–वृद्धि भूयासुरिति भवन्तो महान्तो–ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.7 सप्तमवार अभिषेकं – मधु

14.7.1 सप्तमः अनुवाकः

अ॒ꣳ॒शुश्च॑ मे, र॒श्मिश्च॒मे, ऽदा॓भ्यश्च॒ मे, ऽधिपतिश्च॑ म,
उपा॒ꣳ॒शुश्च॑ मे, ऽन्तर्या॒मश्च॑ म, ऐन्द्रवाय॒वश्च॑ मे, मैत्रावरु॒णश्च॑ म,

आश्वि॒नश्च॑ मे, प्रतिप्र॒स्थान॑श्च मे, शु॒क्रश्च॑ मे, म॒न्थी च॑ म,
आग्रय॒णश्च॑ मे, वैश्वदे॒वश्च॑ मे, ध्रु॒वश्च॑ मे, वैश्वान॒रश्च॑ म,

ऋतुग्र॒हाश्च॑ मे, ऽतिग्रा॒ह्या॓श्च म, ऐन्द्रा॒ग्नश्च॑ मे, वैश्वदे॒वश्च॑ मे,
म॒रुत्वती॓याश्च मे, माहे॒न्द्रश्च॑ म, आदि॒त्यश्च॑ मे, सावि॒त्रश्च॑ मे,

सारस्व॒तश्च॑ मे, पौ॒ष्णश्च॑ मे, पात्नीव॒तश्च॑ मे, हारियो॒जनश्च॑ मे ॥ **7 (28)**

ओं शान्ति॒ः शान्ति॒ः शान्ति॑ः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि ।

बला॑य॒ नम॑ः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथना॑य॒ नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप–दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुव॒स्सुव॒ः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.7.2 उपचार मन्त्राः

1. वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् । 7.1
2. सद्योजातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः ।
   भवे भवे नातिभवे भवस्व मां । भवोद्भवाय नमः ॥ 7.2
3. अन्न॑ सप्तहोता । सप्राणस्य प्राणः । स मे ददातु प्रजां
   पशून् पुष्टिं ँयशः । प्राणस्य च मे प्राणो भूयात् । 7.3
4. कपिलाना॑ रुद्राणा॑ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
   कपिलाना॑ रुद्राणीना॑ स्थाने स्वतेजसा भानि । 7.4
5. एष वै प्रतिष्ठितो नाम यज्ञः । सर्व॑ हवै तत्र प्रतिष्ठितं भवति ।
   येत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते । 7.5
6. शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धा मे शुध्यन्तां ज्योति-रहं
   ँविरजा विपाप्मा भूयास॑ स्वाहा । 7.6

7. पृथिवी मे शरीरे श्रिता । शरीर॑ हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । **7.7**

8. अवस्युरसि दुवस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि
मा मा मा हि॑सीः । **7.8**

9. प्रजन इति भूया॑स–स्तस्माद्भूयिष्ठाः प्रजायन्ते तस्माद्भूयिष्ठाः
प्रजनने रमन्ते । **7.9**

10. धानाभि र्जुहोति । नक्षत्राणां ँवा एतद्रूपं । यद्धानाः ।
यद्धानाभि र्जुहोति । नक्षत्राण्येव तत्प्रीणाति । **7.10**

14.7.3 आशीर्वादं

अनेन सप्तमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित मध्वाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीविजयः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां अनेक कोट्यार्ज्जित काम–क्रोध–लोभ–मोह–मद–माथ्सर्याख्य सकल दुरितघ्नौ शमनद्वारा, महैश्वर्याव्याप्ति प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो–ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.8 अष्टमवार अभिषेकं – इक्षुरसं

14.8.1 अष्टमः अनुवाकः

इद्ध्मश्च मे, बर्हिश्च मे, वेदिश्च मे, धिष्णियाश्च मे,
स्रुचश्च मे, चमसाश्च मे, ग्रावाणश्च मे, स्वरवश्च म,

उपरवाश्च मे, ऽधिषवणे च मे, द्रोणकलशश्च मे, वायव्यानि च मे,
पूतभृच्च म, आधवनीयश्च म, आग्नीध्रं च मे, हविर्धानं च मे,

गृहाश्च मे, सदश्च मे, पुरोडाशाश्च मे, पचताश्च मे,
ऽवभृथश्च मे, स्वगाकारश्च मे ॥ **8 (22)**

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप–दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.8.2 उपचार मन्त्राः

1. नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् । **8.1**
2. वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः
   कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय
   नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः । **8.2**
3. द्यौरष्ट होता । सोऽना-धृष्यः । स मे ददातु प्रजां पशून्
   पुष्टिं यँशः । अनाधृष्यश्च भूयासं । **8.3**
4. अतिलोहितानाꣳ रुद्राणाꣳ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
   अतिलोहितीनाꣳ रुद्राणीनाꣳ स्थाने स्वतेजसा भानि । **8.4**
5. एष वै तेजस्वी नाम यज्ञः । सर्वꣳ हवै तत्र तेजस्वी भवति ।
   येत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते । **8.5**
6. मनो-वाक्काय-कर्माणि मे शुध्यन्तां ज्योति-रहं विरजा विपाप्मा
   भूयासꣳ स्वाहा । **8.6**

7. ओषधि-वनस्पतयो मे लोमसु श्रिताः । लोमानि हृदये ।
हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । 8.7

8. शुन्ध्यूरसि मार्जालीयो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि
मा मा मा हि॒ꣳसीः । 8.8

9. अग्नय इत्याह तस्मा-दग्नय आधातव्या अग्निहोत्र-मित्याह
तस्मा-दग्निहोत्रे रमन्ते । 8.9

10. सक्तुभि र्जुहोति । प्रजापते र्वा एतद्रूपं । यत्सक्तवः ।
यत्सक्तुभि र्जुहोति । प्रजापतिमेव तत्प्रीणाति । 8.10

14.8.3 आशीर्वादं

अनेन अष्टमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित इक्षुसारा-भिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीभीमः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां भगवत् पादार विन्दयोः अचञ्चल निष्कपट भक्ति प्रदः समस्त कल्याणगुण प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥ (तथास्तु - इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.9 नवमवार अभिषेकं-निंबतोय रसं

14.9.1 नवमः अनुवाकः

अग्निश्च मे, घर्मश्च मे ऽर्कश्च मे, सूर्यश्च मे,

प्राणश्च मे, ऽश्वमेधश्च मे, पृथिवी च मे, ऽदितिश्च मे,

दितिश्च मे, द्यौश्च मे, शक्वरीरङ्गुलयो दिशश्च मे,यज्ञेन कल्पन्ता-

मृक्च मे, साम च मे, स्तोमश्च मे, यजुश्च मे, दीक्षा च मे,

तपश्च म, ऋतुश्च मे , व्रतं च मे, ऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या, बृहद्रथन्तरे च मे

यज्ञेन कल्पेतां ॥ **9 (21)**

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.9.2 उपचार मन्त्राः

1. वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णद॒ष्ट्राय धीमहि ।
तन्नो नारसि॒ह्ः प्रचोदयात् । 9.1

2. अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो
नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः । 9.2

3. आदित्यो नव होता । स तेजस्वी । स मे ददातु प्रजां पशून्
पुष्टिं ँयशः । तेजस्वी च भूयासं । 9.3

4. ऊर्ध्वाना॒ रुद्राणा॒ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
ऊर्ध्वाना॒ रुद्राणीना॒ स्थाने स्वतेजसा भानि । 9.4

5. एष वै ब्रह्मवर्चसी नाम यज्ञः । आहवै तत्र ब्राह्मणो
ब्रह्मवर्चसी जायते । येनैतेन यज्ञेन यजन्ते । 9.5

6. अव्यक्तभावै-रहंकारै ज्योति-रहं विरजा विपाप्मा
भूयास॒ स्वाहा । 9.6

7. इन्द्रो मे बले श्रितः । बल७ं हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । **9.7**

8. संम्राडसि कृशानू रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि

मा मा मा हि७ंसीः । **9.8**

9. यज्ञ इति यज्ञो हि देवा-स्तस्माध्यज्ञे रमन्ते । **9.9**

10. मसूस्यै र्जुहोति । सर्वासां ँवा एतद्देवताना७ं रूपं । यन्मसूस्यानि ।

यन्मसूस्यै र्जुहोति । सर्वा एव तद्देवताः प्रीणाति । **9.10**

14.9.3 आशीर्वादं

अनेन नवमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित निंबुतोयाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीदेवदेवः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां सकल श्रेयप्राप्ति हेतु भूत सांबपरमेश्वर परिपूर्णा-नुग्रह सिद्धि प्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु - इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.10 दशमवार अभिषेकं – नाळिकेरजं

14.10.1 दशमः अनुवाकः

गर्भाश्च मे, वथ्साश्च मे, त्र्विश्च मे, त्र्वीच मे ,
दित्यवाट् च मे, दित्यौही च मे, पञ्चाविश्च मे, पञ्चावी च मे,

त्रिवथ्सश्च मे, त्रिवथ्सा च मे, तुर्यवाट् च मे, तुर्यौही च मे,
पष्ठवाट् च मे, पष्ठौही च म, उक्षा च मे, वशा च म,

ऋषभश्च मे, वेहच्च मे, ऽनड्वां च मे, धेनुश्च म,
आयुर्–यज्ञेन कल्पतां, प्राणो यज्ञेन कल्पता–
मपानो यज्ञेन कल्पतां , ँव्यानो यज्ञेन कल्पतां

चक्षु र्यज्ञेन कल्पताꣳ श्रोत्रं ँयज्ञेन कल्पतां
मनो यज्ञेन कल्पतां , ँवाग्यज्ञेन कल्पता–
मात्मा यज्ञेन कल्पतां , ँयज्ञो यज्ञेन कल्पतां ॥ **10(41)**
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।
दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.10.2 उपचार मन्त्राः

1. भास्कराय विद्महे महद्युतिकराय धीमहि ।
   तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् । **10.1**
2. तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ **10.2**
3. प्रजापति र्दश होता । स इद७ं सर्वं ।
   स मे ददातु प्रजां पशून् पुष्टिं यँशः । सर्वञ्च मे भूयात् । **10.3**
4. अवपतन्ताना७ं रुद्राणा७ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
   अवपतन्तीना७ं रुद्राणीना स्थाने७ स्वतेजसा भानि । **10.4**
5. एष वा अतिव्याधी नाम यज्ञः । आहवै तत्र राजन्योऽतिव्याधी
   जायते । येत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते । **10.5**

6. आत्मा मे शुध्यन्तां ज्योति–रहं विरजा विपाप्मा भूयास॑ स्वाहा ।
अन्तरात्मा मे शुध्यन्तां ज्योति–रहं विरजा विपाप्मा भूयास॑
स्वाहा । परमात्मा मे शुध्यन्तां ज्योति–रहं विरजा विपाप्मा
भूयास॑ स्वाहा । क्षुधे स्वाहा । क्षुत्पिपासाय स्वाहा ।
विविट्यै स्वाहा । ऋग्विधानाय स्वाहा । कषोत्काय स्वाहा ।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहं ।
अभूति–मसमृद्धिंच सर्वां निर्णुद मे पाप्मान॑ स्वाहा । **10.6**

7. पर्जन्यो मे मूर्ध्नि श्रितः । मूर्धा हृदये । हृदयं मयि ।
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । **10.7**

8. परिषद्योसि पवमानो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि
मा मा मा हि॑सीः । **10.8**

9. मानस–मिति विद्वा॑स–स्तस्मा–द्विद्वा॑स एव मानसे रमन्ते । **10.9**

10. प्रियङ्गु–तण्डुलै र्जुहोति । प्रियाङ्गा ह वै नामैते ।
एतै वै देवा अश्वस्याङ्गानि समदधुः । यत्प्रियङ्गु–तण्डुलैर् जुहोति ।
अश्वस्यै–वाङ्गानि सन्दधाति । **10.10**

14.10.3 आशीर्वादं

अनेन दशमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित नाळिकेरजा–भिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीभवोद्भवः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां क्षेम–स्थैर्य–वीर्य–विजय–आयुरारोग्य पुत्रपौत्र धनधान्य कनकवास्तु वाहनादि समस्तैश्वर्य प्रदः तेजो–लक्ष्म्यादी समस्त पुरुषार्थ सिद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो–ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.11 एकादशवार अभिषेकं – गन्धतोयं

14.11.1 एकादशः अनुवाकः

एका च मे, तिस्रश्च मे, पञ्च च मे, सप्त च मे,
नव च म, एकादश च मे, त्रयोदश च मे, पञ्चदश च मे,

सप्तदश च मे, नवदश च म, एकवि॒ꣳशतिश्च मे, त्रयोवि॒ꣳशतिश्च मे,
पञ्चवि॒ꣳशतिश्च मे, सप्तवि॒ꣳशतिश्च मे,
नववि॒ꣳशतिश्च म, एकत्रि॒ꣳशच्च मे,

त्रयस्त्रिंशच्च मे, चतस्रश्च मे, ऽष्टौ च मे , द्वादश च मे,
षोडश च मे, विꣳशतिश्च मे, चतुर्विꣳशतिश्च मे, ऽष्टाविꣳशतिश्च मे,

द्वात्रिꣳशच्च मे, षट्-त्रिꣳशच्च मे, चत्वारिꣳशच्च मे
चतुश्-चत्वारिꣳशच्च मे ऽष्टाचत्वारिꣳशच्च मे,

वाजश्च प्रसवश्चा-पिजश्च क्रतुश्च सुवश्च मूर्धा च
व्यश्निय-श्चान्त्यायन-श्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चा-धिपतिश्च । 11

इडा देवहू र्मनुर्यज्ञनी र्बृहस्पति-रुक्थामदानि शꣳसिषद्-विश्वे-देवाः
॥ सूक्तवाचः पृथिविमात र्मा मा हिसी र्मधु मनिष्ये मधु जनिष्ये मधु
वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासꣳ
शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा अवन्तु शोभायै पितरो ऽनुमदन्तु ॥
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पायामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ---------------. (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदळीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.11.2 उपचार मन्त्राः

1. वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि । तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ।
कात्यायनाय विदमहे कन्यकुमारि धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् । **11.1**

2. ईशानः सर्वविद्याना-मीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति
ब्रह्मणोऽधिपति ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥ **11.2**

3. हिरण्यपात्रं मधोः पूर्णं ददाति । मदव्यो सानीति । एकदा ब्रह्मण
उपहरति । एकदैव यजमानं आयुस्तेजो ददाति । **11.3**

((नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये
ऽंबिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥))

4. वैद्युताना॑ रुद्राणा॑ स्थाने स्वतेजसा भानि ।
वैद्युतीना॑ रुद्राणीना॑ स्थाने स्वतेजसा भानि । **11.4**

5. एष वै दीर्घो नाम यज्ञः । दीर्घायुषो हवै तत्र मनुष्या भवन्ति ।

येन्नैतेन यज्ञेन यजन्ते । एष वै क्लृप्तो नाम यज्ञः ।

कल्पते हवै तत्र प्रजाभ्यो योगक्षेमः । येन्नैतेन यज्ञेन यजन्ते । 11.5

6. अन्नमय-प्राणमय-मनोमय-विज्ञानामय-मानन्दमय-मात्मा मे

शुध्यन्तां ज्योति-रहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳ स्वाहा । 11.6

7. ईशानो मे मन्यौ श्रितः । मन्यु हृदये । हृदयं मयि ।

अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि । 11.7

8. प्रतक्वासि नभस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि

मा मा मा हिꣳसीः । 11.8

9. न्यास इति ब्रह्मा ब्रह्मा हि परः परो हि ब्रह्मा तानि वा एतान्य

वराणि पराꣳसि न्यास एवात्यरेच यध्य एवं वेदे-त्युपनिषत् ॥ 11.9

10. दशान्नानि जुहोति । दशाक्षरा विराट् ।

विराट् कृथ्स्न-स्यान्ना-ध्यस्या-वरुद्ध्य ॥ 11.10

14.11.3 आशीर्वादं

अनेन एकादशवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित गन्धतोयाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीआदित्यात्मकरुद्रः सर्व मंगलाजानि, प्रकृष्टै-श्वर्यशालि, सीमातित-वैभवः, नागराज भूषः, सर्वपाप हरणः, सर्वप्राणिगण समुज्जीवकः, ब्रह्माण्ड-नायकः,

सकल कल्याण–गुणनिलयः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां सर्वानन्द सिद्धिप्रदः, सांसारिक रोग गणनिवारकः, सर्वाभीष्ट सिद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो–ऽनुगृह्णन्तु ॥ (तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

(Note: During Vibhuti Abhishekam the Rutvik performing the abhishekam shall recite “Mrutha Sanjeevani Suktham”.)

In case of Rudraabhishekam, please proceed to Chapter 19 for Uttaranga / Punar Pooja and perform Abhishekam thereafter. For Rudra Ekadasani or Maha Rudram, proceed to Rudra Kramam)

ओं नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः ।
नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ॥ (3 times)

(Perform the Udvaapanam of Sadyo Jaatha Kalasham or Pancha Kalashams and perform abhishekam to the deities)

15.गणपति ध्यानं

ओं गणानां त्वा	त्वा गणपतिं
गणपतिं॑ हवामहे	गणपतिमिति गण – पतिं >
हवामहे कविं	कविं कवीनां
कवीनामुपमश्रवस्तमं	उपमश्र/वस्तम/मित्युपमश्रवः – तमं >
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां	ज्येष्ठराजमिति ज्येष्ठ – राजं >
ब्रह्मणां ब्रह्मणः	ब्रह्मणस्पते >
पत आ	आ नः
नश्शृण्वन्न्	शृण्वन्नूतिभिः
ऊतिभिस्सीद	ऊतिभिरित्यूति – भिः
सीद सादनं	सादनमिति सादनं

16.श्री रुद्र क्रमः

16.1 श्री रुद्रक्रमः प्रथमः अनुवाकः

ओं नमो भगवते रुद्राय

ओं, नमस्ते	ते रुद्र
रुद्र मन्यवे >	मन्यव उतो
उतो ते >	उतो इत्युतो
त इषवे	इषवे नमः
नम इति नमः	नमस्ते
ते अस्तु	अस्तु धन्वने
धन्वने बाहुभ्यां >	बाहुभ्यामुत
बाहुभ्यामिति बाहु - भ्यां >	उत ते >
ते नमः	नम इति नमः
या ते >	त इषुः
इषुश्शिवतमा	शिवतमा शिवं
शिवतमेति शिव - तमा >	शिवं बभूव
बभूव ते	ते धनुः
धनुरिति धनुः	शिव शरव्या >
शरव्या या	या तव

तव तया >	तया नः
नो रुद्र	रुद्र मृडय
मृडयेति मृडय	या ते >
ते रुद्र	रुद्र शिवा
शिवा तनूः	तनूरघोरा
अघोरापापकाशिनी	अपापकाशिनीत्यपाप – काशिनी>
तया नः	नस्तनुवा >
तनुवा शन्तमया	शन्तमया गिरिशन्त
शन्तमयेति शं – तमया >	गिरिशन्ताभि
गिरिशन्तेति गिरि–शन्त	अभिचाकशीहि
चाकशीहीति चाकशीहि	यामिषुं >
इषुं गिरिशन्त	गिरिशन्त हस्ते >
गिरिशन्तेति गिरि – शन्त	हस्ते बिभर्.षि
बिभर्.ष्यस्तवे	अस्तव इत्यस्तवे
शिवां गिरित्र	गिरित्र तां
गिरित्रेति गिरि – त्र	तां कुरु
कुरु मा	मा हि॒ꣳसीः
हि॒ꣳसीः पुरुषं	पुरुषं जगत्

जगदिति जगत्	शिवेन वचसा
वचसा त्वा	त्वा गिरिश
गिरिशाच्छ	अच्छावदामसि
वदामसीति वदामसि	यथा नः
नः सर्वं >	सर्वमित्
इज्जगत्	जगदयक्ष्मं
अयक्ष्म७ं सुमनाः >	सुमना असत्
सुमना इति सु – मनाः >	असदित्यसत्
अध्यवोचत्	अवोचदधिवक्ता
अधिवक्ता प्रथमः	अधिवक्तेत्यधि – वक्ता
प्रथमो दैव्यः	दैव्यो भिषक्
भिषगिति भिषक्	अही७ंश्च
च सर्वान्	सर्वान् जंभयन्न्
जंभयन्थ् सर्वाः>	सर्वाश्च
च यातुधान्यः	यातुधान्य इति यातु – धान्यः
असौ यः	यस्ताम्रः
ताम्रो अरुणः	अरुण उत
उत बभ्रुः	बभ्रुः सुमंगलः
सुमङ्गल इति सु–मङ्गलः	ये च

चे मां	इमा॒ रुद्राः
रुद्रा अभितः	अभितो दिक्षु
दिक्षुः श्रिताः	श्रिताः सहस्रशः
सहस्रशोऽव	सहस्रश इति सहस्र – शः
अवैषां	एषा॒ हेडः
हेड ईमहे	ईमह इतीमहे
असौ यः	योऽवसर्पति
अवसर्पति नीलग्रीवः	अवसर्पतीत्यव – सर्पति
नीलग्रीवो विलोहितः	नीलग्रीव इति नील – ग्रीवः
विलोहित इति वि – लोहितः	उतैनं >
एनं गोपाः	गोपा अदृशन्
गोपा इति गो–पाः	अदृशन्नदृशन्
अदृशन्नुदहार्यः	उदहार्य इत्युद–हार्यः
उतैनं >	एनं विश्वा >
विश्वा भूतानि	भूतानि सः
स दृष्टः	दृष्टो मृडयाति
मृडयाति नः	न इति नः
नमो अस्तु	अस्तु नीलग्रीवाय

नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय	नीलग्रीवायेति नील – ग्रीवाय
सहस्राक्षाय मीढुषे >	सहस्राक्षायेति सहस्र – अक्षाय
मीढुष इति मीढुषे >	अथो ये
अथो इत्यथो >	ये अस्य
अस्य सत्वानः	सत्वानोऽहं
अहन्तेभ्यः	तेभ्योऽकरं
अकरन्नमः	नम इति नमः
प्रमुञ्च	मुञ्च धन्वनः
धन्वनस्त्वं	त्वमुभयोः >
उभयोरार्त्नियोः	आर्त्नियोर्ज्यां
ज्यामितिज्यां	याश्च
च ते >	ते हस्ते >
हस्त इषवः	इषवः परा >
परा ताः	ता भगवः
भगवो वप	भगव इति भग – वः
वपेति वप	अवतत्य धनुः
अवतत्येत्यव – तत्य	धनुस्त्वं
त्वꣳ सहस्राक्ष	सहस्राक्ष शतेषुधे
सहस्राक्षेति सहस्र – अक्ष	शतेषुध इति शत – इषुधे >

निशीर्य शल्यानां >	निशीर्येति नि – शीर्य
शल्यानां मुखा >	मुखा शिवः
शिवो नः	नः सुमनाः >
सुमना भव	सुमना इति सु – मनाः >
भवेति भव	विज्यं धनुः
विज्यमिति वि – ज्यं >	धनुः कपर्द्दिनः
कपर्द्दिनो विशल्यः	विशल्यो बाणवान्
विशल्य इति वि – शल्यः	बाणवाꣳ उत
बाणवानिति बाण – वान्	उतेत्युत
अनेशन्नस्य	अस्येषवः
इषवः आभुः	आभुरस्य
अस्य निषङ्गथिः	निषङ्गथिरिति निषङ्गथिः
या ते >	ते हेतिः
हेतिर्मीढुष्टम	मीढुष्टम हस्ते >
मीढुष्टमेति मीढुः – तम	हस्ते बभूव
बभूव ते	ते धनुः
धनुरिति धनुः	तयाऽस्मान्
अस्मान् विश्वतः	विश्वतस्त्वं

त्वमयक्ष्मया >	अयक्ष्मया परि
परिब्भुज	भुजेति भुज
नमस्ते	ते अस्तु
अस्त्वायुधाय	आयुधायानातताय
अनातताय धृष्णवे >	अनाततायेत्यना – तताय
धृष्णव इति धृष्णवे >	उभाभ्यामुत
उत ते >	ते नमः
नमो बाहुभ्यां >	बाहुभ्यान्तव
बाहुभ्यामिति बाहु – भ्यां >	तव धन्वने
धन्वन इति धन्वने	परि ते
ते धन्वनः	धन्वनो हेतिः
हेतिरस्मान्	अस्मान् वृणक्तु
वृणक्तु विश्वतः	विश्वत इति विश्वतः
अथो यः	अथो इत्यथो >
य इषुधिः	इषुधिस्तव
इषुधिरितीषु – धिः	तवारे
आरे अस्मत्	अस्मन्नि
निधेहि	धेहितं
तमिति तं	

16.2 श्री रुद्रक्रमः–द्वितीयः अनुवाकः

नमो हिरण्यबाहवे	हिरण्यबाहवे सेनान्ये >
हिरण्यबाहव इति हिरण्य – बाहवे >	सेनान्ये दिशां
सेनान्य इति सेना – न्ये >	दिशाञ्च
च पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो वृक्षेभ्यः
वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः	हरिकेशेभ्यः पशूनां
हरिकेशेभ्य इति हरि – केशेभ्यः	पशूनां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमः सस्पिञ्जराय	सस्पिञ्जराय त्विषीमते
त्विषीमते पथीनां	त्विषीमत इति त्विषी – मते >
पथीनां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो बभ्लुशाय
बभ्लुशाय विव्याधिने >	विव्याधिने ऽन्नानां
विव्याधिन इति वि – व्याधिने >	अन्नानां पतये
पतये नमः	नमो नमः

नमो हरिकेशाय	हरिकेशायोपवीतिने >
हरिकेशायेति हरि - केशाय	उपवीतिने पुष्टानां >
उपवीतिन इत्युप - वीतिने >	पुष्टानां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमो भवस्य	भवस्य हेत्यै
हेत्यै जगतां	जगतां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमो रुद्राय	रुद्रायाततविने >
आततविने क्षेत्राणां	आततविन इत्या - तताविने >
क्षेत्राणां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमः सूताय
सूतायाहन्त्याय	अहन्त्याय वनानां
वनानां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो रोहिताय
रोहिताय स्थपतये	स्थपतये वृक्षाणां >
वृक्षाणां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो मन्त्रिणे >

मन्त्रिणे वाणिजाय	वाणिजाय कक्षाणां
कक्षाणां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो भुवन्तये >
भुवन्तये वारिवस्कृताय	वारिवस्कृतायौषधीनां
वारिवस्कृतायेति वारिवः - कृताय	ओषधीनां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नम उच्चैर्घोषाय	उच्चैर्घोषाया क्रन्दयते
उच्चै र्घोषायेत्युच्चैः - घोषाय	आक्रन्दयते पत्तीनां
आक्रन्दयत इत्या - क्रन्दयते	पत्तीनां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमः कृथ्स्नवीताय	कृथ्स्नवीताय धावते
कृथ्स्नवीतायेति कृथ्स्न - वीताय	धावेते सत्वनां
सत्वनां पतये	पतये नमः
नम इति नमः	

16.3 श्री रुद्रक्रमः–तृतीयः अनुवाकः

नमः सहमानाय	सहमानाय निव्याधिने >
निव्याधिन आव्याधिनीनां	निव्याधिन इति नि – व्याधिने >
आव्याधिनीनां पतये	आव्याधिनीनामित्या – व्याधिनीनां
पतये नमः	नमो नमः
नमः ककुभाय	ककुभाय निषङ्गिणे >
निषङ्गिणे स्तेनानां >	निषङ्गिण इति नि – सङ्गिने >
स्तेनानां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो निषङ्गिणे >
निषङ्गिण इषुधिमते >	निषङ्गिण इति नि – सङ्गिने >
इषुधिमते तस्कराणां	इषुधिमत इतीषुधि – मते >
तस्कराणां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमो वञ्चते
वञ्चते परिवञ्चते	परिवञ्चते स्तायूनां
परिवञ्चत इति परि – वञ्चते	स्तायूनां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमो निचेरवे >	निचेरवे परिचराय

निचेरव इति नि – चेरवे >	परिचरायारण्यानां
परिचरायेति परि – चराय	अरण्यानां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमः सृकाविभ्यः	सृकाविभ्यो जिघाꣳसद्भ्यः
सृकाविभ्य इति सृकावि – भ्यः	जिघाꣳसद्भ्यो मुष्णतां
जिघाꣳसद्भ्य इति जिघाꣳसत्–भ्यः	मुष्णतां पतये
पतये नमः	नमो नमः
नमोऽसिमद्भ्यः	असिमद्भ्यो नक्तं >
असिमद्भ्य इत्यसिमत् – भ्यः	नक्तञ्चरद्भ्यः
चरद्भ्यः प्रकृन्तानां >	चरद्भ्य इति चरत् – भ्यः
प्रकृन्तानां पतये	प्रकृन्तानामिति प्र – कृन्तानां >
पतये नमः	नमो नमः
नम उष्णीषिणे >	उष्णीषिणे गिरिचराय
गिरिचराय कुलुञ्चानां >	गिरिचरायेति गिरि – चराय
कुलुञ्चानां पतये	पतये नमः
नमो नमः	नमः इषुमद्भ्यः
इषुमद्भ्यो धन्वाविभ्यः	इषुमद्भ्य इतीषुमत् – भ्यः

धन्वाविभ्यश्च	धन्वाविभ्य इति धन्वावि – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नम आतन्वानेभ्यः
आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यः	आतन्वानेभ्य इत्या – तन्वानेभ्यः
प्रतिदधानेभ्यश्च	प्रतिदधानेभ्य इति प्रति – दधानेभ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नम आयच्छद्भ्यः
आयच्छद्भ्यो विसृजद्भ्यः	आयच्छद्भ्य इत्यायच्छत् – भ्यः
विसृजद्भ्यश्च	विसृजद्भ्य इति विसृजत् – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमोऽस्यद्भ्यः
अस्यद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यः	अस्यद्भ्य इत्यस्यत् – भ्यः
विद्ध्यद्भ्यश्च	विद्ध्यद्भ्य इति विद्ध्यत् – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नम आसीनेभ्यः
आसीनेभ्यः शयानेभ्यः	शयानेभ्यश्च
च वः	वो नमः

नमो नमः	नमः स्वपद्भ्यः
स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यः	स्वपद्भ्य इति स्वपत् – भ्यः
जाग्रद्भ्यश्च	जाग्रद्भ्य इति जाग्रत् – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमस्तिष्ठद्भ्यः
तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यः	तिष्ठद्भ्य इति तिष्ठत् – भ्यः
धावद्भ्यश्च	धावद्भ्य इति धावत् – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमः सभाभ्यः
सभाभ्यः सभापतिभ्यः	सभापतिभ्यश्च
सभापतिभ्य इति सभापति – भ्यः	च वः
वो नमः	नमो नमः
नमो अश्वेभ्यः	अश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यः
अश्वपतिभ्यश्च	अश्वपतिभ्य इत्यश्वपति – भ्यः
च वः	वो नमः
नम इति नमः	

16.4 श्री रुद्रक्रमः – चतुर्थः अनुवाकः

नम आव्याधिनीभ्यः	आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यः
आव्याधिनीभ्य इत्या – व्याधिनीभ्यः	विविद्ध्यन्तीभ्यश्च
विविद्ध्यन्तीभ्य इति वि – विद्ध्यन्तीभ्यः	च वः
वो नमः	नमो नमः
नम उगणाभ्यः	उगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यः
तृꣳहतीभ्यश्च	च वः
वो नमः	नमो नमः
नमो गृत्सेभ्यः	गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यः
गृत्सपतिभ्यश्च	गृत्सपतिभ्य इति गृत्सपति – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमो व्रातेभ्यः
व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यः	व्रातपतिभ्यश्च
व्रातपतिभ्य इति व्रातपति – भ्यः	च वः
वो नमः	नमो नमः
नमो गणेभ्यः	गणेभ्यो गणपतिभ्यः

गणपतिभ्यश्च	गणपतिभ्य इति गणपति – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमो विरूपेभ्यः
विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यः	विरूपेभ्य इति वि – रूपेभ्यः
विश्वरूपेभ्यश्च	विश्वरूपेभ्य इति विश्व – रूपेभ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमो महद्भ्यः
महद्भ्यः क्षुल्लकेभ्यः	महद्भ्य इति महत् – भ्यः
क्षुल्लकेभ्यश्च	च वः
वो नमः	नमो नमः
नमो रथिभ्यः	रथिभ्यो ऽरथेभ्यः
रथिभ्य इति रथि – भ्यः	अरथेभ्यश्च
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमो रथेभ्यः
रथेभ्यो रथपतिभ्यः	रथपतिभ्यश्च
रथपतिभ्य इति रथपति – भ्यः	च वः
वो नमः	नमो नमः

नमः सेनाभ्यः	सेनाभ्य स्सेनानिभ्यः
सेनानिभ्यश्च	सेनानिभ्य इति सेनानि – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमः क्षत्तृभ्यः
क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यः	क्षत्तृभ्यः इति क्षत्तृ – भ्यः
सङ्ग्रहीतृभ्यश्च	सङ्ग्रहीतृभ्य इति सङ्ग्रहीतृ – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमस्तक्षभ्यः
तक्षभ्यो रथकारेभ्यः	तक्षभ्य इति तक्ष – भ्यः
रथकारेभ्यश्च	रथकारेभ्य इति रथ – कारेभ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमः कुलालेभ्यः
कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यः	कर्मारेभ्यश्च
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमः पुञ्जिष्टेभ्यः
पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यः	निषादेभ्यश्च
च वः	वो नमः

नमो नमः	नम इषुकृद्भ्यः
इषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्यः	इषुकृद्भ्य इतीषुकृत् – भ्यः
धन्वकृद्भ्यश्च	धन्वकृद्भ्य इति धन्वकृत् – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमो मृगयुभ्यः
मृगयुभ्यः श्वनिभ्यः	मृगयुभ्य इति मृगयु – भ्यः
श्वनिभ्यश्च	श्वनिभ्य इति श्वनि – भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमः श्वभ्यः
श्वभ्य श्श्वपतिभ्यः	श्वभ्यः इति श्व – भ्यः
श्वपतिभ्यश्च	श्वपतिभ्य इति श्वपति – भ्यः
च वः	वो नमः
नम इति नमः	

16.5 श्री रुद्रक्रमः पञ्चमः अनुवाकः

नमो भवाय	भवाय च
च रुद्राय	रुद्राय च
च नमः	नमश्शर्वाय

शर्वाय च	च पशुपतये
पशुपतये च	पशुपतय इति पशु – पतये
च नमः	नमो नीलग्रीवाय
नीलग्रीवाय च	नीलग्रीवायेति नील – ग्रीवाय
च शितिकण्ठाय	शितिकण्ठाय च
शितिकण्ठायेति शिति – कण्ठाय	च नमः
नमः कपर्द्दिने >	कपर्द्दिने च
च व्युप्तकेशाय	व्युप्तकेशाय च
व्युप्तकेशायेति व्युप्त – केशाय	च नमः
नमः सहस्राक्षाय	सहस्राक्षाय च
सहस्राक्षायेति सहस्र – अक्षाय	च शतधन्वने
शतधन्वने च	शतधन्वन इति शत – धन्वने >
च नमः	नमो गिरिशाय
गिरिशाय च	च शिपिविष्टाय
शिपिविष्टाय च	शिपिविष्टायेति शिपि – विष्टाय
च नमः	नमो मीढुष्टमाय
मीढुष्टमाय च	मीढुष्टमायेति मीढुः – तमाय

चेषुमते	इषुमते च
इषुमत इतीषु – मते >	च नमः
नमो ह्रस्वाय	ह्रस्वाय च
च वामनाय	वामनाय च
च नमः	नमो बृहते
बृहते च	च वर्षीयसे
वर्षीयसे च	च नमः
नमो वृद्धाय	वृद्धाय च
च सम्ँवृध्द्वने	सम्ँवृध्द्वने च
सम्ँवृद्ध्वन इति सं – वृद्ध्वने	च नमः
नमो अग्रियाय	अग्रियाय च
च प्रथमाय	प्रथमाय च
च नमः	नम आशवे >
आशवे च	चाजिराय
अजिराय च	च नमः
नमः शीघ्रियाय	शीघ्रियाय च
च शीभ्याय	शीभ्याय च

च नमः	नम ऊर्म्याय
ऊर्म्याय च	चावस्वन्याय
अवस्वन्याय च	अवस्वन्यायेत्यव - स्वन्याय
च नमः	नमः स्रोतस्याय
स्रोतस्याय च	च द्वीप्याय
द्वीप्याय च	चेति च

16.6 श्री रुद्रक्रमः षष्ठः अनुवाकः

नमो ज्येष्ठाय	ज्येष्ठाय च
च कनिष्ठाय	कनिष्ठाय च
च नमः	नमः पूर्वजाय
पूर्वजाय च	पूर्वजायेति पूर्व - जाय
चापरजाय	अपरजाय च
अपरजायेत्यपर - जाय	च नमः
नमो मद्ध्यमाय	मद्ध्यमाय च
चापगल्भाय	अपगल्भाय च
अपगल्भायेत्यप - गल्भाय	च नमः
नमो जघन्याय	जघन्याय च

च बुद्ध्निनयाय	बुद्ध्निनयाय च
च नमः	नमस्सोभ्याय
सोभ्याय च	च प्रतिसर्याय
प्रतिसर्याय च	प्रतिसर्यायेति प्रति – सर्याय
च नमः	नमो याम्याय
याम्याय च	च क्षेम्याय
क्षेम्याय च	च नमः
नम उर्वर्याय	उर्वर्याय च
च खल्याय	खल्याय च
च नमः	नमः श्लोक्याय
श्लोक्याय च	चावसान्याय
अवसान्याय च	अवसान्यायेत्यव – सान्याय
च नमः	नमो वन्याय
वन्याय च	च कक्ष्याय
कक्ष्याय च	च नमः
नमः श्रवाय	श्रवाय च
च प्रतिश्रवाय	प्रतिश्रवाय च

प्रतिश्रवायेति प्रति - श्रवाय	च नमः
नम आशुषेणाय	आशुषेणाय च
आशुषेणायेत्याशु - सेनाय	चाशुरथाय
आशुरथाय च	आशुरथायेत्याशु - रथाय
च नमः	नमः शूराय
शूराय च	चावभिन्दते
अवभिन्दते च	अवभिन्दत इत्यव - भिन्दते
च नमः	नमो वर्मिणे >
वर्मिणे च	च वरूथिने >
वरूथिने च	च नमः
नमो बिल्मिने >	बिल्मिने च
च कवचिने >	कवचिने च
च नमः	नमः श्रुताय
श्रुताय च	च श्रुतसेनाय
श्रुतसेनाय च	श्रुतसेनायेति श्रुत - सेनाय
चेति च	

16.7 श्री रुद्रक्रमः – सप्तमः अनुवाकः

नमो दुन्दुभ्याय	दुन्दुभ्याय च
चाहनन्याय	आहनन्याय च
आहनन्यायेत्या – हनन्याय	च नमः
नमो धृष्णवे	धृष्णवे च
च प्रमृशाय	प्रमृशाय च
प्रमृशायेति प्र – मृशाय	च नमः
नमो दूताय	दूताय च
च प्रहिताय	प्रहिताय च
प्रहितायेति प्र – हिताय	च नमः
नमो निषङ्गिणे >	निषङ्गिणे च
निषङ्गिण इति नि – सङ्गिने >	चेषुधिमते >
इषुधिमते च	इषुधिमत इतीषुधि – मते >
च नमः	नम स्तीक्ष्णेषवे
तीक्ष्णेषवे च	तीक्ष्णेषव इति तीक्ष्ण – इषवे >
चायुधिने >	आयुधिने च
च नमः	नमः स्वायुधाय

स्वायुधाय च	स्वायुधायेति सु – आयुधाय
च सुधन्वने	सुधन्वने च
सुधन्वन इति सु – धन्वने	च नमः
नमस्स्रुत्याय	स्रुत्याय च
च पथ्याय	पथ्याय च
च नमः	नमः काट्याय
काट्याय च	च नीप्याय
नीप्याय च	च नमः
नमः सूद्याय	सूद्याय च
च सरस्याय	सरस्याय च
च नमः	नमो नाद्याय
नाद्याय च	च वैशन्ताय
वैशन्ताय च	च नमः
नमः कूप्याय	कूप्याय च
चावट्याय	अवट्याय च
च नमः	नमो वर्ष्याय
वर्ष्याय च	चावर्ष्याय

अवर्ष्याय च	च नमः
नमो मेघ्याय	मेघ्याय च
च विद्युत्याय	विद्युत्याय च
विद्युत्यायेति वि – द्युत्याय	च नमः
नम ईद्ध्रियाय	ईद्ध्रियाय च
चातप्याय	आतप्याय च
आतप्यायेत्या – तप्याय	च नमः
नमो वात्याय	वात्याय च
च रेष्मियाय	रेष्मियाय च
च नमः	नमो वास्तव्याय
वास्तव्याय च	च वास्तुपाय
वास्तुपाय च	वास्तुपायेति वास्तु – पाय
चेति च	

16.8 श्री रुद्रक्रमः – अष्टमः अनुवाकः

नमः सोमाय	सोमाय च
च रुद्राय	रुद्राय च
च नमः	नमस्ताम्राय

ताम्राय च	चारुणाय
अरुणाय च	च नमः
नमश्शङ्गाय	शङ्गाय च
च पशुपतये	पशुपतये च
पशुपतय इति पशु – पतये	च नमः
नम उग्राय	उग्राय च
च भीमाय	भीमाय च
च नमः	नमो अग्रेवधाय
अग्रेवधाय च	अग्रेवधायेत्यग्रे – वधाय
च दूरेवधाय	दूरेवधाय च
दूरेवधायेति दूरे – वधाय	च नमः
नमो हन्त्रे	हन्त्रे च
च हनीयसे	हनीयसे च
च नमः	नमो वृक्षेभ्यः
वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः	हरिकेशेभ्यो नमः
हरिकेशेभ्य इति हरि – केशेभ्यः	नमस्ताराय
ताराय नमः	नमः शंभवे >

शंभवे च	शंभव इति शं - भवे >
च मयोभवे >	मयोभवे च
मयोभव इति मयः - भवे >	च नमः
नमश्शङ्कराय	शङ्कराय च
शङ्करायेति शं - कराय	च मयस्कराय
मयस्कराय च	मयस्करायेति मयः - कराय
च नमः	नमश्शिवाय
शिवाय च	च शिवतराय
शिवतराय च	शिवतरायेति शिव - तराय
च नमः	नमस्तीर्थ्याय
तीर्थ्याय च	च कूल्याय
कूल्याय च	च नमः
नमः पार्याय	पार्याय च
चावार्याय	अवार्याय च
च नमः	नमः प्रतरणाय
प्रतरणाय च	प्रतरणायेति प्र - तरणाय
चोत्तरणाय	उत्तरणाय च

उत्तरणायेत्युत् - तरणाय	च नमः
नम आतार्याय	आतार्याय च
आतार्यायेत्या - तार्याय	चालाद्याय
आलाद्याय च	आलाद्यायेत्या - लाद्याय
च नमः	नमश्शष्प्याय
शष्प्याय च	च फेन्याय
फेन्याय च	च नमः
नमः सिकत्याय	सिकत्याय च
च प्रवाह्याय	प्रवाह्याय च
प्रवाह्यायेति प्र - वाह्याय	चेति च

16.9 श्रीरुद्रक्रमः - नवमः अनुवाकः

नम इरिण्याय	इरिण्याय च
च प्रपथ्याय	प्रपथ्याय च
प्रपथ्यायेति प्र - पथ्याय	च नमः
नमः कि॒ꣳशिलाय	कि॒ꣳशिलाय च
च क्षयणाय	क्षयणाय च
च नमः	नमः कपर्द्दिने >

कपर्द्दिने च	च पुलस्तये >
पुलस्तये च	च नमः
नमो गोष्ठ्याय	गोष्ठ्याय च
गोष्ठ्यायेति गो – स्थ्याय	च गृह्याय
गृह्याय च	च नमः
नमस्तल्प्याय	तल्प्याय च
च गेह्याय	गेह्याय च
च नमः	नमः काट्याय
काट्याय च	च गह्वरेष्ठाय
गह्वरेष्ठाय च	गह्वरेष्ठायेति गह्वरे – स्थाय
च नमः	नमो ह्रदय्याय
ह्रदय्याय च	च निवेष्प्याय
निवेष्प्याय च	निवेष्प्यायेति नि – वेष्प्याय
च नमः	नमः पा॒ꣳसव्याय
पा॒ꣳसव्याय च	च रजस्याय
रजस्याय च	च नमः
नमश्शुष्क्याय	शुष्क्याय च

च हरित्याय	हरित्याय च
च नमः	नमो लोप्याय
लोप्याय च	चोलप्याय
उलप्याय च	च नमः
नम ऊर्व्याय	ऊर्व्याय च
च सूर्म्याय	सूर्म्याय च
च नमः	नमः पर्ण्याय
पर्ण्याय च	च पर्णशद्याय
पर्णशद्याय च	पर्णशद्यायेति पर्ण - शद्याय
च नमः	नमोऽपगुरमाणाय
अपगुरमाणाय च	अपगुरमाणायेत्यप - गुरमाणाय
चाभिघ्नते	अभिघ्नते च
अभिघ्नत इत्यभि - घ्नते	च नमः
नम आक्खिदते	आक्खिदते च
आक्खिदत इत्या - खिदते	च प्रक्खिदते
प्रक्खिदते च	प्रक्खिदत इति प्र - खिदते
च नमः	नमो वः

वः किरिकेभ्यः	किरिकेभ्यो देवानां >
देवाना७ हृदयेभ्यः	हृदयेभ्यो नमः
नमो विक्षीणकेभ्यः	विक्षीणकेभ्यो नमः
विक्षीणकेभ्य इति वि – क्षीणकेभ्यः	नमो विचिन्वत्केभ्यः
विचिन्वत्केभ्यो नमः	विचिन्वत्केभ्य इति वि – चिन्वत्केभ्यः
नम आनिर्हतेभ्यः	आनिर्हतेभ्यो नमः
आनिर्हतेभ्य इत्यानिः – हतेभ्यः	नम आमीवत्केभ्यः
आमीवत्केभ्य इत्या – मीवत्केभ्यः	

16.10 श्रीरुद्रक्रमः– दशमः अनुवाकः

द्रापे अन्धसः	अन्धसस्पते
पते दरिद्रत्	दरिद्रन्नीललोहित
नीललोहितेति नील – लोहित	एषां पुरुषाणां
पुरुषाणामेषां	एषां पशूनां
पशूनां मा	मा भेः
भेर्मा	माऽरः
अरोमो	मो एषां

मो इति मो	एषां किं
किञ्चन	च नाममत्
आममदित्या ममत्	या ते >
ते रुद्र	रुद्र शिवा
शिवा तनूः	तनूश्शिवा
शिवा विश्वाहभेषजी	विश्वाहभेषजीति विश्वाह – भेषजी >
शिवा रुद्रस्य	रुद्रस्य भेषजी
भेषजी तया >	तया नः
नो मृड	मृड जीवसे >
जीवस इति जीवसे >	इमा७ रुद्राय
रुद्राय तवसे >	तवसे कपर्दिने >
कपर्दिने क्षयद्वीराय	क्षयद्वीराय प्र
क्षयद्वीरायेति क्षयत् – वीराय	प्रभरामहे
भरामहे मतिं	मतिमिति मतिं
यथा नः	नश्शं
शमसत्	असद्विपदे >

द्विपदे चतुष्पदे	द्विपद इति द्वि - पदे >
चतुष्पदे विश्वं >	चतुष्पद इति चतुः - पदे >
विश्वं पुष्टं	पुष्टं ग्रामे >
ग्रामे अस्मिन्	अस्मिन्ननातुरं
अनातुरमित्यना - तुरं >	मृडानः
नो रुद्र	रुद्रो त
उत नः	नो मयः
मयस्कृधि	कृधि क्षयद्वीराय
क्षयद्वीराय नमसा	क्षयद्वीरायेति क्षयत् - वीराय
नमसा विधेम	विधेम ते >
त इति ते	यच्छं
शञ्च	च योः
योश्च	च मनुः
मनुरायजे	आयजे पिता
आयज इत्या - यजे	पिता तत्
तदश्याम	अश्याम तव
तव रुद्र	रुद्र प्रणीतौ

प्रणीताविति प्र – नीतौ >	मा नः
नो महान्तं >	महान्तमुत
उत मा	मा नः
नो अर्भकं	अर्भकं मा
मा नः	न उक्षन्तं
उक्षन्त मुत	उत मा
मा नः	न उक्षितं
उक्षितमित्युक्षितं	मा नः
नो वधीः >	वधीः पितरं >
पितरं मा	मोत
उत मातरं >	मातरं प्रियाः
प्रिया मा	मा नः
नस्तनुवः	तनुवो रुद्र
रुद्र रीरिषः	रीरिषः इति रीरिषः
मा नः	नस्तोके
तोके तनये	तनये मा
मा नः	न आयुषि

आयुषि मा	मा नः
नो गोषु	गोषु मा
मा नः	नो अश्वेषु
अश्वेषु रीरिषः	रीरिष इति रीरिषः
वीरान्मा	मा नः
नो रुद्र	रुद्र भामितः
भामितो वधीः	वधी र्हविष्मन्तः
हविष्मन्तो नमसा	नमसा विधेम
विधेम ते >	त इति ते
आरात्ते >	ते गोघ्ने
गोघ्न उत	गोघ्न इति गो – घ्ने
उत पूरुषघ्ने	पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय
पूरुषघ्न इति पूरुष – घ्ने	क्षयद्वीराय सुम्नं
क्षयद्वीरायेति क्षयत् – वीराय	सुम्नमस्मे
अस्मे ते >	अस्मे इत्यस्मे
ते अस्तु	अस्त्वित्यस्तु
रक्षा च	च नः

नो अधि	अधि च
च देव	देव ब्रूहि
ब्रूह्यध	अधा च
च नः	नः शर्म
शर्म यच्छ	यच्छ द्विबर्हाः >
द्विबर्हा इति द्वि – बर्हाः >	स्तुहि श्रुतं
श्रुतं गर्त्तसदं >	गर्त्तसदं युवानं
गर्त्तसदमिति गर्त्त – सदं >	युवानं मृगं
मृगन्न	न भीमं
भीम मुपहत्नुं	उपहत्नुमुग्रं
उग्रमित्युग्रं	मृडा जरित्रे
जरित्रे रुद्र	रुद्र स्तवानः
स्तवानो अन्यं	अन्यन्ते >
ते अस्मत्	अस्मन्नि
नि वपन्तु	वपन्तु सेनाः >
सेना इति सेनाः >	परिणः
नो रुद्रस्य	रुद्रस्य हेतिः

हेति वृंणक्तु	वृणक्तु परि
परि त्वेषस्य	त्वेषस्य दुर्मतिः
दुर्मतिरघायोः	दुर्मतिरिति दुः – मतिः
अघायोरित्यघ – योः	अवस्थिरा
स्थिरा मघवद्भ्यः	मघवद्भ्यः तनुष्व
मघवद्भ्य इति मघवत् – भ्यः	तनुष्व मीढ्वः
मीढ्व स्तोकाय	तोकाय तनयाय
तनयाय मृडय	मृडयेति मृडय
मीढुष्टम शिवतम	मीढुष्टमेति मीढुः – तम
शिवतम शिवः	शिवतमेति शिव – तम
शिवो नः	नस्सुमनाः >
सुमना भव	सुमना इति सु – मनाः >
भवेति भव	परमे वृक्षे
वृक्ष आयुधं	आयुधं निधाय
निधाय कृत्तिं >	निधायेति नि – धाय
कृत्तिं ँवसानः	वसान आ
आ चर	चर पिनाकं

पिनाकं बिभ्रत्	बिभ्रदा
आ गहि	गहीति गहि
विकिरिद विलोहित	विकिरिदेति वि – किरिद
विलोहित नमः	विलोहितेति वि – लोहित
नमस्ते	ते अस्तु
अस्तु भगवः	भगव इति भग – वः
यास्ते >	ते सहस्रं >
सहस्रꣳ हेतयः	हेतयो ऽन्यं
अन्यमस्मत्	अस्मन्नि
निवपन्तु	वपन्तु ताः
ता इति ताः	सहस्राणि सहस्रधा
सहस्रधा बाहुवोः	सहस्रधेति सहस्र – धा
बाहुवोस्तव	तव हेतयः
हेतय इति हेतयः	तासामीशानः
ईशानो भगवः	भगवः पराचीना >
भगव इति भग – वः	पराचीना मुखा >
मुखा कृधि	कृधीति कृधि

16.11 श्री रुद्रक्रमः – एकादशः अनुवाकः

सहस्राणि सहस्रशः	सहस्रशो ये
सहस्रश इति सहस्र – शः	ये रुद्राः
रुद्रा अधि	अधि भूम्यां >
भूम्यामिति भूम्यां >	तेषा॒ँ सहस्रयोजने
सहस्रयोजनेऽव	सहस्रयोजन इति सहस्र – योजने
अव धन्वानि	धन्वानि तन्मसि
तन्मसीति तन्मसि	अस्मिन् महति
महत्यर्णवे	अर्णवेऽन्तरिक्षे
अन्तरिक्षे भवाः	भवा अधि
अधीत्यधि	नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः >
नीलग्रीवा इति नील – ग्रीवाः >	शितिकण्ठाः शर्वाः
शितिकण्ठा इति शिति – कण्ठाः >	शर्वा अधः
अधः क्षमाचराः	क्षमाचरा इति क्षमाचराः
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः >	नीलग्रीवा इति नील – ग्रीवाः >
शितिकण्ठा दिवं >	शितिकण्ठा इति शिति – कण्ठाः>
दिव॒ँ रुद्राः	रुद्रा उपश्रिताः

उपश्रिता इत्युप – श्रिताः >	ये वृक्षेषु
वृक्षेषु सस्पिञ्जराः	सस्पिञ्जरा नीलग्रीवाः
नीलग्रीवा विलोहिताः	नीलग्रीवा इति नील – ग्रीवाः >
विलोहिता इति वि –लोहिताः >	ये भूतानां >
भूतानामधिपतयः	अधिपतयो विशिखासः
अधिपतय इत्यधि – पतयः	विशिखासः कपर्दिनः
विशिखास इति वि – शिखासः	कपर्दिन इति कपर्दिनः
ये अन्नेषु	अन्नेषु विविद्ध्यन्ति
विविद्ध्यन्ति पात्रेषु	विविद्ध्यन्तीति वि – विद्ध्यन्ति
पात्रेषु पिबतः	पिबतो जनान्
जनानिति जनान्	ये पथां
पथां पथिरक्षयः	पथिरक्षय ऐलबृदाः
पथिरक्षय इति पथि – रक्षयः	ऐलबृदा यव्युधः
यव्युध इति यव्युधः	ये तीर्थानि
तीर्थानि प्रचरन्ति	प्रचरन्ति सृकावन्तः
प्रचरन्तीति प्र – चरन्ति	सृकावन्तो निषङ्गिणः
सृकावन्त इति सृका – वन्तः	निषङ्गिण इति नि – सङ्गिनः

य एतावन्तः	एतावन्तश्च
च भूयाꣳसः	भूयाꣳसश्च
च दिशः	दिशो रुद्राः
रुद्रा वितस्थिरे	वितस्थिर इति वि – तस्थिरे
तेषाꣳ सहस्रयोजने	सहस्रयोजनेऽव
सहस्रयोजन इति सहस्र – योजने	अव धन्वानि
धन्वानि तन्मसि	तन्मसीति तन्मसि
नमो रुद्रेभ्यः	रुद्रेभ्यो ये
ये पृथिव्यां	पृथिव्यां ँये
येऽन्तरिक्षे	अन्तरिक्षे ये
ये दिवि	दिवि येषां >
येषामन्नं >	अन्नं वातः
वातो वर्.षं	वर्.षमिषवः
इषवस्तेभ्यः	तेभ्यो दश
दश प्राचीः >	प्राचीर्दश
दश दक्षिणा	दक्षिणा दश
दश प्रतीचीः >	प्रतीचीर्दश

दशोदीचीः	उदीचीर्दश
दशोद्र्ध्वाः	ऊद्र्ध्वास्तेभ्यः
तेभ्यो नमः	नमस्ते
ते नः	नो मृडयन्तु
मृडयन्तु ते	ते यं
यं द्विष्मः	द्विष्मो यः
यश्च	च नः
नो द्वेष्टि	द्वेष्टि तं
तं ँवः	वो जंभे
जंभे दधामि	दधामीति दधामि

16.12 त्र्यंबकं ँयजामहे

त्र्यंबकं ँयजामहे	त्र्यंबकमिति त्रि - अंबकं >
यजामहे सुगन्धिं	सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं
सुगन्धिमिति सु - गन्धिं	पुष्टिवर्द्धनमिति पुष्टि - वर्द्धनं
उर्वारुकमिव	इव बन्धनात्
बन्धनान् मृत्योः	मृत्योर्मुक्षीय
मुक्षीय मा	माऽमृतात् >

अमृतातित्यमृतात् >	यो रुद्रः
रुद्रो अग्नौ	अग्नौ यः
यो अफ्सु	अफ्सु यः
अफ्स्वित्यप् - सु	य ओषधीषु
ओषधीषु यः	यो रुद्रः
रुद्रो विश्वा >	विश्वा भुवना
भुवनाऽऽविवेश	आविवेश तस्मै >
आविवेशेत्या - विवेश	तस्मै रुद्राय
रुद्राय नमः	नमो अस्तु
अस्त्वित्यस्तु	

17.श्री चमक क्रमः

17.1 श्री चमक क्रमः – प्रथमः अनुवाकः

अग्ना॑विष्णू स॒जो॑षसा	अग्ना॑विष्णू॒ इत्य॒ग्ना᳚ – वि॒ष्णू॒ >
स॒जोष॑से॒माः	स॒जोष॒से॑ति स – जोष॑सा
इ॒मा व॑र्द्धन्तु	व॒र्द्ध॒न्तु॒ वां॒ >
वा॒ङ्गि॑रः	गि॒र इति॒ गि॑रः
द्यु॒म्नैर्वा॑जेभिः	वाजे॑भि॒रा
आग॑तं	ग॒त॒मि॑ति गतं
वा॑जश्च	च॒ मे॒ >
मे॒ प्र॒स॒वः	प्र॒स॒व॑श्च
प्र॒स॒व इति॑ प्र – स॒वः	च॒ मे॒ >
मे॒ प्र॑यतिः	प्र॑यतिश्च
प्र॑यति॒रि॒ति प्र – य॒ति॒ः	च॒ मे॒ >
मे॒ प्रसि॑तिः	प्रसि॑तिश्च
प्रसि॑ति॒रि॒ति प्र – सि॒ति॒ः	च॒ मे॒ >
मे॒ धी॒तिः	धी॒तिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ क्रतु॑ः

क्रतुश्च	च मे >
मे स्वरः	स्वरश्च
च मे >	मे श्लोकः
श्लोकश्च	च मे >
मे श्रावः	श्रावश्च
च मे >	मे श्रुतिः
श्रुतिश्च	च मे >
मे ज्योतिः	ज्योतिश्च
च मे >	मे सुवः
सुवश्च	च मे >
मे प्राणः	प्राणश्च
प्राण इति प्र – अनः	च मे >
मेऽपानः	अपानश्च
अपान इत्यप – अनः	च मे >
मे व्यानः	व्यानश्च
व्यान इति वि – अनः	च मे >
मेऽसुः	असुश्च

च मे >	मे चित्तं
चित्तं च	च मे >
म आधीतं	आधीतं च
आधीतमित्या – धीतं >	च मे >
मे वाक्	वाक्च
च मे >	मे मनः
मनश्च	च मे >
मे चक्षुः	चक्षुश्च
च मे >	मे श्रोत्रं >
श्रोत्रं च	च मे >
मे दक्षः	दक्षश्च
च मे >	मे बलं >
बलं च	च मे >
म ओजः	ओजश्च
च मे >	मे सहः
सहश्च	च मे >
म आयुः	आयुश्च

च मे >	मे जरा
जरा च	च मे >
म आत्मा	आत्मा च
च मे >	मे तनूः
तनूश्च	च मे >
मे शर्म	शर्म च
च मे >	मे वर्म
वर्म च	च मे >
मेऽङ्गानि	अङ्गानि च
च मे >	मेऽस्थानि
अस्थानि च	च मे >
मे परूꣳषि	परूꣳषि च
च मे >	मे शरीराणि
शरीराणि च	च मे >
म इति मे	

17.2 श्री चमक क्रमः – द्वितीयः अनुवाकः

ज्यैष्ठ्यं च	च मे >
म आधिपत्यं	आधिपत्यं च
आधिपत्यमित्याधि – पत्यं >	च मे >
मे मन्युः	मन्युश्च
च मे >	मे भामः
भामश्च	च मे >
मेऽमः	अमश्च
च मे >	मेऽंभः
अंभश्च	च मे >
मे जेमा	जेमा च
च मे >	मे महिमा
महिमा च	च मे >
मे वरिमा	वरिमा च
च मे >	मे प्रथिमा
प्रथिमा च	च मे >
मे वर्ष्मा	वर्ष्मा च

च मे >	मे द्राघुया
द्राघुया च	च मे >
मे वृद्धं	वृद्धं च
च मे >	मे वृद्धिः
वृद्धिश्च	च मे >
मे सत्यं	सत्यं च
च मे >	मे श्रद्धा
श्रद्धा च	श्रद्धेति श्रत् – धा
च मे >	मे जगत्
जगच्च	च मे >
मे धनं >	धनं च
च मे >	मे वशः
वशश्च	च मे >
मे त्विषिः	त्विषिश्च
च मे >	मे क्रीडा
क्रीडा च	च मे >
मे मोदः	मोदश्च

च मे >	मे जातं
जातं च	च मे >
मे जनिष्यमाणं	जनिष्यमाणं च
च मे >	मे सूक्तं
सूक्तं च	सूक्तमिति सु – उक्तं
च मे >	मे सुकृतं
सुकृतं च	सुकृतमिति सु – कृतं
च मे >	मे वित्तं
वित्तं च	च मे >
मे वेद्यं >	वेद्यं च
च मे >	मे भूतं
भूतं च	च मे >
मे भविष्यत्	भविष्यच्च
च मे >	मे सुगं
सुगं च	सुगमिति सु – गं
च मे >	मे सुपथं >
सुपथं च	सुपथमिति सु – पथं >

च मे >	म ऋद्धं
ऋद्धं च	च मे >
म ऋद्धिः	ऋद्धिश्च
च मे >	मे क्लृप्तं
क्लृप्तं च	च मे >
मे क्लृप्तिः	क्लृप्तिश्च
च मे >	मे मतिः
मतिश्च	च मे >
मे सुमतिः	सुमतिश्च
सुमतिरिति सु - मतिः	च मे >
म इति मे	

17.3 श्री चमक क्रम :- तृतीयः अनुवाकः

शं च	च मे >
मे मयः	मयश्च
च मे >	मे प्रियं
प्रियं च	च मे >
मेऽनुकामः	अनुकामश्च

अनुकाम इत्यनु - कामः	च मे >
मे कामः	कामश्च
च मे >	मे सौमनसः
सौमनसश्च	च मे >
मे भद्रं	भद्रं च
च मे >	मे श्रेयः
श्रेयश्च	च मे >
मे वस्यः	वस्यश्च
च मे >	मे यशः
यशश्च	च मे >
मे भगः	भगश्च
च मे >	मे द्रविणं
द्रविणं च	च मे >
मे यन्ता	यन्ता च
च मे >	मे धर्त्ता
धर्त्ता च	च मे >
मे क्षेमः	क्षेमश्च

च मे >	मे धृतिः
धृतिश्च	च मे >
मे विश्वं >	विश्वं च
च मे >	मे महः
महश्च	च मे >
मे सम्ँवित्	सम्ँविच्च
सम्ँविदिति सं – वित्	च मे >
मे ज्ञात्रं >	ज्ञात्रं च
च मे >	मे सूः
सूश्च	च मे >
मे प्रसूः	प्रसूश्च
प्रसूरिति प्र – सूः	च मे >
मे सीरं >	सीरं च
च मे >	मे लयः
लयश्च	च मे >
म ऋतं	ऋतं च
च मे >	मेऽमृतं >

अमृतं च	च मे >
मेऽयक्ष्मं	अयक्ष्मं च
च मे >	मेऽनामयत्
अनामयच्च	च मे >
मे जीवातुः	जीवातुश्च
च मे >	मे दीर्घायुत्वं
दीर्घायुत्वं च	दीर्घायुत्वमिति दीर्घायु – त्वं
च मे >	मेऽनमित्रं
अनमित्रं च	च मे >
मेऽभयं	अभयं च
च मे >	मे सुगं
सुगं च	सुगमिति सु – गं
च मे >	मे शयनं
शयनं च	च मे >
मे सूषा	सूषा च
सूषेति सु – उषा	च मे >
मे सुदिनं >	सुदिनं च

सुदिनमिति सु - दिनं >	च मे >
म इति मे	

17.4 श्री चमक क्रमः– चतुर्थः अनुवाकः

ऊर्क्च	च मे >
मे सूनृता >	सूनृता च
च मे >	मे पयः
पयश्च	च मे >
मे रसः	रसश्च
च मे >	मे घृतं
घृतं च	च मे >
मे मधु	मधु च
च मे >	मे सग्धिः
सग्धिश्च	च मे >
मे सपीतिः	सपीतिश्च
सपीतिरिति स - पीतिः	च मे >
मे कृषिः	कृषिश्च
च मे >	मे वृष्टिः

वृष्टिश्च	च मे >
मे जैत्रं >	जैत्रं च
च मे >	म औद्भिद्यं
औद्भिद्यं च	औद्भिद्यमित्यौत् – भिद्यं >
च मे >	मे रयिः
रयिश्च	च मे >
मे रायः	रायश्च
च मे >	मे पुष्टं
पुष्टं च	च मे >
मे पुष्टिः	पुष्टिश्च
च मे >	मे विभु
विभु च	विभ्विति वि – भु
च मे >	मे प्रभु
प्रभु च	प्रभ्विति प्र – भु
च मे >	मे बहु
बहु च	च मे >
मे भूयः	भूयश्च

च मे >	मे पूर्णं
पूर्णं च	च मे >
मे पूर्णतरं	पूर्णतरं च
पूर्णतरमिति पूर्ण – तरं >	च मे >
मेऽक्षितिः	अक्षितिश्च
च मे >	मे कूयवाः
कूयवाश्च	च मे >
मेऽन्नं >	अन्नं च
च मे >	मेऽक्षुत्
अक्षुच्च	च मे >
मे व्रीहयः	व्रीहयश्च
च मे >	मे यवाः >
यवाश्च	च मे >
मे माषाः >	माषाश्च
च मे >	मे तिलाः >
तिलाश्च	च मे >
मे मुद्गाः	मुद्गाश्च

च मे >	मे खल्वाः >
खल्वाश्च	च मे >
मे गोधूमाः >	गोधूमाश्च
च मे >	मे मसुराः >
मसुराश्च	च मे >
मे प्रियङ्गवः	प्रियङ्गवश्च
च मे >	मेऽणवः
अणवश्च	च मे >
मे श्यामाकाः >	श्यामाकाश्च
च मे >	मे नीवाराः >
नीवाराश्च	च मे >
म इति मे	

17.5 श्री चमक क्रमः– पञ्चमः अनुवाकः

अश्मा च	च मे >
मे मृत्तिका	मृत्तिका च
च मे >	मे गिरयः
गिरयश्च	च मे >

मे पर्वताः	पर्वताश्च
च मे >	मे सिकताः
सिकताश्च	च मे >
मे वनस्पतयः	वनस्पतयश्च
च मे >	मे हिरण्यं
हिरण्यं च	च मे >
मेऽयः	अयश्च
च मे	मे सीसं >
सीसं च	च मे >
मे त्रपु	त्रपुश्च
च मे >	मे श्यामं
श्यामं च	च मे >
मे लोहं	लोहं च
च मे >	मेऽग्निः
अग्निश्च	च मे >
म आपः	आपश्च
च मे >	मे वीरुधः

वीरुधश्च	च मे >
म ओषधयः	ओषधयश्च
च मे >	मे कृष्टपच्यं
कृष्टपच्यं च	कृष्टपच्यमिति कृष्ट – पच्यं
च मे >	मेऽकृष्टपच्यं
अकृष्टपच्यं च	अकृष्टपच्यमित्यकृष्ट – पच्यं
च मे >	मे ग्राम्याः
ग्राम्याश्च	च मे >
मे पशवः	पशव आरण्याः
आरण्याश्च	च यज्ञेन
यज्ञेन कल्पन्तां	कल्पन्तां ँवित्तं
वित्तं च	च मे >
मे वित्तिः	वित्तिश्च
च मे >	मे भूतं
भूतं च	च मे >
मे भूतिः	भूतिश्च
च मे >	मे वसु

वसु च	च मे >
मे वसतिः	वसतिश्च
च मे >	मे कर्म
कर्म च	च मे >
मे शक्तिः	शक्तिश्च
च मे >	मेऽर्थः
अर्थश्च	च मे >
म एमः	एमश्च
च मे >	म इतिः
इतिश्च	च मे >
मे गतिः	गतिश्च
च मे >	म इति मे

17.6 श्री चमकः क्रमः – षष्ठः अनुवाकः

अग्निश्च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे सोमः
सोमश्च	च मे >

म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे सविता
सविता च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे सरस्वती
सरस्वती च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे पूषा
पूषा च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे बृहस्पतिः
बृहस्पतिश्च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे मित्रः
मित्रश्च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे वरुणः

वरुणश्च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे त्वष्टा >
त्वष्टा च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे धाता
धाता च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे विष्णुः
विष्णुश्च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मेऽश्विनौ >
अश्विनौ च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	मे मरुतः
मरुतश्च	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च

च मे >	मे विश्वे >
विश्वे च	च मे >
मे देवाः	देवा इन्द्रः
इन्द्रश्च	च मे >
मे पृथिवी	पृथिवी च
च मे >	म इन्द्रः
इन्द्रश्च	च मे >
मेऽन्तरिक्षं	अन्तरिक्षं च
च मे >	म इन्द्रः
इन्द्रश्च	च मे >
मे द्यौः	द्यौश्च
च मे >	म इन्द्रः
इन्द्रश्च	च मे >
मे दिशः	दिशश्च
च मे >	म इन्द्रः
इन्द्रश्च	च मे >
मे मूर्द्धा	मूर्द्धा च

च मे >	म इन्द्रः
इन्द्रश्च	च मे >
मे प्रजापतिः	प्रजापतिश्च
प्रजापतिरिति प्रजा - पतिः	च मे >
म इन्द्रः	इन्द्रश्च
च मे >	म इति मे

17.7 श्री चमक क्रमः - सप्तमः अनुवाकः

अ॒ꣳशुश्च	च मे >
मे रश्मिः	रश्मिश्च
च मे >	मेऽदाभ्यः
अदाभ्यश्च	च मे >
मेऽधिपतिः	अधिपतिश्च
अधिपतिरित्यधि - पतिः	च मे >
म उपाꣳशुः	उपाꣳशुश्च
उपाꣳशुरित्युप - अꣳशुः	च मे >
मेऽन्तर्यामः	अन्तर्यामश्च
अन्तर्याम इत्यन्तः - यामः	च मे >

म ऐन्द्रवायवः	ऐन्द्रवायवश्च
ऐन्द्रवायव इत्यैन्द्र – वायवः	च मे >
मे मैत्रावरुणः	मैत्रावरुणश्च
मैत्रावरुण इति मैत्रा – वरुणः	च मे >
म आश्विनः	आश्विनश्च
च मे >	मे प्रतिप्रस्थानः
प्रतिप्रस्थानश्च	प्रतिप्रस्थान इति प्रति – प्रस्थानः
च मे	मे शुक्रः
शुक्रश्च	च मे >
मे मन्थी	मन्थी च
च मे >	म आग्रयणः
आग्रयणश्च	च मे >
मे वैश्वदेवः	वैश्वदेवश्च
वैश्वदेव इति वैश्व – देवः	च मे >
मे ध्रुवः	ध्रुवश्च
च मे >	मे वैश्वानरः
वैश्वानरश्च	च मे >

म ऋतुग्रहाः	ऋतुग्रहाश्च
ऋतुग्रहा इत्यृतु - ग्रहाः	च मे >
मेऽतिग्राह्याः >	अतिग्राह्याश्च
अतिग्राह्या इत्यति - ग्राह्याः >	च मे >
म ऐन्द्राग्नः	ऐन्द्राग्नश्च
ऐन्द्राग्न इत्यैन्द्र - अग्नः	च मे >
मे वैश्वदेवः	वैश्वदेवश्च
वैश्वदेव इति वैश्व - देवः	च मे >
मे मरुत्वतीयाः >	मरुत्वतीयाश्च
च मे >	मे माहेन्द्रः
माहेन्द्रश्च	माहेन्द्र इति माहा - इन्द्रः
च मे >	म आदित्यः
आदित्यश्च	च मे >
मे सावित्रः	सावित्रश्च
च मे >	मे सारस्वतः
सारस्वतश्च	च मे >
मे पौष्णः	पौष्णश्च

च मे >	मे पात्नीवतः
पात्नीवतश्च	पात्नीवत इति पात्नी – वतः
च मे >	मे हारियोजनः
हारियोजनश्च	हारियोजन इति हारि – योजनः
च मे >	म इति मे

17.8 श्री चमक क्रमः – अष्टमः अनुवाकः

इद्ध्मश्च	च मे >
मे बर्हिः	बर्हिश्च
च मे >	मे वेदिः
वेदिश्च	च मे >
मे धिष्णियाः	धिष्णियाश्च
च मे >	मे स्रुचः
स्रुचश्च	च मे >
मे चमसाः	चमसाश्च
च मे >	मे ग्रावाणः
ग्रावाणश्च	च मे >
मे स्वरवः	स्वरवश्च

च मे >	म उपरवाः
उपरवाश्च	उपरवा इत्युप – रवाः
च मे >	मेऽधिषवणे
अधिषवणे च	अधिषवणे इत्यधि – सवने
च मे >	मे द्रोणकलशः
द्रोणकलशश्च	द्रोणकलश इति द्रोण – कलशः
च मे >	मे वायव्यानि
वायव्यानि च	च मे >
मे पूतभृत्	पूतभृच्च
पूतभृदिति पूत – भृत्	च मे >
म आधवनीयः	आधवनीयश्च
आधवनीय इत्या – धवनीयः	च मे >
म आग्नीद्ध्रं >	आग्नीद्ध्रं च
आग्नीद्ध्रमित्याग्नि – इद्ध्रं >	च मे >
मे हविर्द्धानं >	हविर्द्धानं च
हविर्द्धानमिति हविः – धानं >	च मे >
मे गृहाः	गृहाश्च

च मे >	मे सदः
सदश्च	च मे >
मे पुरोडाशाः >	पुरोडाशाश्च
च मे >	मे पचताः
पचताश्च	च मे >
मेऽवभृथः	अवभृथश्च
अवभृथ इत्यव – भृथः	च मे >
मे स्वगाकारः	स्वगाकारश्च
स्वगाकार इति स्वगा – कारः	च मे >
म इति मे	

17.9 श्री चमक क्रमः – नवमः अनुवाकः

अग्निश्च	च मे >
मे घर्मः	घर्मश्च
च मे >	मेऽर्कः
अर्कश्च	च मे >
मे सूर्यः	सूर्यश्च
च मे >	मे प्राणः

प्राणश्च	प्राण इति प्र – अनः
च मे >	मेऽश्वमेधः
अश्वमेधश्च	अश्वमेध इत्यश्व – मेधः
च मे >	मे पृथिवी
पृथिवी च	च मे >
मेऽदितिः	अदितिश्च
च मे >	मे दितिः
दितिश्च	च मे >
मे द्यौः	द्यौश्च
च मे >	मे शक्वरीः
शक्वरीरङ्गुलयः	अङ्गुलयो दिशः
दिशश्च	च मे >
मे यज्ञेन	यज्ञेन कल्पन्तां
कल्पन्तामृक्	ऋक्च
च मे >	मे साम
साम च	च मे >
मे स्तोमः	स्तोमश्च

च मे >	मे यजुः
यजुश्च	च मे >
मे दीक्षा	दीक्षा च
च मे >	मे तपः
तपश्च	च मे >
म ऋतुः	ऋतुश्च
च मे >	मे व्रतं
व्रतं च	च मे >
मेऽहोरात्रयोः >	अहोरात्रयो वृष्ट्या
अहोरात्रयोरित्यहः – रात्रयोः >	वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे
बृहद्रथन्तरे च	बृहद्रथन्तरे इति बृहत् – रथन्तरे
च मे >	मे यज्ञेन
यज्ञेन कल्पेतां	कल्पेतामिति कल्पेतां

17.10 श्री चमक क्रमः – दशमः अनुवाकः

गर्भाश्च	च मे >
मे वथ्साः	वथ्साश्च
च मे >	मे त्र्यविः

त्र्यविश्च	त्र्यविरिति त्रि - अविः
च मे >	मे त्र्यवी
त्र्यवी च	त्र्यवीति त्रि - अवी
च मे >	मे दित्यवाट्
दित्यवाट् च	दित्यवाडिति दित्य - वाट्
च मे >	मे दित्यौही
दित्यौही च	च मे >
मे पञ्चाविः	पञ्चाविश्च
पञ्चाविरिति पञ्च - अविः	च मे >
मे पञ्चावी	पञ्चावी च
पञ्चावीति पञ्च - अवी	च मे >
मे त्रिवथ्सः	त्रिवथ्सश्च
त्रिवथ्स इति त्रि - वथ्सः	च मे >
मे त्रिवथ्सा	त्रिवथ्सा च
त्रिवथ्सेति त्रि - वथ्सा	च मे >
मे तुर्यवाट्	तुर्यवाट् च
तुर्यवाडिति तुर्य - वाट्	च मे >

मे तुर्यौही	तुर्यौही च
च मे >	मे पष्ठवात्
पष्ठवाच्च	पष्ठवादिति पष्ठ – वात्
च मे >	मे पष्ठौही
पष्ठौही च	च मे >
म उक्षा	उक्षा च
च मे >	मे वशा
वशा च	च मे >
म ऋषभः	ऋषभश्च
च मे >	मे वेहत्
वेहच्च	च मे >
मेऽनड्वान्	अनड्वान् च
च मे >	मे धेनुः
धेनुश्च	च मे >
म आयुः	आयुर्यज्ञेन
यज्ञेन कल्पतां	कल्पतां प्राणः
प्राणो यज्ञेन	प्राण इति प्र – अनः

यज्ञेन कल्पतां	कल्पतामपानः
अपानो यज्ञेन	अपान इत्यप – अनः
यज्ञेन कल्पतां	कल्पतां ँव्यानः
व्यानो यज्ञेन	व्यान इति वि – अनः
यज्ञेन कल्पतां	कल्पतां चक्षुः
चक्षु र्यज्ञेन	यज्ञेन कल्पतां
कल्पता७ श्रोत्रं >	श्रोत्रं ँयज्ञेन
यज्ञेन कल्पतां	कल्पतां मनः
मनो यज्ञेन	यज्ञेन कल्पतां
कल्पतां ँवाक्	वाग्यज्ञेन
यज्ञेन कल्पतां	कल्पतामात्मा
आत्मा यज्ञेन	यज्ञेन कल्पतां
कल्पतां ँयज्ञः	यज्ञो यज्ञेन
यज्ञेन कल्पतां	कल्पतामिति कल्पतां

17.11 श्री चमक क्रमः – एकादशः अनुवाकः

एका च	च मे >
मे तिस्रः	तिस्रश्च

च मे >	मे पञ्च
पञ्च च	च मे >
मे सप्त	सप्त च
च मे >	मे नव
नव च	च मे >
म एकादश	एकादश च
च मे >	मे त्रयोदश
त्रयोदश च	त्रयोदशेति त्रयः – दश
च मे >	मे पञ्चदश
पञ्चदश च	पञ्चदशेति पञ्च – दश
च मे >	मे सप्तदश
सप्तदश च	सप्तदशेति सप्त – दश
च मे >	मे नवदश
नवदश च	नवदशेति नव – दश
च मे >	म एकवि॒ꣳशतिः
एकवि॒ꣳशतिश्च	एकवि॒ꣳशतिरित्येक – वि॒ꣳशतिः
च मे >	मे त्रयोवि॒ꣳशतिः

त्रयोविꣳशतिश्च	त्रयोविꣳशतिरिति त्रयः - विꣳशतिः
च मे >	मे पञ्चविꣳशतिः
पञ्चविꣳशतिश्च	पञ्चविꣳशतिरिति पञ्च-विꣳशतिः
च मे >	मे सप्तविꣳशतिः
सप्तविꣳशतिश्च	सप्तविꣳशतिरिति सप्त-विꣳशतिः
च मे >	मे नवविꣳशतिः
नवविꣳशतिश्च	नवविꣳशतिरिति नव - विꣳशतिः
च मे >	म एकत्रिꣳशत्
एकत्रिꣳशच्च	एकत्रिꣳशदित्येक - त्रिꣳशत्
च मे >	मे त्रयस्त्रिꣳशत्
त्रयस्त्रिꣳशच्च	त्रयस्त्रिꣳशदिति त्रयः - त्रिꣳशत्
च मे >	मे चतस्रः
चतस्रश्च	च मे >
मेऽष्टौ	अष्टौ च
च मे >	मे द्वादश
द्वादश च	च मे >
मे षोडश	षोडश च

च मे >	मे वि॒ꣳशतिः
वि॒ꣳशतिश्च	च मे >
मे चतुर्वि॒ꣳशतिः	चतुर्वि॒ꣳशतिश्च
चतुर्वि॒ꣳशतिरिति चतुः – वि॒ꣳशतिः	च मे >
मेऽष्टावि॒ꣳशतिः	अष्टावि॒ꣳशतिश्च
अष्टावि॒ꣳशतिरित्यष्टा – वि॒ꣳशतिः	च मे >
मे द्वात्रि॒ꣳशत्	द्वात्रि॒ꣳशच्च
च मे >	मे षट्त्रि॒ꣳशत्
षट्त्रि॒ꣳशच्च	षट्त्रि॒ꣳशदिति षट् – त्रि॒ꣳशत्
च मे >	मे चत्वारि॒ꣳशत्
चत्वारि॒ꣳशच्च	च मे >
मे चतुश्चत्वारि॒ꣳशत्	चतुश्चत्वारि॒ꣳशच्च
चतुश्चत्वारि॒ꣳशदिति चतुः – चत्वारि॒ꣳशत्	च मे >
मेऽष्टाचत्वारि॒ꣳशत्	अष्टाचत्वारि॒ꣳशच्च
अष्टाचत्वारि॒ꣳशदित्यष्टा – चत्वारि॒ꣳशत्	च मे >

मे वाजः	वाजश्च
च प्रसवः	प्रसवश्च
प्रसव इति प्र - सवः	चापिजः
अपिजश्च	अपिज इत्यपि - जः
च क्रतुः	क्रतुश्च
च सुवः	सुवश्च
च मूर्द्धा	मूर्द्धा च
च व्यश्ञियः	व्यश्ञियश्च
व्यश्ञिय इति वि - अश्ञियः	चान्त्यायनः
आन्त्यायनश्च	चान्त्यः
अन्त्यश्च	च भौवनः
भौवनश्च	च भुवनः
भुवनश्च	चाधिपतिः
अधिपतिश्च	अधिपतिरित्यधि - पतिः
चेति च	

17.12 इडा देवहूः

इडा देवहूः	देवहूर्मनुः
देवहूरिति देव - हूः	मनुर्यज्ञनीः
यज्ञनी बृहस्पतिः	यज्ञनीरिति यज्ञ - नीः
बृहस्पति रुक्थामदानि	उक्थामदानि श॒ꣳसिषत्
उक्थामदानीत्युक्थ - मदानि	शꣳसिषद्विश्वे >
विश्वे देवाः	देवास्सूक्तवाचः
सूक्तवाचः पृथिवि	सूक्तवाच इति सूक्त - वाचः
पृथिवि मातः	मातर्मा
मा मा >	मा हिꣳसीः >
हिꣳसीर्मधु	मधु मनिष्ये
मनिष्ये मधु	मधु जनिष्ये
जनिष्ये मधु	मधु वक्ष्यामि
वक्ष्यामि मधु	मधु वदिष्यामि
वदिष्यामि मधुमतीं	मधुमतीं देवेभ्यः
मधुमतीमिति मधु - मतीं >	देवेभ्यो वाचं >
वाचमुद्यासं	उद्यासꣳ शुश्रूषेण्यां >

शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यः	मनुष्येभ्यस्तं
तं मा >	मा देवाः
देवा अवन्तु	अवन्तु शोभायै >
शोभायै पितरः	पितरोऽनु
अनुमदन्तु	मदन्त्विति मदन्तु

18.एकोनसप्तत्यधिक शतसंख्याक होमं

There are total 169 Svahaakaara Homas to be performed by Rutviks/ Achaaryaas. For 1 to 166 svaahaakaara Homa Ahutis the "yajamaana" has to say the same “prati svaahaakaara mantra as

"आदित्यात्मने रुद्राय इदं न मम" after each of these Homa Ahutis.

"Yajamaana prati svaahaa kaaram” is different for Homa Ahuti numbers 167,168 &169 and those are given after the corresponding Mantras.

1st ANUVAKA

1. नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।
नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥

2. यात इषुश्शिव तमा शिवं बभूव ते धनुः ।
शिवा शरव्याया तव तया नो रुद्र मृढय स्वाहा ॥

3. या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा–ऽपापकाशिनी ।
तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ता–भिचाकशीहि स्वाहा ॥

4. यामिषुं गिरिशन्त–हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।

शिवां गिरित्र तां कुरु माहिꣳसीः पुरुषं जगत् स्वाहा ॥

5. शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।

यथा नस्सर्व–मिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना असत् स्वाहा ॥

6. अध्यवो–चदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।

अहीꣳश्च सर्वान् जंभयन् सर्वाश्च यातुधान्यः स्वाहा ॥

7. असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुस्सुमंगलः । ये चेमाꣳ रुद्रा

अभितो दिक्षु श्रिता–स्सहस्रशो ऽवैषाꣳ हेड ईमहे स्वाहा ॥

8. असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।

उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन् उतहार्यः ।

उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा ॥

9. नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।

अथो ये अस्य सत्वानो–ऽहन्तेभ्यो–ऽकरं नमः स्वाहा ॥

10. प्रमुञ्च धन्वनस्त्व–मुभयो–रार्त्नियोर्ज्याम् ।

याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप स्वाहा ॥

11. अवतत्य धनुस्त्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुदे ।

निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नस्सुमना भव स्वाहा ॥

12. विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवाँ उत ।
अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निषंगथिः स्वाहा ॥

13. या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयाऽस्मान् विश्वतस्त्व-मयक्ष्मया परिब्भुज स्वाहा ॥

14. नमस्ते अस्त्वायु-धायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने स्वाहा ॥

15. परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः ।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तं स्वाहा ॥

2nd ANUVAKA

16. नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमः स्वाहा ॥

17. नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशभ्यः पशूनां पतये नमः स्वाहा ॥

18. नमस्सस्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमः स्वाहा ॥

19. नमो बभ्लुशाय विव्याधिने-ऽन्नानां पतये नमः स्वाहा ॥

20. नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः स्वाहा ॥

21. नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमः स्वाहा ॥

22. नमो रुद्रयाततविने क्षेत्राणां पतये नमः स्वाहा ॥

23. नमस्सूताया-हन्त्याय वनानां पतये नमः स्वाहा ॥

24. नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमः स्वाहा ॥

25. नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमः स्वाहा ॥

26. नमो भुवन्तये वारिवस्कृता-यौषधीनां पतये नमः स्वाहा ॥

27. नम उच्चैर्घोषाया-क्रन्तयते पत्तीनां पतये नमः स्वाहा ॥

28. नमः कृथ्स्नवीताय धावते सत्वनां पतये नमः स्वाहा ॥

3RD ANUVAKA

29. नमस्सहमनाय निव्याधीन आव्याधिनीनां पतये नमः स्वाहा ॥

30. नमः कुकुभाय निषङ्गिणे स्तेनानां पतये नमः स्वाहा ॥

31. नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमः स्वाहा ॥

32. नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमः स्वाहा ॥

33. नमो निचेरवे परिचरा-यारण्यानां पतये नमः स्वाहा ॥

34. नमस्सृकाविभ्यो जिघा॑सद्भ्यो मुष्णतां पतये नमः स्वाहा ॥

35. नमोऽसिमद्भ्यो नक्तं चरद्भ्यः प्रकृन्तानां पतये नमः स्वाहा ॥

36. नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमः स्वाहा ॥

37. नम इषुमद्भ्यो धन्वाविभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

38. नम आतन्वानेभ्यः प्रतिधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

39. नम आयच्छद्भ्यो विसृजद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

40. नमोऽस्यद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

41. नम आसीनेभ्य श्शयानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

42. नमस्स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

43. नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

44. नमस्सभाभ्य स्सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

45. नमो अश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

4th ANUVAKA

46. नम आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

47. नम उगणाभ्य स्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

48. नमो गृथ्सेभ्यो गृथ्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

49. नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

50. नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

51. नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

52. नमो महद्भ्यः क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

53. नमो रथिभ्योऽरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

54. नमो रथेभ्यो रथपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

55. नमस्सेनाभ्य स्सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

56. नमः क्षत्तृभ्य स्सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

57. नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

58. नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

59. नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

60. नम इषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

61. नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

62. नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

5th ANUVAKA

63. नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा ॥

64. नमश्शर्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥

65. नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥

66. नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥

67. नमस्सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥

68. नमो गिरिशाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ॥

69. नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥

70. नमो ह्रस्वाय च वामनाय च स्वाहा ॥

71. नमो बृहते च वर्षीयसे च स्वाहा ॥

72. नमो वृद्धाय च सम्वृध्वने च स्वाहा ॥

73. नमो अग्रियाय च प्रथमाय च स्वाहा ॥

74. नम आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥

75. नमश्शीघ्रियाय च शीभ्याय च स्वाहा ॥

76. नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा ॥

77. नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च स्वाहा ॥

6th ANUVAKA

78. नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥

79. नमः पूर्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥

80. नमो मध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥

81. नमो जघन्याय च बुध्नियाय च स्वाहा ॥

82. नमस्सोभ्याय च प्रतिसर्याय च स्वाहा ॥

83. नमो याम्याय च क्षेम्याय च स्वाहा ॥

84. नम उर्वर्याय च खल्याय च स्वाहा ॥

85. नमश्श्लोक्याय चावसान्याय च स्वाहा ॥

86. नमो वन्याय च कक्ष्याय च स्वाहा ॥

87. नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च स्वाहा ॥

88. नम आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥

89. नमश्शूराय चावभिन्दते च स्वाहा ॥

90. नमो वर्मिणे च वरूथिने च स्वाहा ॥

91. नमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥

92. नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥

7th ANUVAKA

93. नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च स्वाहा ॥

94. नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च स्वाहा ॥

95. नमो दूताय च प्रहिताय च स्वाहा ॥

96. नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥

97. नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ॥

98. नमस्स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा ॥

99. नमस्स्रुत्याय च पथ्याय च स्वाहा ॥

100. नमः काट्याय च नीप्याय च स्वाहा ॥

101. नमस्सूद्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥

102. नमो नाद्याय च वैशन्ताय च स्वाहा ॥

103. नमः कूप्याय चावट्याय च स्वाहा ॥

104.नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा ॥

105.नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च स्वाहा ॥

106.नम ईद्‌ध्रियाय चातप्याय च स्वाहा ॥

107.नमो वात्याय च रेष्मियाय च स्वाहा ॥

108.नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च स्वाहा ॥

8th ANUVAKA

109.नमस्सोमाय च रुद्राय च स्वाहा ॥

110.नमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा ॥

111.नमश्शङ्गाय च पशुपतये च स्वाहा ॥

112.नम उग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥

113.नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥

114.नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥

115.नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः स्वाहा ॥

116.नमस्तराय स्वाहा ॥

117.नमश्शंभवे च मयोभवे च स्वाहा ॥

118.नमश्शंकराय च मयस्कराय च स्वाहा ॥

119.नमश्शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥

120. नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च स्वाहा ॥

121. नमः पार्याय चावार्याय च स्वाहा ॥

122. नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥

123. नम आतार्याय चालाद्याय च स्वाहा ॥

124. नमश्शष्प्याय च फेन्याय च स्वाहा ॥

125. नमस्सिकत्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा ॥

9th ANUVAKA

126. नम इरिण्याय च प्रपत्थ्याय च स्वाहा ॥

127. नमः कि꣡ꣳशिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥

128. नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥

129. नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय च स्वाहा ॥

130. नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥

131. नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च स्वाहा ॥

132. नमो ह्रदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥

133. नमः पाꣳसव्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥

134. नमश्शुष्क्याय च हरित्ययाय च स्वाहा ॥

135. नमो लोप्याय चोलप्याय च स्वाहा ॥

136.नम ऊर्व्याय च सूर्म्याय च स्वाहा ॥

137.नमः पर्ण्याय च पर्ण्यशद्याय च स्वाहा ॥

138.नमोऽपगुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा ॥

139.नम आक्खिदते च प्रक्खिदते च स्वाहा ॥

140.नमो वः किरिकेभ्यो देवाना७ँ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥

141.नमो विक्षीणकेभ्यो देवाना७ँ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥

142.नमो विचिन्वत्केभ्यो देवाना७ँ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥

143.नम आनिर्हतेभ्यो देवाना७ँ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥

144.नम आमीवत्केभ्यो देवाना७ँ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥

10th ANUVAKA

145.द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रन्नीललोहित । एषां पुरुषाणामेषां
पशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किञ्चनाममत् स्वाहा ॥

146.या ते रुद्र शिवा तनूश्शिवा विश्वाहभेषजी ।
शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा ॥

147.इमा७ँ रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतिं ।
यथा नः शमसद्-द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे
अस्मि-न्ननातुर७ँ स्वाहा ॥

148.मृडा नो रुद्रो तनो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।
यच्छञ्च योश्च मनुरायजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतौ
स्वाहा ॥

149.मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितं ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र
रीरिषः स्वाहा ॥

150.मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु
रीरिषः । वीरान्मानो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तो नमसा
विधेम ते स्वाहा ॥

151.आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्न-मस्मे ते अस्तु ।
रक्षा च नो अधि च देव ब्रूह्यधा च नः शर्म
यच्छद्विबर्हाः स्वाहा ॥

152.स्तुहि श्रुतं गर्त्तसदं ँयुवानं मृगन्न भीम-मुपहत्नु-मुग्रं ।
मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवपन्तु सेनाः स्वाहा ॥

153.परिणो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्य-स्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय
मृडय स्वाहा ॥

154.मीढुष्टम शिवतम शिवो नस्सुमना भव । परमे वृक्ष आयुधन्निधाय
कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि स्वाहा ॥

155.विकिरिद विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्र॒ हेतयोऽन्य-मस्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा ॥

156.सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा ॥

11th ANUVAKA

157.सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यां ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

158.अस्मिन्-महत्यर्णवे-ऽन्तरिक्षे भवा अधि ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

159.नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

160.नीलग्रीवा-श्शितिकण्ठा दिव॒ रुद्रा उपश्रिताः ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

161.ये वृक्षेषु सस्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

162.ये भूताना–मधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

163.ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

164.ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा यव्युधः ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

165.ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

166.य एतावन्तश्च भूया॒सश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।
तेषा॒ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥

167.नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषव स्तेभ्यो दश प्राचीर्दश
दक्षिणा दशप्रतीची र्दशोदीची र्दशोर्ध्वा–स्तेभ्यो नमस्ते नो
मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि स्वाहा ॥
(पृथिवीद्भ्यो रुद्रेभ्य इदं न मम)

168.नमो रुद्रेभ्यो येन्तरिक्षे येषां वात इषव –स्तेभ्यो दश प्राचीर्दश
–दक्षिणा दशप्रतीची र्दशोदीची र्दशोर्ध्वा–स्तेभ्यो नमस्ते नो

मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि स्वाहा ॥

(अन्तरिक्षषद्भ्यो रुद्रेभ्य इदं न मम)

169.नमो रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्.षमिषव –स्तेभ्यो दशप्राचीर्दश–
दक्षिणा दशप्रतीची र्दशोदीची र्दशोर्ध्वा–स्तेभ्यो नमस्ते नो
मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि स्वाहा ॥

(दिविषद्भ्यो रुद्रेभ्य इदं न मम)

18.1 चमक होमः

For Chamak Homa Ahutis the "yajamaana" has to say the same "prati svaahaakaara mantra as –

"अग्नाविष्णुभ्याम् इदम् न मम । "

अग्नाविष्णू सजोषसेमा वर्द्धन्तु वां गिरः । द्युमनैर् वाजेभिरागतं ।

1. वाजश्च मे प्रसवश्च मे --- शरीराणि च मे स्वाहाः ।

2. जैष्ठ्यं च म -------- सुमतिश्च मे स्वाहाः ।

3. शं च मे --------- सुदिनं मे स्वाहाः ।

4. ऊर्क्च मे ----------- नीवाराश्च मे स्वाहाः ।

5. अश्मा च मे --------- गतिश्च मे स्वाहाः ।

6. अग्निश्च म इन्द्रश्च मे --- प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे स्वाहाः ।

7. अꣳशुश्च मे --------- हारियोजनश्च मे स्वाहाः ।

8. इद्मश्च मे ----------- स्वगाकारश्च मे स्वाहाः ।

9. अग्निश्च मे घर्मश्च मे --- यज्ञेन कल्पेताꣳ स्वाहाः ।

10. गभाश्च मे ----- यज्ञो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहाः ।

11. एका च मे ------- भुवनश्चाधिपतिश्च स्वाहाः ।

Chamaka Homam is followed by "vasoordhaaraa", "poornahuti.
Then Chartur- Veda paarayanam, which may include ghanam, geetham, padyam, gadyam etc .

The Section 19.1 gives the uttaraanga Puja that is performed to the Kalasha/Kumbha before udvaapanam.

This is detailed in Rudra Ekadasini and Maharudram.

----

19. उत्तराङ्ग पूजा

19.1 कलश उद्वापनं

निध॑नपतये॒ नमः निध॑नपतान्तिकाय॒ नमः ।
ऊर्ध्वाय॒ नमः ऊर्ध्वलिङ्गाय॒ नमः
हिरण्याय॒ नमः हिरण्यलिङ्गाय॒ नमः
सुवर्णाय॒ नमः सुवर्णलिङ्गाय॒ नमः
दिव्याय॒ नमः दिव्यलिङ्गाय॒ नमः
भवाय॒ नमः भवलिङ्गाय॒ नमः
शर्वाय॒ नमः शर्वलिङ्गाय॒ नमः
शिवाय॒ नमः शिवलिङ्गाय॒ नमः
ज्वलाय॒ नमः ज्वललिङ्गाय॒ नमः

आत्माय नमः आत्मलिङ्गाय नमः

परमाय नमः परमलिङ्गाय नमः

एतथ्सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिङ्ग॑ स्थापयति पाणिमन्त्रं पवित्रं ।

सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः ।

भवे भवे नातिभवे भवस्व मां । भवोद्भवाय नमः ॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः

कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय

नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ।

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

ईशानः सर्वविद्याना-मीश्वरः सर्वभूतानां

ब्रह्माधिऽपति र्ब्रह्मणोऽधिपति र्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये ऽंबिकापतय

उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥

19.1.1 रुद्र एकदाशिनि / महा रुद्रं

नमः प्राच्यै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये ताभ्यश्च नमो,

नमो दक्षिणायै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये ताभ्यश्च नमो,

नमः प्रतीच्यै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये ताभ्यश्च नमो,

नम उदीच्यै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये ताभ्यश्च नमो,

नम ऊद्ध्वार्यै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये ताभ्यश्च नमो,

नमोऽधरायै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये ताभ्यश्च नमो,

नमोऽवान्तरायै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये ताभ्यश्च नमो,

नमो गंगा यमुनयो र्मद्ध्ये ये वसन्ति ते मे प्रसन्नात्मा–नश्चिरं
जीवितं वर्द्धयन्ति ,

नमो गंगा यमुनयो र्मुनिभ्यश्च नमो नमो गंगा यमुनयोर्
मुनिभ्यश्च नमः ॥

शिवेन मे सन्तिष्ठस्व स्योनेन मे सन्तिष्ठस्व सुभूतेन मे
सन्तिष्ठस्व ब्रह्मवर्चसेन मे सन्तिष्ठस्व यज्ञस्यर्धि मनु सन्तिष्ठ
स्वोप ते यज्ञ नम उप ते नम उप ते नमः ॥

19.1.2 धूपं

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं यॊऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं
धूर्वामस्त्वं दॆवानामसि सस्त्रितमं पप्रितमं जुष्टतमं वह्नितमं
दॆवहूतम–मह्रुतमसि हविर्धानं दृ৺हस्व माह्वा र्मित्रस्य त्वा चक्षुषा
प्रॆक्षॆ मा भॆर्मा सँविक्ता मा त्वा हि৺सिषं ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यॊ दॆवताभ्यॊ नमः । धूपं आघ्रापयामि ।

19.1.3 दीपं

उद्दीप्यस्व जातवॆदॊऽपघ्नन् निर्ऋतिं मम । पशु৺श्च मह्यमावह जीवनं
च दिशॊ दिश । मानॊ हि৺सी–ज्जातवॆदॊ गामश्वं पुरुषं जगत् ।
अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यॊ दॆवताभ्यॊ नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

19.1.4 नैवॆद्यं

ऒं भूर्भुवस्सुवः । तथ्सवितु र्वरॆण्यं भर्गॊ दॆवस्य धीमहि ।
धियॊ यॊ नः प्रचॊदयात् । दॆव सवितः प्रसुवः ।
सत्यं त्वर्त्तॆन परिषिञ्चामि ।

अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः ।

ओं व्यानाय स्वाहाः । ओं उदानाय स्वाहाः ।

ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः ।

माद्ध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्त मुतोषसि मधुमत् पार्थिव॑ रजः ।

मधुद्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पति र्मधुमा॑ अस्तु सूर्यः ।

माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ मधु मधु मधु ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

(**दिव्यान्नं, घृतगुळपायसं, नाळिकेरखण्डद्वयं, कदळीफलं ...)

महानैवेद्यं निवेदयामि ।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि ।

हस्तप्रक्षाळनं समर्पयामि । पादप्रक्षाळनं समर्पयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

19.1.5 तांबूलं

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदळैर्युतं ।

कर्पूरचूर्ण संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यतां ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

आचमनीयं समर्पयामि । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

19.1.6 पञ्चमुख दीपं

सप्रथ सभां मे गोपाय । ये च सभ्याः सभा सदः ।

तानिन्द्रियावतः कुरु । सर्वमायु-रुपासतां । अहे बुध्निय मन्त्रं मे

गोपाय । यमृषयस्त्रै-विदा विदुः । ऋचः सामानि यजूꣳषि ।

सा हि श्रीरमृता सतां । or / and

आत्मन्ना-त्मन्नित्या-मन्त्रयत । तस्मै पञ्चमꣳ हूतः प्रत्यशृणोत् ।

स पञ्चहूतो ऽभवत् । पञ्चहूतो हवै नामैषः । तं वा एतं पञ्चहूतꣳ

सन्तं । पञ्चहोतेत्या चक्षते परोक्षेण ।

परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । अलङ्कार-पञ्चमुखदीपं

प्रदर्शयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

19.1.7 कर्पूरनीराजनं

सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते । यो राजासन् राज्यो वा सोमेन

यजते । देव सुवामेतानि हविꣳषि भवन्ति ।

एतावन्तो वै देवानाꣳ सवाः । त एवास्मै सवान् प्रयच्छन्ति ।

त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय । देवसू राजा भवति ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । कर्पूरनीराजनं प्रदर्शयामि ।

कर्पूरनीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

बृहथ्साम क्षत्रभृद् वृद्धवृष्णियं त्रिष्टुभौज-श्शुभित-मुग्रवीरं ।

इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्षा ।

रक्षां धारयामि । ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैँश्रवणाय कुर्महे ।

स मे कामान् कामकामाय मह्यं । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।

कुबेराय वैश्रवणाय । महाराजाय नमः ।

सुवर्णपुष्पं समर्पयामि । पारिजात पुष्पं समर्पयामि ।

19.1.8 मन्त्र पुष्पं

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।

चन्द्रमा वा अपां पुष्पं । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।

ओं तद्ब्रह्म । ओं तद्वायुः । ओं तदात्मा । ओं तथ्सत्यं ।

ओं तथ्सर्वं । ओं तत्पुरोर्नमः ।

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु । त्वं यँज्ञस्त्वं वँषट्कार

स्त्वमिन्द्रस्त्वꣳ रुद्रस्त्वं विँष्णुस्त्वं ब्रह्मत्वं प्रजापतिः ।

त्वं तदाप आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरों ।

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्व-मानशुः ।

परेण नाकं निहितं गुहायां विँभ्राजदेत-द्यतयो विशन्ति ।

वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्था-स्सन्यास योगाद्यतयः शुद्ध सत्वाः ।

ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे ।

दह्रं विँपापं परमेश्वभूतं यँत्पुण्डरीकं पुरमध्यसꣳस्थं ।

तत्रापि दह्रं गगनं विँशोक-स्तस्मिन् यदन्तस्त-दुपासितव्यं ।

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः । तस्य प्रकृति-

लीनस्य यः परस्स महेश्वरः । वेदोक्त मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ।

19.1.9 चतुर्वेद पारायणं

ओं । अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं । होतारं रत्न धातमं ।

ओं । इषेत्वोर्जेत्वा वायवः स्थो पायवः स्थ देवो वस्सविता प्रार्पयतु

श्रेष्ठतमाय कर्मणे ।

ओं । अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये ।
निहोता सथ्सि बर्हिषि ।

ओं । शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥

19.1.10 आपस्तंब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः

अथातो दर्शपूर्णमासौ व्याख्यास्यामः । प्रातरग्निहोत्रं हुत्वा । अन्यमावहनीयं प्रणीय । अग्नीनन्वा दधाति । न गतश्रियोऽन्यमग्निं प्रणयति । (श्रौत सूत्र वाक्यः)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे । (पुराण वाक्यः)

19.2 कुंभ /कलश उद्वापनं

19.2.1 कलश उद्वापन मन्त्राः

निघृष्वै रसमायुतैः । कालै र्हरित्वमापन्नैः । इन्द्रायाहि सहस्रयुक् ।
अग्नि र्विभ्राष्टि वसनः । वायुश्श्वेतसिक द्रुकः ।
सम्ँवथ्सरो विषूवर्णैः । नित्यास्ते ऽनुचरास्तव ।
सुब्रह्मण्यो३ॅ सुब्रह्मण्यो३ॅ सुब्रह्मण्यों ।

ओं तत् पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ।
तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ।

धाताः विधाता परमोत सन्दृक् प्रजापतिः परमेष्ठी विराजा ।
स्तोमाश्छन्दाꣳसि निविदोम आहुरेतस्मै राष्ट्र–मभिसन्नमाम ।
अभ्यावर्तध्व–मुपमेत साकमयꣳ शास्ता–ऽधिपतिर्वो अस्तु ।
अस्य विज्ञान–मनुसꣳ रभध्वमिमं पश्चादनुजीवाथ सर्वे ।
ओं भूतनाथाय विद्महे भवपुत्राय धीमहि । तन्नः शास्ता प्रचोदयात् ।

नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि
तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । येऽदो रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ।
येषामफ्सु सदः कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।
या इषवो यातु धानानां ये वा वनस्पतीꣳरनु ।
येवाऽवटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।
ओं सर्पराजाय विद्महे सहस्रफणाय धीमहि ।
तन्नो अनन्तः प्रचोदयात् ।

ओं नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः ।

नमो॑ वा॒चे नमो॑ वा॒चस्पत॒ये नम॑ो वि॒ष्णवे बृह॒ते क॑रोमि ।

(त्रिवारं जपेत्)

वरुणाय नमः । सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

तत्वा॑ यामि॒ ब्रह्म॑णा॒ वन्द॑मानस्तदा शा॑स्ते॒ यजमा॑नो ह॒विर्भि॑ः ।

अहे॑डमानो वरु॒णेह बो॒ध्युरु॑श॒ꣳ स मा॒ न॒ आयु॒ः प्रमो॑षीः ॥

ओं भूर्भु॒वस्सु॒वरों । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

अस्मात् कुंभात् आवाहितं सकल-तीर्थाधिपतिं वरुणं यथास्थानं

प्रतिष्ठापयामि । (शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च) ।

परि॑ ते॒ धन्व॑नो हे॒ति॒रस्मान्-वृ॑णक्तु वि॒श्वत॑ः ।

अथो॒ य इ॑षु॒धिस्तवा॒रे अ॒स्मन्नि॑धे॒हितं ॥

ओं ह्रीं नम॑ः शि॒वा॑य । म॒नो॑न्मना॒य॑ नमः ।

समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

त्र्यं॑बकं यँजामहे सु॒ग॒न्धिं॑ पु॒ष्टि॑वर्धनं ।

उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान् मृ॒त्यो॑ र्मुक्षी॒य मास्मृता॑त् ।

गौ॒री मि॑माय सलि॒ला॒नि त॒क्षत्यैक॑पदी द्वि॒पदि॒ सा चतु॑ष्पदी ।

अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ।

नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः ।

नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

सद्योजातं प्रपद्यामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे महादेवं , शिवं ,रुद्रं ,

शङ्करं, नीललोहितं, ईशानं , विजयं, भीमं, देवदेवं , भवोद्भवं,

आदित्यात्मकरुद्रं यथास्तानं प्रतिष्ठापयामि ।

शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च ।

19.3 अभिषेकं

The general order of reciting Sukhtams during abhishekam to the idols/deities are given below. However, the order may vary depending on time availability)

1. Purusha Sukhtam
2. Uttara Naaraayanam
3. Maha Naaraayanam
4. Durga Sukhtham
5. Sri Sukhtham
6. Medha Sukhtam
7. Navagraha Sukhtam
8. Ayushya Sukhtam
9. Shanti Panchakam

19.4 अलङ्कारं, अर्चना, पूजा

This section gives the final puja performed to Deities/idols for which Abhishekam has been performed. These deities are cleaned, decorated and then the puja shall be performed. The Ashtothra Pooja/Archana shall be performed for these idols/deities .
The count of the archanaas performed will vary depending on the function and the paucity of time. It is beneficial to perform Rudra krama archana during Pradhosha Puja.

19.4.1 बिल्वाष्टकं

त्रिदळं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुषं ।

त्रिजन्मपाप संहारं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 1

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च–ह्यच्छिद्रैः कोमळैः शुभैः ।

शिवपूजां करिष्यामि एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 2

अखण्ड बिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे ।

शुध्यन्ति सर्व पापेभ्यो एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 3

साळग्राम शिलामेकां विप्राणां जातु चापर्येत् ।

सोमयज्ञ्य महापुण्यं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 4

साळग्रामेषु विप्रेषु तटाके वनकूपयोः ।

यज्ञ कोटि सहस्राणां एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 5

दन्ति कोटि सहस्राणि वाजपेय शतानि च

कोटि कन्या महादानं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 6

लक्ष्म्याः स्तनुत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियं ।

बिल्व वृक्षं प्रयच्छामि एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 7

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पाप नाशनं ।

अघोर पाप संहारं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 8

काशीक्षेत्र निवासं च कालभैरव दर्शनं ।

प्रयाग माधवं दृष्ट्वा एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 9

तुळसि बिल्व निर्गुण्डि जंबीरा मलकानि च ।

पञ्चबिल्व मितिप्रोक्तं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 10

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिव सन्निधौ ।

सर्वपाप विनिर्मुक्तः शिवलोक–मवाप्नुयात् ॥ 11

19.4.2 धूपं

धूर॑सि॒ धूर्व॒ धूर्व॑न्तं॒ धूर्व॒तं ँयो᳚ऽस्मान् धूर्व॑ति॒ तं धूर्व॒यं ँव॒यं

धूर्वा॑म॒स्त्वं दे॒वाना॑मसि॒ सस्नि॑तमं॒ पप्रि॑तमं॒ जुष्ट॑तमं॒ वह्नि॑तमं दे॒व॒हूत॑म॒–

मह्तमसि हविर्धानं दृ॒ꣳहस्व माह्वा र्मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेक्षे मा

भेर्मा सम्ँविक्ता मा त्वा हिꣳसिषं ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । धूपं आघ्रापयामि ।

19.4.3 दीपं

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन् निर्ऋतिं मम । पशुꣳश्च मह्यमावह जीवनं

च दिशो दिश । मानो हिꣳसी-ज्जातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत् ।

अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । दीपं दर्शयामि ।

धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

19.4.4 नैवेद्यं

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् । देव सवितः प्रसुवः ।

सत्यं त्वर्त्तेन परिषिञ्चामि । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः । ओं व्यानाय स्वाहाः ।

ओं उदानाय स्वाहाः । ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माद्ध्वी र्नः सन्त्वोषधीः ।

मधुनक्त मुतोषसि मधुमत् पार्थिव॒ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता ।
मधुमान्नो वनस्पति र्मधुमा अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥
मधु मधु मधु ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

(**दिव्यान्नं, घृतगुळपायसं, नाळिकेरखण्डद्वयं, कदळीफलं**)

महानैवेद्यं निवेदयामि ।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि ।

हस्तप्रक्षाळनं समर्पयामि । पादप्रक्षाळनं समर्पयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

19.4.5 तांबूलं

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदळैर्युतं । कर्पूरचूर्ण संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यतां । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

कर्पूर तांबूलं निवेदयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

19.4.6 पञ्चमुख दीपं

सप्रथ सभां मे गोपाय । ये च सभ्याः सभा सदः ।
तानिन्द्रियावतः कुरु । सर्वमायु–रुपासतां ।

अहे बुध्निय मन्त्रं मे गोपाय । यमृषयस्त्रै–विदा विदुः ।

ऋचः सामानि यजू७्षि । सा हि श्रीरमृता सतां । or/and

आत्मन्ना–त्मन्नित्या–मन्त्रयत । तस्मै पञ्चम७् हूतः प्रत्यशृणोत् ।

स पञ्चहूतो ऽभवत् । पञ्चहूतो हवै नामैषः ।

तं वँा एतं पञ्चहूत७् सन्तं । पञ्चहोतेत्या चक्षते परोक्षेण ।

परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

अलङ्कार–पञ्चमुखदीपं प्रदर्शयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

19.4.7 कर्पूरनीराजनं

सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते । यो राजासन् राज्यो वा सोमेन यजते ।

देव सुवामेतानि हवि७्षि भवन्ति । एतावन्तो वै देवाना७् सवाः ।

त एवास्मै सवान् प्रयच्छन्ति । त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय ।

देवसू राजा भवति ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । कर्पूरनीराजनं प्रदर्शयामि ।

कर्पूरनीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

बृहथ्साम क्षत्रभृद् वृद्धवृष्णियं त्रिष्टुभौज–श्शुभित–मुग्रवीरं ।

इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्षा ।
रक्षां धारयामि । ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैँश्रवणाय कुर्महे ।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुबेराय वैश्रवणाय । महाराजाय नमः ।
सुवर्णपुष्पं समर्पयामि । पारिजात पुष्पं समर्पयामि ।

19.4.8 मन्त्र पुष्पं

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पं । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
य एवं वैँद ॥ 1
योऽपामायतनं वैँद । आयतनवान् भवति । अग्निर्वा अपामायतनं ।
आयतनवान् भवति । योऽग्नेरायतनं वैँद । आयतनवान् भवति ।
आपो वा अग्नेरायातनं । आयतनवान् भवति । य एवं वैँद ॥ 2

योऽपामायतनं वैँद । आयतनवान् भवति । वायुर्वा अपामायतनं ।
आयतनवान् भवति । यो वायोरायतनं वैँद । आयतनवान् भवति ।
आपो वै वायोरायातनं । आयतनवान् भवति । य एवं वैँद ॥ 3

योऽपामायतनं वेँद । आयतनवान् भवति । असौ वै तपन्नपा-मायतनं ।
आयतनवान् भवति । योऽमुष्य-तपत आयतनं वेँद ।
आयतनवान् भवति । आपोवा अमुष्य-तपत आयतनं ।
आयतनवान् भवति । य एवं वेँद ॥ 4

योऽपामायतनं वेँद । आयतनवान् भवति । चन्द्रमा वा अपामायतनं ।
आयतनवान् भवति । यश्चन्द्रमस आयतनं वेँद । आयतनवान् भवति ।
आपो वै चन्द्रमस आयतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेँद ॥ 5

योऽपामायतनं वेँद । आयतनवान् भवति । नक्षत्राणि वा अपामायतनं ।
आयतनवान् भवति । यो नक्षत्राणा-मायतनं वेँद । आयतनवान् भवति ।
आपो वै नक्षत्राणा-मायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेँद ॥ 6

योऽपामायतनं वेँद । आयतनवान् भवति । पर्जन्यो वा अपामायतनं ।
आयतनवान् भवति । यः पर्जन्य-स्यायतनं वेँद । आयतनवान् भवति ।
आपो वै पर्जन्य-स्यायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेँद ॥ 7

योऽपामायतनं वेँद । आयतनवान् भवति । सँवथ्सरो वा अपामायतनं ।
आयतनवान् भवति । यस्सँवथ्सर-स्यायतनं वेँद । आयतनवान् भवति ।
आपो वै सँवथ्सर-स्यायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेँद ॥ 8
योऽफ्सुनावं प्रतिष्ठितां वेँद । प्रत्येवतिष्ठति ॥ 9

ओँ तद्ब्रह्म । ओँ तद्वायुः । ओँ तदात्मा । ओँ तथ्सत्यं ।
ओँ तथ्सर्वं । ओँ तत्पुरो र्नमः ।
अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु । त्वं यँज्ञस्त्वं वँषट्कार
स्त्वमिन्द्रस्त्वꣳ रुद्रस्त्वं विँष्णुस्त्वं ब्रह्मत्वं प्रजापतिः ।
त्वं तदाप आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरों ।

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्व-मानशुः ।
परेण नाकं निहितं गुहायां विँभ्राजदेत-द्यतयो विशन्ति । 1

वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्था-स्सन्यास योगाद्यतयः शुद्ध सत्वाः ।
ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे । 2

दह्रं विँपापं परमेश्वभूतं यँत्पुण्डरीकं पुरमध्यसꣳस्थं ।
तत्रापि दह्रं गगनं विँशोक-स्तस्मिन् यदन्तस्त-दुपासितव्यं । 3

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः ।

तस्य प्रकृति–लीनस्य यः परस्स महेश्वरः । 4

वेदोक्त मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि ।

पारिजात पुष्पं समर्पयामि ।

19.4.9 प्रदक्षिण नमस्कार :

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ 1

प्रकृष्ट पाप नाशाय प्रकृष्ट फलसिद्धये

प्रदक्षिणं करोमीश प्रसीद परमेश्वर ॥ 2

गजाननं भूतगणादि सेवितं । कपित्थ जंबू फलसार–भक्षितं ।

उमासुतं शोकविनाश कारणं । नमामि विघ्नेश्वर पाद पङ्कजं ॥ 3

अगजानन पद्मार्कं गजानन महर्न्निशं ।

अनेकदं तं भक्तानां एकदन्त–मुपास्महे । 4

हालास्य नाथाय महेश्वराय । हालाहालालं–कृतकन्धराय ।

मीनेक्षणायाः पतये शिवाय । नमो नमः सुन्दर–ताण्डवाय । 5

कृपासमुद्रं सुमुखं त्रिनेत्रं । जटाधरं पार्वती वामभागं ।

सदाशिवं रुद्र–मनन्तरूपं । चिदंबरेशं हृदि भावयामि । **6**

नमश्शिवाभ्यां नवयौवनाभ्यां । परस्पराश्लिष्टवपूर्धराभ्यां ।

नागेन्द्र–कन्या–वृषकेतनाभ्यां । नमो नमः शङ्कर–पार्वतीभ्यां । **7**

नमश्शिवाय सांबवाय सगणाय ससूनवे ,

सनन्दिने सगंगाय सवृषाय नमो नमः । **8**

महादेवं महेशानं महेश्वर–मुमापतिं ,

महासेनगुरुं वन्दे महाभय निवारणं । **9**

ऋण–रोगादि–दारिद्य्र पापक्षुदपमृत्यवः,

भयक्रोध मनःक्लेशाः नश्यन्तु मम सर्वदा । **10**

सर्व मंगळ मांगल्ये शिवे सर्वात्थ साधिके ।

शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते । **11**

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।

विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगं ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृद्ध्यान–गम्यं ।

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथं ॥ **12**

भानो भास्कर मार्त्ताण्ड चण्डरश्मे दिवाकर ,

आयुरा–रोग्य–मैश्वर्यं श्रियं पुत्रांश्च देहि मे । **13**

अनायासेन सायुज्यं विना दैन्येन जीवनं,

देहि मे कृपया शंभो त्वयि भक्तिमचञ्चलां । **14**

बालोऽहं बालबुधिश्च बालचन्द्रार्ध शेखर,

नाहं जाने तवार्च्चां वै क्षम्यतां करुणानिधे । **15**

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम

तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष महेश्वर **16**

अनन्तकोटि प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि ।

19.4.10 उपचारं

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमो नमः ।

1. छत्रं धारयामि

2. चामरे वीजयामि

3. वाद्यं घोषयामि

4. नृत्तं दर्शयामि

5. गीतं श्रावयामि

6. आन्दोळिकां आरोपयामि

7. अश्वं आरोपयामि **8.** गजं आरोपयामि

9. रथं आरोपयामि

समस्त राजोपचारान्–देवोपचारान् समर्पयामि ॥

19.4.11 चतुर्वेद पारायणं

ओं । अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं । होतारं रत्न धातमं ।

ओं । इषेत्वोर्जेत्वा वायवः स्थो पायवः स्थ देवो वस्सविता प्रार्पयतु

श्रेष्ठतमाय कर्मणे ।

ओं । अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये ।

निहोता सथ्सि बर्हिषि ।

ओं । शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।

शँयोरभि स्रवन्तु नः ॥

19.4.12 आपस्तंब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः

अथातो दर्शपूर्णमासौ व्याख्यास्यामः । प्रातरग्निहोत्रं हुत्वा ।

अन्यमावहनीयं प्रणीय । अग्नीनन्वा दधाति ।

न गतश्रियोऽन्यमग्निं प्रणयति । (श्रौत सूत्र वाक्यः)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां ।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे । (पुराण वाक्यः)

19.5 नन्दिकेश्वर पूजा

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्यां घण्ठयां नन्दिकेश्वरं ध्यायामि ।

आवाहयामि । स्नानं समर्पयामि ।

(शिवाभिषेक निर्माल्य तीर्थं अभिषिच्या) ।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

गन्ध-पुष्प धूप-दीपैः सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्सवितु वरेण्यं ।

भर्गोदेवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।

ओं नन्दिकेश्वराय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः ।

ओं व्यानाय स्वाहाः । ओं उदानाय स्वाहाः ।

ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

बाण रावण चण्डेश नन्दि भृंगिरिटादयः ,

महादेवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शांभवाः ॥

ओं नन्दिकेश्वराय नमः । निर्माल्यदेवताभ्यो नमः ।

शिवनिर्माल्यं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि । आचमनीयं समर्पयामि ।

ईशानः सर्वविद्याना–मीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्र्ह्मणोऽधिपति
ब्र्ह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥ ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

(अनन्तरं श्रीशक्ति पञ्चाक्षरी मन्त्रं जपेत्–(see Chapter 11.6)

हृत्पद्म कर्णिकामध्यं उमया सह शङ्कर ,

प्रविश त्वं महादेव सर्वैरावारणैः सह ।

(इति निर्माल्यं आघ्राय, स्तोत्रादिकं पठेत्)

19.6 क्षमा प्रार्थना

यथक्षर–पदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद् भवेत् ।

तत् सर्वं क्षम्यतां देव नारायण नमोस्स्तुते ।

विसर्ग–बिन्दु–मात्राणि पद–पादाक्षराणि च

न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षमस्व पुरुषोत्तम । 1

मन्त्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं महेश्वर ।

यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते । 2

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि । 3

करचरण कृतं वा कायजं कर्मजं वा, श्रवण नयनजं वा मानसं

वाऽपराधं । विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व

जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शंभो ॥ 4

श्री रुद्रं न जानामि , न जानामि चमकं ।

सूक्तानि न जानामि, न जानामि स्तोत्राणि ।

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनं ।

पूजा विधिं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ॥ 5

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।

तस्मात् कारुण्य–भावेन रक्ष रक्ष महाप्रभो । 6

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु ।

न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतं । 7

अनया पूजया सपरिवारः श्री साबपरमेश्वरः प्रीयतां ।

ओं तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

20.स्वस्ति वचनं

स्वस्ति मन्त्राः सत्याः सफलाः सन्त्विति भवन्तोऽनुगृह्णन्तु । 1
(तथास्तु)

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्यायेन मार्गेण महीं महिशाः ।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ 2
(तथास्तु)

अस्य यजमानस्य (अनयोर् दंपत्योः, कुमारस्य कुमर्याश्च,) वेदोक्तं दीर्घमायुष्यं भूयासुरिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 3 (तथास्तु)

कर्मणि मुहूर्त्तः सुमुहूर्तोऽस्त्विति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 4
(तथास्तु)

तल्लग्नापेक्षया आदित्यानां नवानां ग्रहाणामानुकूल्यं भूयासुरिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 5 (तथास्तु)

ये ये ग्रहाः शुभस्थानेषु स्थिताः तेषां ग्रहाणां शुभस्थान–फलावाप्ति–रस्त्विति भवन्तो महान्तोऽगृह्णन्तु ॥ 6 (तथास्तु)

अस्य यजमानस्य / अनयोर् दंपत्योः आयुर्बलं यशोवर्चः पशवःस्तैर्यं सिद्धिर्लक्ष्मीः क्षमाकान्तिः सद्गुणा ऽऽनन्तो नित्योस्सवो नित्यश्री र्नित्यमंगळमित्येषां सर्वदा ऽभिवृद्धिदितिर् भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 7 (तथास्तु)

सर्वे जनाः निरोगाः निरुपद्रवाः सदाचारसंपन्नाः आढ्याः निर्मथ्सराः दयाळवश्च भूयासुरिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 8 (तथास्तु)

देशोऽयं निरुपद्रवोऽस्तु । 9 (तथास्तु)

सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु । 10 (तथास्तु)

समस्त सन्मंगळानि सन्तु । 11 (तथास्तु)

अनेन पूजाविधेन भगवान् सर्वात्मकः सपरिवारः श्री सांबपरमेश्वर सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा अस्य यजमानस्य, (एतत् समाजस्थानां, कर्मप्रवर्तकानां, प्रोथ्साहकानां, साहाय्यकारीणां, नानाद्रव्य दातृकाणां, अखिल-भूमण्डल-निवासानां, साश्रित बन्धुमित्राणां, सर्वेषां महाजनानां)क्षेम-स्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याणां अभिवृद्धिप्रदः, सर्वदा धर्मे मतिप्रदश्च सांबपरमेश्वर पादारविन्दयोः

अचञ्चल निष्कपट भक्तिवन्तः भूयादिति भवन्तो
महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 12 (तथास्तु)

अस्मत् गृहे वसतां द्विपदां चतुष्पदां च सर्वेषां निरोग पूर्णायुष्य
सिद्धिप्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 13 (तथास्तु)

उत्तरे कर्मणि अविघ्नमस्तु । उत्तरोत्तरा–भिवृद्धिरस्तु ॥ 14 (तथास्तु)

20.1 प्राशनं प्रसाद विनियोगं , दक्षिण स्वीकरणं

20.1.1 शंखतीर्थ प्रोक्षणं

शंखमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि ।
अंगलग्नं मनुष्याणं ब्रह्महत्यायुतं दहेत् ।

20.1.2 अभिषेक– तीर्थप्राशनं

साळग्राम शिलावारि पापहारी शरीरिणां
आजन्मकृत पापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने ॥
अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणं
सर्वपापक्षयकरं शिवपादोदकं शुभं ।

20.1.3 पञ्चगव्य प्राशनं

यत्वक् अस्थिगतं पापं देहं तिष्ठति मामके

प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहतु अग्निरिव इन्धनं ।

20.1.4 प्रसाद विनियोगं (to yajamaanan)

शतमानं भवति शतायुः पुरुषश्शतेन्द्रिय

आयुष्येवेन्द्रिये प्रतितिष्ठति । 1

श्रीर् वर्चस्व–मायुष्य–मारोग्यमावीधा–च्छोभामानं महीयते ।

धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवथ्सरं दीर्घमायुः ॥ 2

क्षत्रस्य राजा वरुणोऽधिराजः । नक्षत्राणा॒ं शतभिषग् वसिष्ठः ।

तौ देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः । 3

सांग्रहण्येष्ट्या यजते । इमां जनता॒ं संगृह्णानीति ।

द्वादशा रत्नी रशना भवति । द्वादश मासा स्संवँथ्सरः ।

संवँथ्सर मेवा वरुन्धे । मौंजी भवति । ऊर्ग्वै मुञ्चाः ।

ऊर्ज मेवा वरुन्धे । चित्रा नक्षत्रं भवति ।

चित्रं वा एतत् कर्म । यदश्वमेध स्समृध्यै ॥ 4

यशस्करं बलवन्तं प्रभुत्वं तमेव राजाधिपति र्बभूव ।
संकीर्ण नागाश्वपति र्नराणां सुमङ्गल्यं सततं दीर्घमायुः ॥ **5**

20.1.5 दक्षिण स्वीकरणं

हिर्णयगर्भ गर्भस्थं हेम बीजं बिभावसोः

अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ।

अस्मिन् रुद्रैकादशन्याख्य महाप्रायश्चित्त कर्मणि तत्फल स्वीकरणार्थं उक्तदक्षिणा प्रत्याम्नायत्वेन इदं हिरण्यं पूजाजप कर्तृभ्यो ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ।

नमः । न मम । ओं तथ्सत् । ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

------शुभं-----

21.Appendix

21.1 शिवाष्टोत्तर–शत–नामावळिः

1. ॐ शिवाय नमः 2. ॐ महेश्वराय नमः

3. ॐ शम्भवे नमः 4. ॐ पिनाकिने नमः

5. ॐ शशिशेखराय नमः 6. ॐ वामदेवाय नमः

7. ॐ विरूपाक्षाय नमः 8. ॐ कपर्दिने नमः

9. ॐ नीललोहिताय नमः 10. ॐ शङ्कराय नमः

11.ॐ शूलपाणये नमः 12. ॐ खट्वाङ्गिने नमः

13. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः 14. ॐ शिपिविष्टाय नमः

15. ॐ अम्बिकानाथाय नमः 16. ॐ श्रीकण्ठाय नमः

17. ॐ भक्तवथ्सलाय नमः 18. ॐ भवाय नमः

19. ॐ शर्वाय नमः 20. ॐ त्रिलोकेशाय नमः

21. ॐ शितिकण्ठाय नमः 22. ॐ शिवप्रियाय नमः

23. ॐ उग्राय नमः 24. ॐ कपालिने नमः

25. ॐ कामारये नमः 26. ॐ अन्धकासुर सूदनाय नमः

27. ॐ गङ्गाधराय नमः 28. ॐ ललाटाक्षाय नमः

29. ॐ कालकालाय नमः 30. ॐ कृपानिधये नमः

31. ॐ भीमाय नमः
32. ॐ परशुहस्ताय नमः
33. ॐ मृगपाणये नमः
34. ॐ जटाधराय नमः
35. ॐ कैलासवासिने नमः
36. ॐ कवचिने नमः
37. ॐ कठोराय नमः
38. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
39. ॐ वृषाङ्काय नमः
40. ॐ वृषभारूढाय नमः
41. ॐ भस्मोद्धूलित विग्रहाय नमः
42. ॐ सामप्रियाय नमः
43. ॐ स्वरमयाय नमः
44. ॐ त्रयीमूर्तये नमः
45. ॐ अनीश्वराय नमः
46. ॐ सर्वज्ञाय नमः
47. ॐ परमात्मने नमः
48. ॐ सोमसूर्याग्नि लोचनाय नमः
49. ॐ हविषे नमः
50. ॐ यज्ञमयाय नमः
51. ॐ सोमाय नमः
52. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
53. ॐ सदाशिवाय नमः
54. ॐ विश्वेश्वराय नमः
55. ॐ वीरभद्राय नमः
56. ॐ गणनाथाय नमः
57. ॐ प्रजापतये नमः
58. ॐ हिरण्यरेतसे नमः
59. ॐ दुर्धर्षाय नमः
60. ॐ गिरीशाय नमः
61. ॐ गिरिशाय नमः
62. ॐ अनघाय नमः
63. ॐ भुजङ्ग भूषणाय नमः
64. ॐ भर्गाय नमः
65. ॐ गिरिधन्वने नमः
66. ॐ गिरिप्रियाय नमः

67. ॐ कृत्तिवाससे नमः

68. ॐ पुरारातये नमः

69. ॐ भगवते नमः

70. ॐ प्रमथाधिपाय नमः

71. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः

72. ॐ सूक्ष्मतनवे नमः

73. ॐ जगद्व्यापिने नमः

74. ॐ जगद् गुरवे नमः

75. ॐ व्योमकेशाय नमः

76. ॐ महासेन जनकाय नमः

77. ॐ चारुविक्रमाय नमः

78. ॐ रुद्राय नमः

79. ॐ भूतपतये नमः

80. ॐ स्थाणवे नमः

81. ॐ अहये बुध्न्याय नमः

82. ॐ दिगम्बराय नमः

83. ॐ अष्टमूर्तये नमः

84. ॐ अनेकात्मने नमः

85. ॐ सात्विकाय नमः

86. ॐ शुद्धविग्रहाय नमः

87. ॐ शाश्वताय नमः

88. ॐ खण्डपरशवे नमः

89. ॐ अजाय नमः

90. ॐ पाशविमोचकाय नमः

91. ॐ मृडाय नमः

92. ॐ पशुपतये नमः

93. ॐ देवाय नमः

94. ॐ महादेवाय नमः

95. ॐ अव्ययाय नमः

96. ॐ हरये नमः

97. ॐ भगनेत्रभिदे नमः

98. ॐ अव्यक्ताय नमः

99. ॐ दक्षाध्वरहराय नमः

100. ॐ हराय नमः

101. ॐ पूषदन्तभिदे नमः

102. ॐ अव्यग्राय नमः

103. ॐ सहस्राक्षाय नमः
104. ॐ सहस्रपदे नमः
105. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
106. ॐ अनन्ताय नमः
107. ॐ तारकाय नमः
108. ॐ परमेश्वराय नमः ॥

यस्त्रिसन्ध्यं पठेन्नित्यं नाम नामोष्टोत्तरं शतं ।
शतरुद्रत्रिरावृत्या यत् फलं लभते नरः ।

तत फलं प्राप्नुयान्नित्यं एकावृत्या न संशयः ।
सकृद्वा नामाभिः पूज्य कुलकोटिं समुद्धरेत् ॥

बिल्वपत्रैः प्रशस्तैश्च पुष्पैश्च तुळसीदळैः ।
तिलाक्षतै र्यजेद्यस्तु जीवमुक्तो न संशयः ॥ (स्कान्द पुराणं)